श्री महाकालेश्वर जी का संध्या काल आरती श्रृंगार दर्शन

केंद्र और राज्य शासन से विज्ञापन के लिए अनुमोदित

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

Website:- www.malwaherald.com

RNI No. MPHIN/2010/33238
dainikmalwaherald@yahoo.com
malwaherald@gmail.com

मालवा हेराल्ड

सुविचार

जीवन एक यात्रा है रो कर जीने से बहुत लम्बी लगेगी और हंस कर जीने पर कब पूरी हो जाएगी पता भी नहीं चलेगा।

वर्ष 13 अंक 258 | उज्जैन, बुधवार 1 मार्च 2023 | पृष्ठ-8 | मूल्य-1 रुपए

न्यूज ब्रीफ

बिहार के शिक्षा मंत्री का एक बार फिर विवादित बयान,कहा, रामचरितमानस में है कूड़ा कचरा, सफाई जरूरी

पटना/जीएनएस।रामचरितमानस पर बिहार के शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर ने एक बार फिर विवादित बयान दिया है। उन्होंने कहा कि रामायण में थोड़ा कूड़ा-कचरा है, उसे साफ करने की जरूरत है। इससे पहले भी वह रामचरितमानस को नफरत फैलाने और समाज को बांटने वाला ग्रंथ बता चुके हैं। शिक्षा मंत्री चंद्रशेखर लगातार अपने बयान पर कायम है। इस मुद्दे पर महागठबंधन में भी घमासान मचा है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू के विधायक संजीव सिंह ने कहा कि शिक्षा मंत्री का मानसिक संतुलन बिगड़ गया है। बिहार के बजट सत्र के दौरान मीडिया से बातचीत में मंत्री चंद्रशेखर ने मंगलवार को एक बार फिर हिंदू धर्म ग्रंथ रामचरितमानस पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि वह अपने पहले वाले बयान पर कायम हैं।

चंद्रयान-3 मिशन की उड़ान अब दूर नहीं, इसरो को कामयाबी सीई-20 क्रायोजेनिक इंजन का सफल परीक्षण

नई दिल्ली/जीएनएस। चंद्रयान-3 मिशन के प्रक्षेपण वाहन के क्रायोजेनिक ऊपरी चरण को रफ्तार देने वाले सीई-20 क्रायोजेनिक इंजन का उड़ान स्वीकृति ताप परीक्षण सफल रहा है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो ने यह जानकारी दी। इसरो ने बताया कि 24 फरवरी को तमिलनाडु के महेंद्रगिरि में स्थित इसरो प्रणोदन परिसर के हाई एल्टीट्यूड प्रक्षेपण केंद्र में 25 सेकंड की निर्धारित अवधि के लिए उड़ान स्वीकृति ताप परीक्षण किया गया था। भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा कि परीक्षण के दौरान इंजन सभी प्रणोदन मानकों पर खरा उतरा और उसका प्रदर्शन अनुमान के मुताबिक मिला।

भारत-यूरोपीय संघ व्यापार समझौता गेम चेंजर साबित होगा, विदेश मंत्री बोले, स्थिरता लाने में बिजनेस की प्राथमिक भूमिका

नई दिल्ली/जीएनएस। भारतीय विदेश मंत्री डा.एस जयशंकर ने मंगलवार को इंडिया यूरोप बिजनेस एंड सस्टेनेबिलिटी कॉन्कलेव के दौरान कहा कि भारत और यूरोपीय देशों के बीच मुक्त व्यापार समझौता गेम चेंजर साबित होगा। विदेश मंत्री ने कहा कि स्थिरता लाने में बिजनेस की प्राथमिक भूमिका होती है। भारत और यूरोप बहुपक्षीय, भू-राजनीतिक और सुरक्षा चिंताओं में विश्वास रखते हैं। विदेश मंत्री ने कहा कि यूरोप, भारत का सबसे बड़ा और अहम व्यापार साझेदार है। भारत की व्यापार समझौतों को लेकर नई सोच, गुणवत्ता, व्यापारिक बाधाओं से परे है। हमें उम्मीद है कि निकट भविष्य में भारत ही एकमात्र तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था रहेगी। जयशंकर ने कहा कि जब ग्रीन ट्रांजिशन की बात आती है तो अक्षय ऊर्जा भारत और यूरोप के रिश्तों के लिए अहम है। हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने का भविष्य में फायदा मिलेगा। अक्षय ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने के मामले में भारत का तीसरा स्थान है। बता दें कि इंडिया यूरोप बिजनेस एंड सस्टेनेबिलिटी कॉन्कलेव की मंगलवार से शुरुआत हुई है और यह बुधवार 2023 तक चलेगा। उल्लेखनीय है कि साल 2021 में भारत और यूरोपीय यूनियन के बीच 88 बिलियन डॉलर पाउंड का द्विपक्षीय व्यापार हुआ। यह भारत के कुल व्यापार का 10 फीसदी के करीब है। अमरीका (11.6 फीसदी) और चीन (11.4 फीसदी) के बाद भारत द्वारा सबसे ज्यादा उत्पादों का निर्यात यूरोपीय यूनियन के देशों को ही किया जाता है।

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के बारे में बहनों तक पहुँचे जानकारी

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने 5 मार्च के कार्यक्रम के लिए किया अधिकारियों से विमर्श

भोपाल/दैनिक मालवा हेराल्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना-2023 की जानकारी प्रदेश की सभी बहनों को प्राप्त हो, इसके लिए योजना के शुभारंभ के पूर्व ही आवश्यक वातावरण बनाया जाए। भोपाल में होने वाले गरिमामय शुभारंभ कार्यक्रम का प्रसारण पंचायत स्तर तक और शहरी क्षेत्रों में किया जाए, जिससे योजना की पूरी जानकारी बहनों को मिले और वे इसका लाभ उठाने के लिए जागरूक बनें। सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी महिला सशक्तिकरण और मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना पर केंद्रित हों।

मुख्यमंत्री श्री चौहान आज समत्व भवन के मंथन कक्ष में 5 मार्च को राजधानी में लांच की जा रही मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के शुभारंभ कार्यक्रम के संबंध में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विचार -विमर्श कर रहे थे। मुख्य सचिव श्री इकबाल सिंह बैंस और वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि शुभारंभ कार्यक्रम में योजना की हकदार बहनों की बड़े पैमाने पर भागीदारी के साथ महिला शौर्या दल, स्व-सहायता समूह, जन अभियान परिषद से जुड़ी बहनें और महिला जन-प्रतिनिधि अवश्य शामिल हों।

योजना के संबंध में शिक्षित करने सार्वजनिक मंच पर प्रपत्र भरा जाएगा

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने निर्देश दिए कि योजना के लिए आवेदन प्रपत्र भरने की प्रक्रिया से बहनों को अवगत करवाने के लिए सार्वजनिक मंच पर प्रपत्र भरने का प्रदर्शन किया जाए। उपस्थित बहनों की शंकाओं का समाधान भी किया जाए। बहनों को यह बताते हुए कि प्रपत्र भरने की प्रक्रिया सरल है, उनका पूरा मार्गदर्शन किया जाए।

राज्य स्तरीय कार्यक्रम के लिए चल रही व्यापक तैयारियाँ

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने शुभारंभ कार्यक्रम की तैयारियों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने कार्यक्रम में शामिल होने वाली बहनों के लिए आवश्यक व्यवस्थाओं को पूरा करने के निर्देश दिए। प्रेजेंटेशन में बताया गया कि मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की थीम पर एक गीत भी लाँच किया जाएगा। महिला सशक्तिकरण पर लघु फिल्म भी प्रदर्शित की जायेगी। योजना के ब्रोशर के विमोचन के साथ ही योजना के पोर्टल और एप का शुभारंभ भी होगा। महिला-बाल विकास, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, नगरीय विकास एवं आवास, जनसम्पर्क और अन्य विभाग समन्वय के साथ राज्य स्तरीय कार्यक्रम के लिए सक्रियता से जुटे हैं। कार्यक्रम स्थल जम्बूरी मैदान भोपाल में लगभग एक लाख बहनों की भागीदारी को ध्यान में रखते हुए जरूरी तैयारियाँ की जा रही हैं।

सिसोदिया की केजरीवाल को चिट्ठी; मुझे डराया धमकाया और लालच दिया, निशाने पर हैं आप

नई दिल्ली/जीएनएस। मनीष सिसोदिया ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को चिट्ठीलिखी है। इस चिट्ठी में उन्होंने कहा है कि मुझ पर अभी कई एफआईआर करने की तैयारी है। तीन पन्नों की इस चिट्ठी में सिसोदिया ने लिखा है कि इनका निशाना मैं नहीं आप हैं। ये हमें जेल में डाल सकते हैं। मनीष सिसोदिया ने कहा कि हमारे हौसलों को ऊंचाई छूने से कोई नहीं रोक सकता। मुझे डराया, धमकाया और लालच दिया गया, लेकिन मैं झुका नहीं और इसी वजह से मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। सिसोदिया ने अरविंद केजरीवाल को लिखे खत में कहा है कि मैं इनकी जेलों से डरता नहीं हूं।

सच्चाई के रास्ते पर जेल जाने वाला मैं पहला इनसान नहीं हूं। आपके नेतृत्व में दिल्ली सरकार का मंत्री होना और दिल्ली के लोगों के लिए काम करना अपने आप में सौभाग्य और गर्व की बात है, लेकिन फिलहाल इस पत्र के माध्यम से मैं अपना इस्तीफा आपको दे रहा हूं। साजिशकर्ता मुझे और आपको परेशान करने के लिए मुझे जेल में डाल रहे हैं, लेकिन मैं समझता हूं कि उनकी साजिशों से सच्चाई की राजनीति की हमारी लड़ाई और मजबूत होगी। मुझे लगता है कि हमारे जेल से जाने से हमारे साथियों का, हमारे कार्यकर्ताओं का मनोबल और बढ़ेगा।

बढ़ते तापमान के बीच केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय का राज्यों को निर्देश, कहा- 'लू' से बचाव के करें उपाय

नई दिल्ली/जीएनएस। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने तेजी से बढ़ते तापमान के मद्देनजर राज्य सरकारों को लू से बचाव के उपाय करने के निर्देश दिए हैं। मंत्रालय में सचिव राजेश भूषण मंगलवार को सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रधान सचिवों को भेजें एक पत्र में कहा कि देश के कई भागों में तापमान तेजी से बढ़ने की खबरें मिली हैं। मौसम विभाग का भी यही अनुमान है कि आगामी दिनों में तापमान में तेजी से वृद्धि होगी और लू चलेगी।

पत्र में कहा गया है कि गर्मी के मौसम को देखते हुए राज्य सरकारों को स्थिति पर लगातार निगाह रखनी चाहिए और आम जनता को इससे बचाव के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। तापमान की प्रतिदिन और सप्ताहिक आधार रिपोर्ट जारी की जानी चाहिए और नियमित रूप से स्थिति की समीक्षा होनी चाहिए।

मंत्रालय ने आम जनता के लिए एक परामर्श पत्र भी जारी किया है जिसमें लू के बचाव करने के उपाय सुझाए गए हैं। पत्र में कहा गया है कि लू के प्रकोप से बचने के लिए लगातार पानी पीना चाहिए और गर्म हवाओं के सीधे प्रभाव से बचा जाना चाहिए। केंद्र सरकार ने अस्पतालों में भी लू प्रभावित रोगियों के इलाज के लिए पर्याप्त प्रबंध करने के निर्देश दिए हैं

शशि थरूर ने शेयर की भाजपा से क्लीनचिट पाने वालों की लिस्ट

नई दिल्ली/जीएनएस। दिल्ली के डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया के खिलाफ चल रही सीबीआई जांच के बीच कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने भाजपा पर तंज कसा है। उन्होंने ऐसे नेताओं की लिस्ट ट्विटर पर शेयर की है, जिन पर कभी भ्रष्टाचार के आरोप लगे थे और आज वह भाजपा में शामिल हैं। यही नहीं इनमें से कुछ लोग केंद्रीय मंत्री हैं, तो कोई किसी राज्य का सीएम है। ट्विटर पर लिस्ट जारी करते हुए शशि थरूर ने लिखा कि इसकी चर्चा हो रही है, इसलिए जो मेरे पास आया, उसे शेयर कर रहा हूं। हमेशा न खाऊंगा न खाने दूंगा के नारे पर हैरानी होती है। मुझे लगता है कि यह बात शायद सिर्फ बीफ को लेकर कही गई थी। शशि थरूर ने जो लिस्ट साझा की है, उसमें राज्यसभा सांसद और केंद्रीय मंत्री नारायण राणे का नाम है। इसके अलावा कर्नाटक के पूर्व सीएम बीएस येदियुरप्पा और बंगाल में नेता विपक्ष शुभेंदु अधिकारी का नाम शामिल है। यही नहीं असम के सीएम हिमंता बिस्वा सरमा, लोकसभा की सांसद भावना गवली, शिवसेना नेता यशवंत जाधव, विधायक यामिनी जाधव और विधायक प्रताप सरनाईक शामिल हैं।

आधुनिक डिजिटल बुनियादी ढांचा तैयार कर रहा भारत, पीएम बोले, 2047 तक विकसित राष्ट्र बनेगा देश

पीएम मोदी बोले, टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से 2047 तक विकसित राष्ट्र बनेगा देश

नई दिल्ली/जीएनएस। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य हासिल करने में मदद मिलेगी। पीएम ने कहा कि भारत बड़े स्तर पर एक आधुनिक डिजिटल बुनियादी ढांचा तैयार कर रहा है और ये सुनिश्चित कर रहा है कि डिजिटल ाति का लाभ सभी तक पहुंचे।

मोदी ने आम बजट के बाद आयोजित हो रहे वेबिनार की श्रृंखला में 'क्षमताओं का दोहन- टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से जीवन सुगमता' विषय पर कहा कि सरकार छोटे व्यवसायों के लिए अनुपालन लागत कम करना चाहती है। उन्होंने उद्योग से ऐसे अनुपालनों की एक सूची तैयार करने को कहा, जिन्हें खत्म किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हम

छोटे व्यवसायों की अनुपालन लागत को कम करना चाहते हैं। क्या आप (उद्योग) अनावश्यक अनुपालनों की एक सूची तैयार कर सकते हैं, जिन्हें खत्म किया जा सकता है। हमने 40,000 अनुपालनों को खत्म कर दिया है। उन्होंने कहा कि करदाताओं के सामने आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जा रहा है. इसके लिए कर प्रणाली को फेसलेस बनाया जा रहा है।

टेक्नोलॉजी के वजह से ही 'एक राष्ट्र, एक राशन' योजना साकार

मोदी ने कहा कि टेक्नोलॉजी के वजह से ही 'एक राष्ट्र, एक राशन' योजना साकार हो सकी। उन्होंने आगे कहा कि जैम त्रयी (जन-धन योजना, आधार और मोबाइल नंबर) ने गरीबों तक लाभ पहुंचाने में मदद की। प्रधानमंत्री ने कहा कि 5जी और एआई (कृत्रिम मेधा) जैसी तकनीकों पर चर्चा की जा रही है और ये चिकित्सा, शिक्षा, कृषि और कई अन्य क्षेत्रों को बदलने के लिए तैयार हैं। उन्होंने हितधारकों से आम आदमी के सामने आने वाली 10 ऐसी समस्याओं की पहचान करने को कहा कि जिनका समाधान एआई का इस्तेमाल करके किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी टेक्नोलॉजी से चलने वाली है और इसे केवल डिजिटल, इंटरनेट टेक्नोलॉजी तक सीमित नहीं रखा जा सकता।

विधानसभा क्षेत्र में विधायक निधि से प्रदत्त 13 पानी के टैंकर वितरित

क्षेत्र में जल व अन्य समस्या का समाधान हमारी पहली प्राथमिकता- डॉ विक्रांत भूरिया

झाबुआ/माणक लाल जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। झाबुआ विधानसभा क्षेत्र कि 13 पंचायतों में ग्रामीणों की मांग पूर्ण करते हुए हैं विधायक निधि से प्रदत पानी के 13 टैंकरों का वितरण स्थानीय उत्कृष्ट मैदान में किया गया जिसमें क्षेत्र के सरपंचों की उपस्थिति में मसूरिया विजलपुर उमरी आमली फलिया नवागांव नरवरिया बिसौली बरोड़ फुटिया कालापीपल कुंडला तलावली आमली पठार व एक पानी का टैंकर कांग्रेस पार्षदों की मांग पर नगर पालिका परिषद झाबुआ को प्रदाय किया गया।

इस अवसर पर ग्रामीणों को संबोधित करते हुए मध्य प्रदेश युवा कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ विक्रांत भूरिया ने कहा कि लंबे समय से क्षेत्र के ग्रामीण जनों की पानी के टैंकरों की मांग थी पार्टी द्वारा चल रहे हाथ से हाथ जोड़ो अभियान कार्यक्रम मैं ग्रामीणों से रूबरू उपरांत पानी की समस्याओं से क्षेत्र के रहवासियों ने अवगत कराया था हमारी पहली प्राथमिकता क्षेत्र में विकास की रही है वहीं भाजपा ग्रामीण क्षेत्रों में नल जल योजना के नाम से भ्रमित कर रही है ग्रीष्म ऋतु का समय है पानी का स्त्रोत न के बराबर है ग्रामीण क्षेत्रों में पानी की टंकियों का निर्माण भी पूर्ण नहीं हो पाया भाजपा नेता ग्रामीणों की समस्या के समाधान न करते हुए नल जल योजना के भ्रामक प्रचार में लगे हुए हैं

जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रकाश रांका ने कहा कि कांग्रेस जो कहती है वह करती है विधानसभा क्षेत्रों में भाजपा सरकार ने कोई ऐसी कार्य योजना बनाई नहीं जिससे क्षेत्र में विकास हो क्षेत्र के विधायक कांतिलाल भूरिया हमेशा क्षेत्र की समस्या के समाधान के प्रति कटिबद्ध रहे हैं विधायक निधि के माध्यम से से बिजली पानी व अन्य समस्या के समाधान में करोड़ों की राशि से विकास कार्य करवा रहे हैं

इस अवसर पर कांग्रेस प्रवक्ता साबिर फिटवेल जिला युवा कांग्रेस अध्यक्ष विजय भाबर ब्लॉक अध्यक्ष कान्हा गुंडिया गौरव सक्सेना जितेंद्र सिंह राठौर शंकर सिंह भूरिया सुरेंद्र गरवाल विनय भाबर ठाकुर रविंद्र सिंह यशवंत पवार शंकर हटीला मकना निनामा धूमा डामोर मालू डोडियार हेमेंद्र बबलू कटारा दीपू डोडियार जितेंद्र शाह संजय निनामा लालू गुलरेज कुरेशी वसीम सैयद अ रुण मकवाना करीम शेख गोलू कुरैशी व कई सरपंच गण कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित थे।

आगामी त्यौहारों पर 01 से 12 मार्च 2023 तक शस्त्रों के प्रदर्शन पर प्रतिबन्ध

झाबुआ/माणक लाल जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती रजनी सिंह के आदेशानुसार पुलिस अधीक्षक जिला झाबुआ के पत्र क्रमांक/जिविशा./झा./2023--(254) दिनांक 27 फरवरी 2023 द्वारा जिले में भगौरिया पर्व होलिका दहन, धुलेंडी एवं रंगपंचमी पर्व के दौरान शस्त्र प्रदर्शन पर निषेधाज्ञा जारी करने का लेख किया गया है। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी श्रीमती रजनी सिंह, जिला झाबुआ के द्वारा आर्म्स एक्ट 1959 की धारा-17 (ख) के अन्तर्गत जिले में आगामी त्यौहारों पर 01 मार्च 2023 से 12 मार्च 2023 तक शस्त्रों के प्रदर्शन पर प्रतिबंधित लगाया जाता है। यह आदेश तत्काल प्रभावशील होगा।

पीड़िता के साथ खोटा काम करने वाले अभियुक्तगण को सुसनेर न्यायालय ने 5 साल कारावास 3000 जुर्माना तथा 20 साल के सश्रम कारावास व 33000 रुपये के जुर्माने से किया दण्डित

सुसनेर-दैनिक मालवा हेराल्ड। पीड़िता के साथ खोटा काम करने वाले अभियुक्त को सुसनेर न्यायालय अपर सत्र न्यायालय पंकज कुमार वर्मा ने 5 साल कारावास 3000 जुर्माना तथा 20 साल के सश्रम कारावास व 33000 रूपयें के जुर्माने से दण्डित किया।

आपको बता दे कि मीडिया प्रभारी एवं एडीपीओ पवन सौलंकी, सुसनेर ने 28 फरवरी मंगलवार को प्रेस नोट जारी कर बताया कि फरियादी ने थाना सोयत में रिपोर्ट किया कि दिनांक 29/11/21 को शाम करीबन 6 बजें मैं घर आया तब मेरे भाई ने मुझे बताया कि तुम्हारी लडकी घर से स्कूल का बोल कर गई थी जो घर वापस नही आई फिर मैनें व मेरे भाई ने आसपास व रिश्तेदारी में तलाश किया किंतु मेरी नाबालिग लडकी का कोई पता नही चला मुझे शंका है कि अभियुक्त उसे बहला फुंसलाकर ले गया है। उक्त प्रकरण में अनुसंधान पूर्ण कर धारा 363,366,376(2)(एन),376(3),344,109 भादवि एवं लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम की धारा 3/4, 5(एल)/6 , 17 में अभियोग पत्र माननीय न्यायालय में पेश किया। उक्त प्रकरण में विवेचना उनि. वंदना शाक्य, उनि दिलीप कटारा के द्वारा की गई। जंहा से न्यायालय ने एडीपीओ पवन सौलंकी के तर्को से सहमत होते हुए अभियुक्त (1) को निम्नानुसार दण्ड से दण्डित किया

क्र.	धारा	दण्ड
1.	363 भादवि	2 साल का सश्रम कारावास ,1000 रूपयें अर्थदण्ड, अर्थदण्ड के व्यतिक्रम में 1 माह का सश्रम कारावास
2.	366 भादवि	5 साल का सश्रम कारावास ,2000 रूपयें अर्थदण्ड, अर्थदण्ड के व्यतिक्रम में 1 माह का सश्रम कारावास
	उक्त सभी सजायें एक साथ भुगतायी जायें।	
	तथा अभियुक्त(2) को निम्नानुसार दण्ड से दण्डित किया	
क्र.	धारा	दण्ड
1.	363 भादवि	2 साल का सश्रम कारावास ,1000 रूपयें अर्थदण्ड, अर्थदण्ड के व्यतिक्रम में 1 माह का सश्रम कारावास
2.	366 भादवि	5 साल का सश्रम कारावास ,2000 रूपयें अर्थदण्ड, अर्थदण्ड के व्यतिक्रम में 1 माह का सश्रम कारावास
3.	376(3) भादवि	20 साल का सश्रम कारावास,15000 रूपयें अर्थदण्ड, अर्थदण्ड के व्यतिक्रम में 3 माह का सश्रम कारावास
4.	5(जे)(2) पोक्सों एक्ट	20 साल का सश्रम कारावास,15000 रूपयें अर्थदण्ड, अर्थदण्ड के व्यतिक्रम में 3 माह का सश्रम कारावास

उक्त सभी सजायें एक साथ भुगतायी जायें। प्रकरण में महत्वपूर्ण सहयोग कोर्ट मोर्हरिर आरक्षक 230 आशीष सोनी एवं थाना मुंशी सोयतकलां आरक्षक 202 बनवारी वर्मा, सहायक ग्रेड 3 कृष्णकांत अग्रवाल के द्वारा किया गया।

सार समाचार

गांव झावलिया ग्राम की बेटी का एम. पी. सिविल जज में चयन

झाबुआ(पेटलावद)माणिक लाल जैन। लग्न ओर मेहनत से झाबुआ जिले की छोटे से गांव झावलिया ग्राम की बेटी का एम. पी. सिविल जज में चयन। प्रतीभा किसी तारीफ की मोहताज नहीं होती हे ऐसी ही छोटे से गांव की प्रीतिबाला मुनिया पिता जॉन मुनिया जो पेटलावाद तहसील के झावलिया ग्राम से भील समुदाय से आती है । उनका एम.पी सिविल जज 2023 मे चयन हुआ है उन्होने इसका श्रेय ईश्वर तथा अपने माता पिता को दिया है। उन्होने DAVV इन्दौर जाकर अपनी स्नातक पूर्ण की । उसके बाद उन्होने सिविल जज की तैयारी शुरू की, जिसमे yth Attampt मे उनका चयन हुआ इसके लिए उन्होने इन्दौर से ही तैयारी कि उन्होने बताया कि ये परिक्षा तीसरे चरण में होती है प्री, उसके बाद मेंस और आखिरी में इंटरव्यू होता है।

लालाखेड़ी में हुआ विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन

सोयत कला /विष्णु जाटव/दैनिक मालवा हेराल्ड। समीप ग्राम लालाखेड़ी एकीकृत हाई स्कूल में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर विद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। विज्ञान प्रदर्शनी में चलित यंत्रों द्वारा आविष्कार,जादू नहीं विज्ञान,तारा मंडल,न्युटन के गति नियम,चन्द्रयान,आदि अनेक प्रकार की जानकारीयां विस्तारपूर्वक राजेन्द्र सिंह व सुनीलसिंह द्वारा छात्रों को दी गई। विद्यालय में अध्ययन बच्चों ने सभी जानकारियों को बड़े उत्साह और आनंद के साथ समझा और सिखा। उक्त जानकारी अरविंद जाटव ने दी।

झाबुआ गौरव दिवस के उपलक्ष्य में फुटबॉल मैत्री मैच का आयोजन किया गया

झाबुआ /माणक लाल जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। 2023 डीआरपी लाईन के नवनिर्मित फुटबॉल ग्राउड पर झाबुआ गौरव दिवस 28 फरवरी को फुटबॉल मैत्री मैच का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अतिथि के रूप में कलेक्टर श्रीमती रजनी सिंह, पुलिस अधीक्षक अगम जैन, भाजपा जिला अध्यक्ष भानु भूरिया, महामंत्री सोमसिंह सोलंकी, शारदा समूह के संस्थापक ओम शर्मा उपस्थित थे।अतिथियों का पुष्पहार से अभिनन्दन किया गया। शारदा समुह की छात्राओं के द्वारा आत्मरक्षा प्रशिक्षण कराटे की प्रस्तुती दी। यह दल विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं में जाकर छात्राओं को आत्मरक्षा के लिये कराटे का प्रशिक्षण देगे। अतिथियों के द्वारा फुटबॉल टीम का परिचय प्राप्त किया। कलेक्टर श्रीमती सिंह ने फुटबॉल पर किक लगाकर फुटबॉल मैच का शुभांरभ किया। इस रोचक मैच में आजाद क्लब के द्वारा अपनी जीत दर्ज करवायी। जिन्हे आज सायं पुरूस्कृत किया जायेगा। इस दौरान जिला खेल अधिकारी विजय सलाम, प्रभारी पी आर ओ सुधीर कुशवाह उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन हिमांशु त्रिवेदी के द्वारा किया गया।

अपना घर वृद्धाश्राम में विधिक साक्षरता शिविर आयोजित

आगर-मालवा/दैनिक मालवा हेराल्ड। अपना घर वृद्धाश्रम में अध्यक्ष एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश शाजापुर के मार्गदशन में अध्यक्ष, तहसील विधिक सेवा समिति आगर के तत्वावधान में सोमवार को विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में द्वितीय जिला न्यायाधीश कमलेश इटावदिया द्वारा वृद्धजनो को से कहा कि आपको आपने बेटे-बहु के छोड़ दिये जाने पर उसका दुःख नहीं करना है तथा उस परमपिता परमात्मा से संबंध बनाना है और ईश्वर की भक्ति एवं भजन कर जीवन यापन करना है। उन्होंने कहा कि वृद्धाश्राम के सभी सदस्य हंसी-खुशी के साथ में रहे।

न्यायाधीशगणों ने वृद्धजनों के ईलाज की उत्तम व्यवस्था हेतु वृद्धाश्रम संचालक को निर्देशित किया कि वृद्धाजनो को ईलाज समय पर करवाया जावें तथा उपस्थित वृद्धजनो को अपने हक एवं कानून के बारे में जानकारी एवं वृद्धजनो के विरूद्ध होने वाले अत्याचारों एवं दुर्व्यवहारो के बारे में जानकारी दी गई।

शिविर में न्यायिक अधिकारीगण प्रथम व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ खण्ड आगर अमित नगायच, व्यवहार न्यायाधीश कनिष्ठ खण्ड आगर भूपेन्द्रसिंह कुशवह, अति. द्वितीय व्यवहार न्यायाधीश कनिष्ठ खण्ड आगर सुश्री श्वेता चौहान एवं वृद्धाश्रम के सचालंक श्रीमती मीना जैन, प्रबंधक कनीराम यादव उपस्थित रहे।

सीएम राइम्स स्कूल बदनावर में आज राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी 2023 निर्देशानुसार मनाया गया

बदनावर/दैनिक मालवा हेराल्ड। सीएम राइम्स स्कूल बदनावर में आज राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी 2023 निर्देशानुसार मनाया गया विज्ञान दिवस पर campus-2 में कक्षा 1 से लेकर कक्षा 10 तक के विद्यार्थियों को समारोह में सम्मिलित किया गया विज्ञान दिवस के उपलक्ष में चार्ट मॉडल एवं विज्ञान के प्रयोगों के साथ विज्ञान पदक फिल्में भी विद्यार्थियों को इस बार टीवी पर दिखाई गई विज्ञान दिवस समारोह में वरिष्ठ प्रधानाध्यापक बी एल पाटीदार जी की अध्यक्षता में विभिन्न गतिविधियां पूर्ण की गई इस अवसर पर जिला प्रभारी रूबी जी नाट्याल पीरामल फाउण्डेशन के साथ केंपस 1 के शिक्षकगण उपप्राचार्य रियाजुद्दीन शेख,प्रदीप पांडेय, नारायण पाटीदार ,जी एल सिर्वी , शुभम उपाध्याय वैभव चौरड़िया, कैम्पस 2 माध्यमिक विद्यालय प्रधानाध्यापक प्रेम शंकर सोलंकी, प्राथमिक शाला प्रधानाध्यापक आनंद काले एवं सभी शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित थे। विद्यार्थियों द्वारा निर्मित मॉडलों का प्रदर्शन उनके द्वारा किया गया जिसमें प्रकाश का वर्ण विक्षेपण , रोबोट मॉडल,देशी रूम हीटर, चलित माडल थे।पश्चात शिक्षक प्रदीप पांडेय् द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की पृष्ठभूमि मनाए जाने का कारण, वैज्ञानिक चंद्रशेखर रमन जी का जीवन परिचय, उन्हें प्राप्त नोबेल पुरस्कार, उनकी खोज के संबंध में सभी विद्यार्थियों को अवगत कराया। साथ ही विज्ञान आधारित विभिन्न प्रयोग शिक्षक जी एल सिर्वी नारायण पाटीदार, शुभम उपाध्याय ,वैभव चोरड़िया एवं प्रदीप पांडेय् द्वारा प्रदर्शित किए गए जिनमें ज्वालामुखी, पानी में आग लगना, नारियल में रंग आना, पानी के छिड़काव पर अक्षरों का उभरना, ऐसे रसायन प्रयोगों के द्वारा विद्यार्थियों को बताया गया कि वह अंधविश्वासों से दूर होकर देखें। गांव में आने वाले कई जादुगर/मदारी उन्हें विज्ञान आधारित चमत्कार दिखा कर भ्रमित करता है। विज्ञान है जादू नहीं आधारित गतिविधियां भी विद्यार्थियों के सम्मुख की गई साथी विज्ञान आधारित कुछ फिल्में स्मार्ट टीवी के माध्यम से भी दिखाई गई।

मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना 5 मार्च से शुरू होगी

योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार करें -कलेक्टर श्री वानखेडे ››महिला बाल विकास विभाग की बैठक आयोजित

आगर मालवा/दैनिक मालवा हेराल्ड। महिलाओं के सर्वांगीण विकास, आर्थिक स्वावलंबन, स्वास्थ्य एवं पोषण को बनाए रखने तथा महिलाओ की परिवार में निर्णय भूमिका सुदृढ़ करने हेतु प्रदेश में मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना 05 मार्च से शुरू होगी, योजना में आवेदन 15 मार्च से 30 अप्रैल 2023 तक प्राप्त किए जाएंगे।

कलेक्टर कैलाश वानखेड़े ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में महिला बाल विकास विभाग की जिला स्तरीय बैठक लेकर अधिकारियों को योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि योजनान्तर्गत सभी पात्र महिलाएँ अपना आवेदन कर सकें इसके लिए योजना का ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में मैदानी अमले के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया जाए तथा आवेदन प्रक्रिया शुरू होने पर ग्रामीण क्षेत्रों में सभी ग्रामों में एवं शहरी क्षेत्रों में सभी शहरी वार्ड या एक-दो स्थानों पर शिविर लगाकर आवेदन प्राप्त कर उन्हें ऑनलाईन दर्ज करवाया जाए। योजना के लाभ के लिए महिलाओं के बैंक खाते अनिवार्य है, इसके लिए जिन महिलाओं के खाते नहीं खुले है, उनके खातें खुलवाएं जाएं, साथ ही खातों को आधार से लिंक करवाने की प्रक्रिया भी पूर्व से सुनिश्चित की जाए। कलेक्टर ने महिला बाल विकास विभाग की योजनाओं की भी समीक्षा कर लक्ष्यपूर्ति के निर्देश दिए। उन्होंने बच्चों एवं महिलाओं में कूपोषण, एनिमिया को दूर करने हेतु आगनवाड़ी केन्द्रों में पौषण वाटिका विकसित कर हरी सब्जियाँ एवं सुरजना के पौधे लगाने के निर्देश दिए।

बैठक में बताया कि मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना में 23 से 60 वर्ष आयु के मध्य की विवाहित महिलाओं को लाभ की पात्रता होगी। प्रत्येक पात्र महिला को उसकी पात्रता अवधि में 1000 रूपये प्रतिमाह के मान से राशि सीधे उसके आधार लिंक्ड बैंक खाते में जमा की जायेगी। किसी परिवार की 60 वर्ष से कम आयु की महिला को सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना में प्रतिमाह 1000 रूपये से कम जितनी राशि प्राप्त हो रही होगी, तो उस महिला को वह राशि प्रदाय कर 1000 रूपये तक राशि की पूर्ति करने का योजना में प्रावधान किया गया है। योजना में समस्त आवेदन निःशुल्क ऑनलाइन प्राप्त किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त हितग्राही यदि स्वयं उपस्थित होकर आवेदन के लिए आवश्यक जानकारी का प्रपत्र देती है तो उसकी भी प्रविष्टी ऑनलाइन पोर्टल पर करने की व्यवस्था की जाएगी। बैठक में जिला कार्यक्रम अधिकारी रेलम बघेल, सहायक संचालक रीना शर्मा, भारती अवास्या, परियोजना अधिकारी इरफान अंसारी व अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

स्व-रोजग़ार का नया अवसर, मुख्यमंत्री युवा अन्नदूत योजना

ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित

आगर-मालवा/दैनिक मालवा हरेाल्ड। शासन द्वारा मुख्यमंत्री युवा अन्नदूत योजना प्रारंभ की गई। प्रदाय केन्द्रों से उचित मूल्य दुकानों तक राशन सामग्री का परिवहन कराने हेतु पात्र युवाओं को योजना के तहत वाहन के लिए बैंक ऋण उपलब्ध करवाया जाएगा। योजना के तहत् आवेदन की अंतिम तिथि 24 मार्च 2023 है। ऑनलाइन आवेदन हेतु पोर्टल https://samast.mponline.gov.in पर कर सकते है।

आवेदक की अहर्ता

आवेदन के लिए संबंधित सेक्टर की जनपद पंचायत का मूल निवासी जिसकी उम्र 18 से 45 वर्ष हो, शैक्षणिक योग्यता- आठवीं कक्षा उत्तीर्ण, परिवार की अधिकतम वार्षिक आय 12 लाख रुपए, हेवी मोटर व्हीकल संचालन हेतु स्थाई वैध लायसेंस धारक, बैंक से ऋण प्राप्त करने की पात्रता (डिफाल्टर न हो), शासकीय सेवक और पेंशनर न हो (सेवानिवृत्त सैनिक को पात्रता), आवेदक अन्य स्व-रोजगार योजना में लाभांवित न हो, अपराधिक प्रवृत्ति एवं पृष्ठभूमि का न हो, आवेदन के लिए पात्र है।

ऋण की स्वीकृति

हितग्राही को वाहन मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजनांतर्गत उपलब्ध कराया जाएगा, जिसमें निम्नानुसार रियायत दी जाएगी। ऋण अवधि 7 वर्ष, ब्याज अनुदान 3 प्रतिशत वार्षिक, ऋण गारंटी शुल्क की वापसी, विभाग द्वारा अधिकतम 1.25 लाख रुपए प्रति वाहन मार्जिन मनी अनुदान, हितग्राही द्वारा 1.25 लाख रुपए, प्रति वाहन मार्जिन मनी जमा करना होगी।

योजना के मुख्य प्रावधान

बैंक के माध्यम से अधिकतम राशि रु. 25 लाख की कीमत के वाहन उपलब्ध कराए जाएंगे, हितग्राही को 7.5 मेट्रिक टन क्षमता का वाहन क्रय करना होगा। खाद्यान्न मात्रा एवं दूरी अनुसार रु. 45 से 65 प्रति क्विंटल परिवहन एवं हैण्डलिंग व्यय देय होगा, अन्य योजना के खाद्यान्न, शक्कर, नमक के परिवहन पर विभाग द्वारा निर्धारित परिवहन व्यय का भुगतान, सेक्टरवार परिवहन एवं हैण्डलिंग दरें पोर्टल पर उपलब्ध, विभाग द्वारा सूचीबद्ध वाहनों मंव से हितग्राही द्वारा वाहन का चयन, राशन सामग्री के परिवहन हेतु हितग्राही से 7 वर्ष के लिए अनुबंध किया जाएगा। शासन की विभिन्न योजनाओं के प्रचार-प्रसार हेतु वाहनों पर प्रदर्शन। योजना के संबंध में जानकारी विभाग के पोर्टल https://food.mp.gov.in, https://samast.mponline.gov.in पर उपलब्ध है।

तहसील कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई में कॉलोनी-नाइजर के विरुद्ध धोखाधड़ी एवं भरपाई के लिए दिए आवेदन

आलोट/दैनिक मालवा हेराल्ड/ राकेश चौहान पिंटू। तहसील कार्यालय में मंगलवार को एसडीएम मनीषा वास्कले द्वारा जनसुनवाई आयोजित की गई जनसुनवाई में आवेदन लेकर पहुंची मोनिका शर्मा ने बताया कि आलोट निवासी कॉलोनी नाइजर सुरेशचंद्र काला पिता जड़ावचंद्र काला ने शिव वाटिका नाम से एक कॉलोनी विकसित की गयी जिसमें कॉलोनी नाइजर द्वारा मुझे एक मकान विक्रय किया गया वहीं प्रशासन द्वारा कालोनी की सड़क शासकीय भूमि में होने के कारण कार्रवाई करते हुए तोड़ दिया गया और मेरे मकान की छज्जा पेढ़ी भी तोड़ दी गई जिससे मकान की दीवारों में दरारें आ गई कॉलोनी नाइजर द्वारा मकान विक्रय करते समय मुझे इस बात की जानकारी नहीं बताई गई थी जो कि धोखाधड़ी पूर्वक एवं वास्तविकता छिपाये रखने के उद्देश्य मुझसे छुपाया गया है आवेदन में बताया गया कि हुए नुकसान का हर्जाना कॉलोनी नाइजर से दिलवाया जाए तथा धोखाधड़ी पूर्वक एवं असत्य नक्शा बताकर फर्जी तरीके से विक्रय करने पर कॉलोनी नाइजर के ऊपर कठोर कार्रवाई की जाए वहीं एसडीएम मनीषा वास्कले ने आवेदन पर जांच कर कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है।

जनसुनवाई में कलेक्टर द्वारा जिले के दूरस्थ क्षेत्रों से आये ग्रामीणों की समस्याओं को सुना गया और तत्काल निराकरण के निर्देश दिये

आज जनसुनवाई में 47 आवेदन प्राप्त किये

झाबुआ/दैनिक मालवा हेराल्ड। 28 फरवरी, 2023 जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अमन वैष्णव, एडीएम एस.एस. मुजाल्दा द्वारा जनसुनवाई में आज 47 आवेदन प्राप्त किये जिसे सम्बधित विभाग को तत्काल जॉच कर निराकरण करने के निर्देश दिये।

आज जनसुनवाई में दुरस्त ग्रामीण क्षेत्रों से आये ग्रामीणों की समस्यों को सुना एवं संबधित विभाग के जिला अधिकारी को निराकरण के लिए दिया। आज जनसुनवाई में जो आवेदन प्राप्त हुये है, उसमें मुख्य रूप से प्रार्थी तोलसिंह पिता पांगला अमलियार निवासी ग्राम मातासुला भूरिया तहसील रामा जिला झाबुआ के द्वारा शासकीय योजना साहायता से इलेक्ट्रोनिक सायकल दिलवाने का आवेदन प्रस्तुत किया गया। सरंपच दिलीप सिंगाड़ ग्राम पंचायत सनोड जनपद पंचायत रानापुर के द्वारा नवीन हेण्डपम्प खनन की स्वीकृति प्रदान करेन के संबंध में आवेदन प्रस्तुत किया गया। प्रार्थी जावेद पिता अजीज लोदी वार्ड क्रमांक 14 गाँधी चोक पेटलावद जिला झाबुआ के द्वारा प्रमाणित नक्ल प्रदान करने के संबंध में आवेदन प्रस्तुत किया गया। प्रार्थी नारसिंह पिता स्व. पिदीया वसुनिया भील निवासी डाबतलाई तहसील रानापुर जिला झाबुआ के द्वारा आरोपी मांगीया पिता मिठीया वसुनिया भील निवासी डाबतलाई तहसील रानापुर के विरूद्ध आवेदन प्रस्तुत किया गया आरोपी के द्वारा अपने नाम से जालसाजी करके नारसिंह की भूमि का नामान्तरण करवाये जाने के संबंध में प्रार्थी के द्वारा आवेदन प्रस्तुत किया गया। प्रार्थी पप्पू भाबोर पिता तोलिया भाबोर निवासी ग्राम मौजीपाडा जिला झाबुआ के द्वारा आरोपी कैलाश डामोर के द्वारा प्रार्थी पप्पु के खेत से पेड काटने एवं मना बोलने पर गाली देने व झगडा करने एवं कुल्हाडी से हमला किया गया एवं पुलिस थाने में सुचना देने के बाद भी कोई कार्रवाही नही की गई इस संबंध में आवेदन प्रस्तुत किया गया। प्रार्थी राजेश चौधरी निवासी करडावद बडी पोस्ट करडावद जिला झाबुआ के द्वारा अपनी टेक्टर ट्रोली मनीष बोरा निवासी रम्भापुर को किराये से दी थी, उसे वापस प्राप्त करने के सम्बन्ध में आवेदन प्रस्तुत किया गया। इस दौरान संबंधित विभाग के जिला अधिकारीगण उपस्थित थे।

विद्युत ट्रांसफार्मर पर चढ़े युवक ने रखी शर्त, मीडिया वालों को बुलाओ, तभी नीचे उतरुंगा

पुलिसकर्मी ने मीडियाकर्मी बनकर युवक की बात सुन वीडियो बनाई और समझा-बुझाकर नीचे उतारा

मंदसौर/पिपलियामंडी/दैनिक मालवा हेराल्ड। मीडिया को बुलाओ.... तुम सब आ गए.... मीडिया वाले तो आए ही नहीं। वह आएंगे तब ही नीचे उतरुंगा। मंगलवार को गांव मुन्देड़ी में विद्युत ट्रांसफार्मर पर चढ़े दिगामी रुप से कमजोर युवक ने मौके पहुंची पुलिस से यह बात बोली तो एकाएक पुलिस भी पसोपेश में पड़ गई, लेकिन बाद में सूझबुझ से काम लेते हुए पुलिस जवान को ही मीडियाकर्मी बनकर युवक का वीडियो बनाना पड़ा और उसे समझा-बुझाकर नीचे उतारा, युवक ने करीब एक घंटे तक ड्रामा किया। जानकारी के अनुसार मंगलवार को प्रातः 11 बजे करीब मुन्देड़ी - बादरी के बीच एक युवक विद्युत ट्रांसफार्मर पर चढ़ गया।

सूचना पर बिजली कंपनी के अधिकारी व कर्मचारी पहुंचे व विद्युत सप्लाय बन्द की। युवक को नीचे उतारने का प्रयास किया, लेकिन वह नही उतरा। बाद में चोकी प्रभारी अभिषेक बोरासी, एएसआई एमएल वर्मा, प्रधान आरक्षक राजवीरसिंह सहित पुलिसकर्मी मौके पहुंचे।

लेकिन युवक नीचे उतरने को तैयार नही था। वह बोला सभी लोग आ गए, लेकिन मीडिया वाले नही आए है, मुझे उनके बात करना है, उसके बाद ही नीचे उतरुंगा।

युवक की इस शर्त पर पुलिस भी पसोपेश में थी कि मीडिया को तत्काल कैसे बुलाए, इसी दौरान कोर्ट जा रहे एक पुलिस जवान महेन्द्र (जो वर्दी में नही था) को ही मीडियाकर्मी बनना पड़ा और युवक की वीडियो बनाई और उसकी समस्या कलेक्टर तक पहुंचाने का वादा किया, तब जाकर युवक नीचे उतरा। पुलिस पूछताछ के दौरान पता चला कि युवक लूनाहेड़ा निवासी दशरथ पिता भंवरलाल सिंधम है, जो अच्छा मिस्त्री है, लेकिन कभी-कभी उसके दिमाग का संतुलन बिगड़ जाता है तो वह इसी तरह की हरकतें करता है। पूर्व में भी वह पिपलिया में रेलवे फाटक के पास टेऊन के आगे खड़ा होकर टेऊन को रोक चुका है, वहीं एक बार स्वयं पर करोसिन डालकर भी आत्महत्या करने का ड्रामा कर चुका है। पुलिस के अनुसार कुछ दिनों पूर्व युवक को विद्युत मोटर चोरी के मामले में पकड़ा था। आरक्षक राजीवरसिंह यादव ने मौके पहुंची नारायणगढ की डॉयल 100 से युवक को उसके ससुराल गांव ढ़िकनिया में छोड़ा व ससुराल वालों से उसका इलाज कराने की कहा है।

विश्वमांगल्य सभा, रतलाम द्वारा फाग उत्सव का आयोजन

आलोट/राकेश चोहान/दैनिक मालवा हेराल्ड। हर क्षेत्र की महिला सर्वप्रथम एक माँ होती है। महाराणा प्रताप, शिवाजी महाराज की माँ जैसी माँ आज के समय में पुनः निर्माण होना अत्यंत आवश्यक है। यही संदेश इस कार्यक्रम के माध्यम से दिया गया। कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप में ज्वाला हृतह की संस्थापिका डॉ दिव्या गुप्ता, विश्व मांगल्य सभा की मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ संगठन मंत्री पूजा पाठक, रतलाम विस्तारिका सुनीता पाटील जी मुख्य रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में लता जी बक्शी इनका विशेष रूप से सम्मान किया गया। महिलाओं ने फाग के गीत , राधा कृष्ण द्वारा फूलों की होली, नृत्य प्रस्तुति, शौर्य प्रदर्शन का आनंद उठाया। तलवार के साथ शौर्य प्रदर्शन मे महिलाओं ने बहुत अच्छा प्रस्तुतीकरण देते हुए यह संदेश दिया कि समय आने पर महिलाएं शस्त्र उठा कर धर्म-संस्कृति की रक्षा करते आ रही है और आगे भी करेंगी। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती मंगला जी देवड़ा और उनकी सयोजक आशा पाटीदार रेखा पाटीदार पिंकी पाटीदार भावना बिशा दुर्गा पांचाल रेखा पांचाल अनीता पांचाल भारती पाटीदार प्रिया उपाध्याय कार्यक्रम में शामिल सभी महिलाओं को माँ तुलसी का पौधा देकर सम्मानित किया गया।

कॉलोनाइजर द्वारा पेयजल लाईन क्षतिग्रस्त, एफआईआर के निर्देश

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। गत दिवस सुदामा नगर बनखंडी हनुमान मंदिर के पास दिखाई दिया जहां विनोद मिल की चाल के एक टुकड़े को खरीदने वाले कॉलोनाइजर द्वारा पीएचई की पाइप लाइन को जेसीबी से खुदाई के दौरान क्षतिग्रस्त कर दिया गया है इस संबंध में वैधानिक कार्यवाही करने एवं एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए गए है। उक्त निर्देश जलकार्य विभाग एवं सीवरेज प्रभारी श्री शिवेन्द्र तिवारी ने देते हुए बताया कि विभिन्न स्थानों पर प्रतिदिन पीएचई की पेयजल प्रदाय करने वाली पाइप लाइन को अलग- अलग संस्था, व्यक्ति, ठेकेदार द्वारा क्षतिग्रस्त किया जा रहा है जिस वजह से हजारों लीटर पानी व्यर्थ में बह रहा है। विनोद मिल की चाल परिसर में कलोनाईजर द्वारा बेतरतीब तरीके से मनमानी पूर्वक कार्य किया जा रहा है।

पिछले मंगलवार को आए कलेक्टर ने की जनसुनवाई तो कुछ अधिकारी मिले गायब, फिर बदल दी व्यवस्था, जिम्मेदारी तय, वीसी से भी जुड़े अधिकारी

मंदसौर (भारतसिंह तोमर)/दैनिक मालवा हेराल्ड। नए कलेक्टर की दूसरी बार हुई जनसुनवाई ने व्यवस्थाए बदल दी है। बता दें कि नवागत कलेक्टर दिलीप कुमार यादव 21 फरवरी को यानी मंगलवार के दिन ही मंदसौर कलेक्टर की जवाबदारी संभालने आए थे। पहले दिन ही अधिकारियों से बैठक कर उन्होंने प्रेसवार्ता की। फिर कुछ देर के लिए जनसुनवाई के लिए रूके। यहां संबंधित अधिकारी को पुकारा तो वे गायब मिले। इसमें नपा सीएमओ भी शामिल थे। उधर, अनेक जिला अधिकारी पहली जनसुनवाई के दौरान एक लाईन से बैठे हुए थे। कलेक्टर यादव को मंगलवार को एक सप्ताह हुआ और उन्होंने जनसुनवाई की व्यवस्था बदली। अधिकारियों की जिम्मेदारी तय की और उन्हें जनसुनवाई में शामिल होने की ताकिद दी। मौजूद नहीं होने पर अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से भी जुड़े।

जनसुनवाई सिर्फ फॉर्मलिटी नहीं रही बल्कि अधिकारियों की जवाबदेही भी तय की गई। जनसुनवाई के दौरान सभी जिम्मेदार अधिकारी मौजूद रहे। एक-एक फरियाद को कलेक्टर ने गंभीरता से सुना। मंगलवार को होने वाली जनसुनवाई हटकर हुई। ऐसा पहली बार हुआ जब अधिकारियों की भी जवाबदेही तय की गई। कलेक्टर दिलीप कुमार यादव की मौजूदगी में प्रॉपर रूप से यह जनसुनवाई पहली रही। पिछले मंगलवार को कलेक्टर ने अपना दायित्व संभाला था। कुछ देर तक उन्होंने जनसुनवाई भी की। कलेक्टर दिलीप यादव ने जनसुनवाई की व्यवस्था को बदला और अधिकारियों की जिम्मेदारी तय की गई। जनसुनवाई कलेक्टर के सभा हाल में हुई जहां जिले के अधिकारी मौजूद रहे। इसके साथ ही सीतामऊ, सुवासरा, गरोठ, भानपुरा के अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग एक साथ जुड़े। जनसुनवाई में अपनी समस्या लेकर पहुंचे लोग कतारबद्ध खड़े रहे। हर एक समस्या को कलेक्टर ने गौर से सुना और सम्बंधित अधिकारियों सीधे बात की और समस्याओं का तुरंत निराकरण के लिए निर्देशित किया। जनसुनवाई में अपनी समस्या लेकर पहुंचे लोगों ने भी आज की व्यवस्था को बेहतर बताते हुए अधिकारियों के व्यवहार और कार्रवाई से संतुष्ट दिखे। लोगों ने कहा कि आज फरियाद को सुनने की व्यवस्था अच्छी है। कलेक्टर साहब ने भी उनकी समस्या की ध्यान से सुना है।

एनएसएस विशेष शिविर के छठवें दिन छापरिया में हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

सुसनेर-दैनिक मालवा हेराल्ड। स्वामी विवेकानंद शासकीय महाविद्यालय सुसनेर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा प्राचार्य डॉ.जी सी गुप्ता के निर्देशन में ग्राम पंचायत छापरिया में कार्यक्रम अधिकारी,सहायक प्राध्यापक रमेश जमरा के नेतृत्व में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया जा रहा है। एनएसएस इकाई के तत्वावधान विशेष शिविर के छठवें दिन सोमवार को डॉ मुबास्शरा खान तथा उषा वैष्णव की टीम ने ग्राम छापरिया के नागरिकों, स्कूली छात्र छात्राओं एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों तथा सहायक प्राध्यापकों सहित लगभग एक सौ से अधिक लोगों ने अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराया। डॉ खान ने बी पी, शुगर,एनीमिया,डायरिया आदि की जॉच की साथ ही कृमि नाशक दवाई भी वितरित की। शिविर में बौद्धिक सत्र में सहायक प्राध्यापक आरती नागर ने ऊर्जा संरक्षण विषय पर सारगर्भित वक्तव्य दिया। विशेष शिविर में ग्राम पंचायत छापरिया के सरपंच नारायण बगड़ावत व उनके भाई शिवनारायण, सचिव रमेश व्यास, रोजगार सहायक मीणा तथा ग्राम वासियों का सहयोग प्राप्त हो रहा है।

कार्यालय नगर पालिक निगम उज्जैन, म.प्र.

(कालोनी सेल)

स्वच्छ भारत एक कदम स्वच्छता की ओर

-सार्वजनिक सूचना-

(मध्यप्रदेश नगर पालिका (कालोनी विकास) नियम, 2021 के तहत अनधिकृत कालोनियों में नागरिक अधोसंरचना एवं भवन अनुज्ञाप्रदान करने हेतु अभिन्यासों का प्रारंभिक प्रकाशन)

क्रमांक.: का.से./2023/255 **उज्जैन,दिनांक:24-2-2023**

नगर पालिक निगम उज्जैन द्वारा मध्यप्रदेश नगर पालिका (कालोनी विकास) नियम, 2021 प्रावधानों के तहत दिनांक 31.12.2016 के पूर्व अस्तित्व में आई अनाधिकृत (अवैध कालोनियों में नागरिक अधोसंरचना प्रदान किए जाने की कार्यवाही प्रारंभ करते हुए नियम 23 के उपनियम (4) अनुसार तथा शासकीय भूमि या विकास प्राधिकरण / गृह निर्माण एवं अधोसंरचना मंडल / नगरीय स्थानीय निकायों की भूमि पर विकसित एवं विकास योजना में सडक, पार्को खेल मैदानों, सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्री नदी गालियों के क्षेत्रों, आमोद प्रमोद के क्षेत्रों तथा जल निकायों के रूप में अभिहित क्षेत्र, राज्य तथा राष्ट्रीय राजमागों के वर्जित क्षेत्र में पडने वाली भूमि पर किसी केन्द्रीय या राज्य विधि के अधीन अधिसूचित किसी अन्य ऐसे वर्जित क्षेत्र पर विकसित की गई अनाधिकृत (अवैध) कालोनियों को छोडकर निम्न अनाधिकृत कालोनियों के ले-आउट (अभिन्यास) के प्रारूप तैयार कराए गए हैं अभिन्यास का सार्वजनिक सूचना का प्रकाशन किया जाकर प्रकाशन दिनांक से 15 दिवस में आपत्ति / सुझाव आमंत्रित किए जाते है-

क्रं.	वार्ड क्रं.	अनाधिकृत कालोनी का नाम स्थान	कालोनाईज / भू-स्वामी का नाम पता	अवैध कालोनी की भूमिका विवरण	
				खसरा क्रमांक	अनुमानित कुल रकबा हेक्टर में
1	2	3	4	5	6
1	7	कमल कालोनी "ब"छोटी अकपात मार्ग	सीमाबाई अमरसिंह आदि हजारीलाल भागीरथ आदि अंबाराम पिता भेरालाल मदनसिंह, बहादुरसिंह पिता अंबाराम देसवाली,पंकज गृह निर्माण संस्था कमलसिंह हजारीलाल देसवाली उज्जैन	1071, 1072, 1073. 1074, 1075, 1076, 1079 मिन-1, 1079 मिन-2	2.2917
2	16	दुर्गा कालोनी नगर कोट	राजकुमारी पति सुरेश आदि उज्जैन	1319,1366	1.244
3	17	सरस्वती नगर कालोनी उद्योगपुरी के पास	श्री ज्ञानचंद,फकीरचंद, बसंतीबाई पति मुन्नालाल कंचनवाई राजेन्द्र कुमार आदि उज्जैन	1707,1708/1/2 1708/1 मिन-1,1708/3,1708/4	1.9653
4	40	शिवम नगर राजाभाई की भूमि शंकरपुर	हरीश पिता सिद्धाजी मधुसूदन व राजेश पिता कृष्ण कुमार, श्रीमती कमला बाई पति कृष्ण कुमार आदि उज्जैन	35/2,35/2 मिन-1,35/2 मिन-1/2,35/4,35/4 मीन 2 35/5,35/6,35/7,35/8	1.6685
5	40	लक्ष्मण कालोनी सुधा नगर शंकरपुर	झन्नू बाई पति कमल मोहम्मद हनीफ, प्रकाश पिता जस्ता राधेश्याम पुरणचंद आदि उज्जैन	4/1,4/1 मीन 1,4/2 मीन 2, 4/3 ,4/4, 4/5 मीन 2,4/6, 4/7, 4/8	1.4964
6	40	बद्रीलाल पूनमचंद की भूमि पंवासा	सोमेश्वर, दिनेश, शैलेन्द्र, कोमलबाई आदि बद्रीलाल पुनमचंद उज्जैन	145,146,22/1,	0.3618
7	41	पाण्डयाखेडी मक्सी रोड	श्रीमती अयोध्याबाई पति गोवर्धनल व श्रीमती कृष्णा बाई पति नवनीत लाल उज्जैन	173/6/2,173/6/3,173/6/4,	2.150
8	41	संगम नगर नीमनवासा	गीता बाई कुंवरजी, राजूबाई कुंवरजी आदि उज्जैन	117 का भाग	1.414
9	17	मायापुरी कालोनी बडी हीरामील के पास	रूगनाथ पिता भेरा, गोदावरी पति मांगीलाल, रवि, मोहित आदि उज्जैन	1864, 1867/2,1868/1, 1869 1870 1871, 1872/1, 1874/1	1.521
10	17	कृष्ण विहार कालोनी हीरामील की चाल	शिवनारायण पिता उंकार, रामनारायण पिता उंकार, चतुर्भुज,हिरालाल,विनोद पिता धर्मराज जैन आदि उज्जैन	1823	1.50

उपरोक्त अनाधिकृत (अवैध) कालोनियों के समस्त हितधारक एवं भवन स्वामियों / भूखण्डधारियों को सूचित किया जाता है कि उक्त कालोनियों के ले-आउट (अभिन्यास) के प्रारूप निगम रेकार्ड व विभिन्न विभागों से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार कराए गये हैं, निरीक्षण सक्षम प्राधिकारी कालोनी सेल नगर पालिक निगम उज्जैन के कार्यायल में 15 दिवस की समयावधि में कार्यालयीन कार्य दिवस में अवकाश के दिनों को छोडकर उक्त अभिन्यास के संबंध में कोई आपत्ति हो तो अपने दावे / आपत्ति स-प्रमाण प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित समयावधि में दावे आपत्ति प्राप्त न होने की स्थिति में यह माना जाएगा कि उक्त अनाधिकृत (अवैध) के तैयार अभिन्यास प्रारूप को अंतिम रूप देने एवं वर्णित अनाधिकृत कालोनियों में नागरिक अधोसंरचना प्रदाय किये जाने के संबंध में किसी की कोई आपत्ति नहीं है किसी प्रकार की आपत्ति प्रकट होने या विवाद की स्थिति में अथवा जानकारी प्राप्त होने पर ले-आउट में संशोधन आदि के समस्त अधिकार सक्षम प्राधिकारी, नगर पालिक निगम उज्जैन के पास सुरक्षित रहेंगे।

अधीक्षण यंत्री,
(कालोनी सेल)
नगर पालिक निगम उज्जैन
उज्जैन दिनांक-24/02/2023

निराकरण योग्य शिकायतों का समाधान नहीं हुआ तो होगी कार्रवाई

मंदसौर/दैनिक मालवा हेराल्ड। कलेक्टर दिलीप कुमार यादव की अध्यक्षता में सुशासन भवन स्थित सभागृह में एक विशेष बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों की समीक्षा की। समीक्षा के दौरान कलेक्टर ने निर्देश दिए कि निराकरण योग्य शिकायतों का समाधान नहीं करने पर कार्यवाही की जाएगी। इसके साथ ही अगर शिकायतों को नहीं देखने पर भी कार्यवाही होगी। शिकायतों का जवाब भी सोच समझकर एवं जांच के पश्चात सबमिट करें। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा कि प्रसूति सहायता तुरंत प्रदान की जाए। शिकायतों का निराकरण कर प्रगति लाए इसके लिए अगले मंगलवार को पुनः समीक्षा होगी। बैठक के दौरान सीईओ जिला पंचायत कुमार सत्यम, अपर कलेक्टर आरपी वर्मा सहित सभी जिला अधिकारी मौजूद थे।

राजस्व व लेखा समिति की बैठक में 26 प्रकरणो को मिली मंजूरी

मंदसौर/दैनिक मालवा हेराल्ड। नपाध्यक्ष रमादेवी गुर्जर के निर्देश पर विगत दिनो वित राजस्व एवं लेखा समिति की बैठक आयोजित कि गयी। इस बैठक में नपा के स्वामित्व की दुकानो की किराया अवधि वृद्धि के 30 प्रकरण समिति के सम्मुख रखे गये। बैठक में व्यापक विचार विमर्श के उपरांत 26 प्रकरणो को मंजूरी दी गयी। बैठक में नपा राजस्व समिति के सदस्यगण दीपक गाजवा, ईश्वरसिंह चौहान, दिव्या माहेश्वरी, प्रभारी राजस्व अधिकारी दिनेश बघेरवाल, लिपिक अशोक प्रधान, उमेश जोशी भी उपस्थित थे।

उज्जैन विकास प्राधिकरण उज्जैन

(जाहिर सूचना)

प्राधिकरण की **महानंदा नगर** (बाबू जगजीवन राम नगर) आवासीय योजना के आवंटित भवन/भूखण्ड/**क्रमांक सी-21/5 श्रेणी एलआईजी** को लीजहोल्ड से भू-स्वामी अधिकार में संपरिवर्तन के संबंध में।

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उज्जैन विकास प्राधिकरण की महानंदा नगर (बाबू जगजीवन राम नगर) आवासीय योजना में भवन/भूखण्ड **क्रमांक सी-21/5 श्रेणी एलआईजी** प्राधिकारी रिकार्ड में **श्री कमल कुमार चन्देल पिता अमराजी चंदेल एवं मंजू चंदेल पति कमल कुमार चंदेल निवासी- सी-21/5, महानंदा नगर (बाबू जगजीवन राम नगर) उज्जैन म.प्र.** के नाम पर दर्ज है। प्राधिकरण कार्यालय में आवेदक के द्वारा आवेदन फार्म के साथ शपथ पत्र एवं अन्य वांछित दस्तावेज आदि प्रस्तुत कर उक्त सम्पत्ति को लीजहोल्ड से भू-स्वामी अधिकार में संपरिवर्तन करने हेतु निवेदन किया गया है।

आवंटी द्वारा उक्त सम्पत्ति के प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर प्राधिकारी अभिलेखों में लीज की उक्त सम्पत्ति को लीजहोल्ड से भू-स्वामी अधिकार (फ्रीहोल्ड) किये जाने में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो इस विज्ञप्ति प्रकाशन होने की दिनांक से पन्द्रह दिन (15 दिवस) की अवधि में अपनी लिखित आपत्ति कार्यालय उज्जैन विकास प्राधिकरण, उज्जैन भरतपुरी प्रशासनिक प्रक्षेत्र, उज्जैन में प्रस्तुत करें, अन्यथा मियाद समाप्ति के पश्चात् उक्त सम्पत्ति को औपचारिकतायें पूर्ण होने पर अर्थात समस्त दस्तावेज तथा बकाया राशियाँ जमा होने पर आवेदन तथा दस्तावेज के आधार पर उक्त सम्पत्ति भू-स्वामी अधिकार (फ्रीहोल्ड) कर दी जावेगी जिसमें किसी की कोई आपत्ति / उज्र मान्य नहीं होगी।

सहायक सम्पदा अधिकारी
उज्जैन विकास प्राधिकरण उज्जैन

उज्जैन विकास प्राधिकरण उज्जैन

(जाहिर सूचना)

प्राधिकरण की **महानंदा नगर** आवासीय योजना के आवंटित भवन/भूखण्ड/**क्रमांक बी-7/15 श्रेणी एलआईजी** को लीजहोल्ड से भू-स्वामी अधिकार में संपरिवर्तन के संबंध में।

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उज्जैन विकास प्राधिकरण की महानंदा नगर आवासीय योजना में भवन/भूखण्ड **क्रमांक बी-7/15 श्रेणी एलआईजी** प्राधिकारी रिकार्ड में **प्रमोद भटनागर पिता स्व. श्री चंद्रप्रकाश भटनागर एवं श्रीमती नीतू भटनागर पति प्रमोद भटनागर निवासी बी-7/15 महानंदा नगर उज्जैन म.प्र.** के नाम पर दर्ज है। प्राधिकरण कार्यालय में आवेदक के द्वारा आवेदन फार्म के साथ शपथ पत्र एवं अन्य वांछित दस्तावेज आदि प्रस्तुत कर उक्त सम्पत्ति को लीजहोल्ड से भू-स्वामी अधिकार में संपरिवर्तन करने हेतु निवेदन किया गया है।

आवंटी द्वारा उक्त सम्पत्ति के प्रस्तुत दस्तावेजों के आधार पर प्राधिकारी अभिलेखों में लीज की उक्त सम्पत्ति को लीजहोल्ड से भू-स्वामी अधिकार (फ्रीहोल्ड) किये जाने में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो इस विज्ञप्ति प्रकाशन होने की दिनांक से पन्द्रह दिन (15 दिवस) की अवधि में अपनी लिखित आपत्ति कार्यालय उज्जैन विकास प्राधिकरण, उज्जैन भरतपुरी प्रशासनिक प्रक्षेत्र, उज्जैन में प्रस्तुत करें, अन्यथा मियाद समाप्ति के पश्चात् उक्त सम्पत्ति को औपचारिकतायें पूर्ण होने पर अर्थात समस्त दस्तावेज तथा बकाया राशियाँ जमा होने पर आवेदन तथा दस्तावेज के आधार पर उक्त सम्पत्ति भू-स्वामी अधिकार (फ्रीहोल्ड) कर दी जावेगी जिसमें किसी की कोई आपत्ति / उज्र मान्य नहीं होगी।

सहायक सम्पदा अधिकारी
उज्जैन विकास प्राधिकरण उज्जैन

कार्यालय कलेक्टर (खनिज शाखा) जिला उज्जैन (म.प्र.)

क्रमांक/खनिज / 2022-23 / 335 दिनांक 8 /2/2023

म.प्र. गौण खनिज नियम, 1996 के नियम 18 (1 - क) के अंतर्गत उत्खनिपट्टा / पूर्वेक्षण अनुज्ञप्ति (जो भी लागू हो) प्राप्त करेन के लिए.

द्वितीय सूचना

यह सूचित किया जाता है कि **प्रधानसिंह पिता गोविन्दसिंह निवासी-ग्राम काचरिया तहसील झारडा जिला उज्जैन** द्वारा उत्खनिपट्टा / पूर्वेक्षण अनुज्ञप्ति (जो भी लागू हो) प्राप्त करने हेतु निम्न क्षेत्र पर ऑनलाईन आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। विज्ञप्ति प्रकाशित दिनांक से 15 दिवस की अवधि के भीतर इस क्षेत्र पर यथाथिति उत्खनिपट्टा / पूर्वेक्षण अनुज्ञप्ति आवेदन ऑनलाईन आमंत्रित किये जाते हैं।

आवेदन का संक्षिप्त विवरण

जिला	तहसील	ग्राम	खसरा नं	रकबा	भूमि का प्रकार	खनिज का नाम
उज्जैन	महिदपुर	तारोट	923	1.000. हेक्टयर	शासकीय	मुरम

1. उपरोक्त प्रस्तुत ऑनलाईन आवेदन पत्र में आवेदित क्षेत्र के संबंध में अन्य इच्छुक आवेदकों से विज्ञप्ति प्रकाशित होने की तारीख से 15 दिवस के भीतर (कार्यालयीन समय सायं 5:30 बजे तक) ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं।
2. यदि इस प्रकाशित विज्ञप्ति में उल्लेखित आवेदन प्राप्त करने की अंतिम तिथि तक 03 से कम आवेदन पत्र प्राप्त होते है तो उपरोक्त अवधि में प्राप्त आवेदन पत्र तथा पूर्व प्रकाशित विज्ञप्ति की अवधि के दौरान प्राप्त सभी आवेदन पत्रों को म.प्र. गौण खनिज नियम, 1996 के नियम 21 के तहत् अधिमान्यता तय करने के आशय से उसी दिन प्राप्त किया गया समझा जाएगा।
3. यदि प्रथम एवं द्वितीय प्रकाशित विज्ञप्ति के उपरांत भी निर्धारित समयावधि में अन्य कोई आवेदन पत्र प्राप्त नहीं होता है तो प्राप्त आवेदनों नियमानुसार खनि रियायत स्वीकृति पर विचार किया जा सकेगा।
4. निर्धारित समयावधि के उपरांत प्राप्त आवेदन पत्रों को विचार में नहीं लिया जाएगा।

प्र.खनिज अधिकारी
जिला उज्जैन (म.प्र.)

G23654/22 देर से घर आए लेकिन दुरूस्त आए, धीरे चले सुरक्षित चले ।

फ्रेंड्स क्रिकेट क्लब जामुनिया के द्वारा आज 1 से 5 मार्च तक आयोजित होगा ग्रामीण क्रिकेट टूनार्मेंट

सुसनेर-दैनिक मालवा हेराल्ड। आयोजक एंव मैनेजमेंट फ्रेंडस क्रिकेट क्लब जामुनिया द्वारा आज 1 मार्च बुधवार को सुबह 10 बजे से ग्राम पंचायत कायरा के ग्राम जामुनिया में ग्रामीण क्रिकेट टूनामेंट कप 2023 का आयोजन होगा। यह आयोजन प्रतिदिन सुबह 10 बजे 5 मार्च तक आयोजित होगा। इस आयोजन में प्रति टीम से 751 रुपये आयोजक एंव मैनेजमेंट द्वारा लिये जाएंगे। यह ग्रामीण टूनामेंट है। इसमें केवल ग्रामीण टीम को ही एंट्री दी जायेगी। आपको बता दे कि इस ग्रामीण क्रिकेट टूनामेंट में जीत के रूप में प्रथम पुरस्कार जीतने वाले को 21,111 रुपये विधायक राणा विक्रम सिंह सुसनेर एंव द्वितीय पुरस्कार 11,000 रुपये कायरा पंचायत के सरपंच बलराम चौहान कायरा तथा तृतीय पुरुस्कार 3,100 रुपये ढाबला पंचायत के सरपंच प्रतिनिधि ईशवर यादव ढाबली के द्वारा दिया जायेगा। वंही मेन ऑफ द मेच स्वरूप 1100 रुपये सोनु ठाकुर एंव 6 सिक्स पर 500 रुपये पवन यादव तथा हैट्रि करने पर 500 रुपये बालुसिंह बगड़ावत के द्वारा दीये जाएंगे।

सम्पादकीय

सीखचों में हिंसा

तरनतारन जेल में आपस में भिड़े सिंगर मूसेवाला हत्याकांड के आरोपी, 2 गैंगस्टर की मौत। (फोटो-आज तक)। तरनतारन जिले के गोइंदवाल केंद्रीय कारागार में जिस तरह दो आपराधिक गिरोह आपस में भिड़े और दो लोगों की हत्या कर दी गई, उसे लेकर चिंता स्वाभाविक है। इस घटना से दो दिन पहले ही अमृतसर के अजनाला थाने को घेर कर खालिस्तान समर्थकों ने अपने एक आदमी को छुड़ाने का दबाव बनाया।

यह पहला मौका था, जब किसी थाने को घेर कर इस तरह किसी आरोपी को आम लोगों ने छुड़वा लिया। अब केंद्रीय कारागार में दो ऐसे आरोपियों की हत्या कर दी गई, जिनका गायक मूसेवाला की हत्या में हाथ माना जाता है। बताया जा रहा है कि जेल में दो अपराधी गुटों की आपस में भिड़ंत हो गई और लोहे की सरिया और बर्तनों से नुकीले हथियार बना कर हमला किया गया। मारे गए दोनों लोगों के सिर पर गंभीर चोटें आई हैं।

एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल है। यह समझना मुश्किल है कि जेल के भीतर सरिया आदि तक कैदियों की पहुंच कैसे संभव हो सकी। फिर सवाल यह भी है कि क्या जेल प्रशासन को यह जानकारी नहीं थी कि जिन दो गुटों के आरोपी जेल में बंद हैं, उनमें पुरानी रंजिश है और वे कभी भी आपस में भिड़ सकते हैं।

पंजाब सीमावर्ती राज्य है, इसलिए वहां सुरक्षा को लेकर खासी सावधानी बरती जाती है। फिर केंद्रीय कारागार में, जहां खूंखार माने जाने वाले अपराधी कैद हों, वहां विशेष सतर्कता की अपेक्षा की जाती है। इसलिए गोइंदवाल जेल में हुई हिंसक झड़प से कई सवाल खड़े होते हैं। इस हत्या की जिम्मेदारी कनाडा में पनाह पाए गोल्डी बराड़ ने ली है।

ऐसे में सवाल यह भी है कि क्या हत्या कराने वाले कनाडा में बैठ कर गोइंदवाल कारागार के भीतर साजिशों को अंजाम दे रहे थे। फिर, जेल प्रशासन इतना बेपरवाह कैसे था कि यह जानते-समझते हुए भी कि मूसेवाला हत्याकांड में गिरफ्तार आरोपियों में दो गिरोह के लोग हैं, जिनके बीच पुरानी रंजिश है, फिर भी उन्हें एक साथ बंद कर दिया गया। जेल प्रशासन का कहना है कि इन आरोपियों की सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम किया गया था। फिर भी दोनों गुटों में भिडंत हो गई और दो लोगों की हत्या कर दी गई, तो यह भी समझ से परे है कि आखिर उस घटना पर काबू कैसे नहीं पाया जा सका। क्या सुरक्षा में तैनात लोग हाथ पर हाथ धरे देखते रहे।

पंजाब में जबसे आम आदमी पार्टी की सरकार बनी है, अचानक आपराधिक वृत्ति के गिरोह और अलगाववादी ताकतें सक्रिय हो उठी हैं। जो पार्टी अपराध और नशाखोरी मिटाने के दावे के साथ सत्ता में आई थी, अगर वही इन मोर्चों पर विफल नजर आ रही है, तो उस पर सवाल स्वाभाविक हैं। इस सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता कि आम आदमी पार्टी की पंजाब सरकार वहां कानून-व्यवस्था के मामले में लचर साबित हो रही है।

अब वह यह कह कर अपनी जिम्मेदारी से पल्ला नहीं झाड़ सकती कि उसे कामकाज संभाले अधिक दिन नहीं हुए। किसी भी सरकार की पहली काबिलियत इस बात से तय हो जाती है कि उसने सत्ता की बागडोर संभालने के साथ ही कानून-व्यवस्था के मामले में क्या रणनीति अपनाई। इस मामले में पंजाब सरकार पूरी तरह विफल साबित हुई है। अगर यही सिलसिला बना रहा, तो बाहरी ताकतों को भी अपनी साजिशों को अंजाम देने का मौका मिलेगा।

भयमुक्त, चिंतामुक्त व सहज जीवन प्रदान करता है सहजयोग

सहजयोग -सकारात्मक ऊर्जा के संचार का साधन है

सहजयोग संस्थापिका श्री माताजी निर्मला देवी जी के अनुसार सहजयोग कोई नया मार्ग, धर्म या विधा नहीं बल्कि शास्त्रों में वर्णित जटिल सैद्धांतिक प्रक्रिया का सरल प्रायोगिक स्वरूप है। वेद, पुराण, गीता, उपनिषद आदि में जिस ज्ञान, भक्ति, सांख्य व योग आदि का संस्कृत भाषा में वर्णन है वह सामान्य मनुष्यों के लिए समझ पाना अत्यंत कठिन कार्य है तथा अनुवादकों ने भी इस ज्ञान को अपने अपने दृष्टिकोण से अनुवादित किया है। इससे कई प्रकार के भ्रम उत्पन्न होते हैं परंतु श्री माताजी ने विस्तार से इन विषयों को अपनी अमृतवाणी में वर्णित किया है वह भी अत्यंत सहज भाषा में। जो भी जिज्ञासु व सत्य की खोज करने वाले साधक हैं उन्हें अपने सभी प्रश्नों का हल श्री माताजी की अमृतवाणी में अवश्य ही प्राप्त होता है। सहज योग एक जीवन्त प्रक्रिया है जिसे हम अपने स्पंदनों (वाइब्रेशन) के द्वारा स्वयं अनुभव कर सकते हैं। जब व्यक्ति इन प्रक्रियाओं को समझता है तो पाता है कि सभी धर्मों में वाइब्रेशंस का वर्णन है। मोहम्मद साहब, गुरु नानक देव जी, जीज़स क्राइस्ट सभी ने इन्हीं वाइब्रेशंस, परम चैतन्य तथा परम शक्ति का वर्णन किया है। आज के समय में सभी सकारात्मकता व नकारात्मकता की बात करते हैं इन विषयों पर ढेरों किताबें भी छपी हैं, परंतु कोई भी प्रभावी तरीके से यह नहीं समझा सकता कि पॉजिटिव एनर्जी के संचार से हम किस प्रकार जुड़ सकते है। या अपने आसपास की एनर्जी को कैसे समझा जा सकता है परंतु सहज योग में प्रत्येक उर्जा को चाहे वह नकारात्मक है या सकारात्मक हम अपनी उंगलियों पर, हथेलियों पर विवेक द्वारा सहज ही पहचान सकते हैं। सहज योग भौतिकता में रहते हुए आत्मिक अनुभव का योग है। यह व्यक्ति को अंतःकरण से स्वच्छ कर पवित्र बना देता है। बस एक शुद्ध व पूर्ण समर्पण के साथ अपने दोनों हाथ खोलकर श्री माताजी के समक्ष खड़े होने की देर है और आप तत्क्षण उस परम अनुभूति से साक्षात हो जाते हैं, जिसके लिए कई जन्मों की तपस्या लगती है। यह अनुभव सहज योग में किसी एक व्यक्ति का नहीं वरन् लाखों लोगों का है। श्री माताजी की अनुकंपा से व्यक्ति मन व शरीर दोनों की स्वस्थता को सहज ही में प्राप्त कर लेता है। अतः प्रत्येक उस व्यक्ति को जो आत्मा का परमात्मा से संबंध स्थापित करने का इच्छुक है उसे आदिशक्ति श्री माताजी की सहजयोग रुपी अनमोल भेंट का अनुभव एक बार अवश्य करना चाहिए। जब व्यक्ति आत्मा के ज्ञान को प्राप्त कर लेता है तथा कुंडलिनी शक्ति की जागृति होती है तो वह सहज स्वभाव में स्थापित हो जाता है। सहज व्यक्ति सदैव ही भयमुक्त, चिंतामुक्त व आनंद में मग्न रहता है। श्री माताजी की कृपा से प्रत्येक परिस्थिति में विवेक, बुद्धि, धैर्य से उचित निर्णय कर पाने की क्षमता को प्राप्त कर लेता है। सहजयोग से संबंधित जानकारी निम्न साधनों से प्राप्त कर सकते हैं। यह पूर्णतया निशुल्क है। टोल फ्री नं - 1800 2700 800 बेवसाइट? - sahajayoga.org.in यूट्यूब चैनल -लर्निंग सहजयोगा प्रति शनिवार शाम 06:30 बजे

लग गया होलाष्टक, जानें 8 दिनों तक किस उपाय को करने से दूर होंगे इसके दोष

धर्म

पं. सतीश नागर
श्री अन्नपूर्णा अनुष्ठान केन्द्र
मो. 9753585323

शास्त्रों की बात, जानें धर्म के साथ

हिंदू धर्म में फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी से लेकर पूर्णिमा तक पड़ने वाले जिस होलाष्टक को किसी भी कार्य के लिए अशुभ माना गया है,

वह इस साल कब से कब तक रहेगा और क्या है उससे जुड़े नियम और उपाय, जानने के लिए पढ़ें ये लेख.लग गया होलाष्टक, जानें 8 दिनों तक किस उपाय को करने से दूर होंगे इसके दोष

होलाष्टक के नियम एवं ज्योतिष उपाय

हिंदू धर्म में फाल्गुन मास की पूर्णिमा पर मनाए जाने वाले जिस होली पर्व का लोगों को पूरे साल इंतजार रहता है, उससे ठीक आठ दिन पूर्व लगने वाले होलाष्टक की आज शुरुआत हो रही है. फाल्गुन मास की अष्टमी तिथि से लेकर पूर्णिमा तक के समय में किसी भी शुभ या मांगलिक कार्य को करना अशुभ माना गया है. मान्यता है कि इस दौरान किए जाने वाले किसी भी मांगलिक कार्य में बाधा आने या फिर उसके असफल होने की आशंका बनी रहती है.

आइए जानते हैं कि होली से पहले लगने वाला यह होलाष्टक कब से कब तक रहेगा और क्या है इससे जुड़े नियम और उपाय.

कब से कब तक रहेगा होलाष्टक

पंचांग के अनुसार होलाष्टक 27 फरवरी 2023 से प्रारंभ होकर 08 मार्च 2023 तक रहेगा. हिंदू मान्यता के अनुसार होलाष्टक के इन आठ दिनों में नवग्रह उग्र रूप में होते हैं, जिससे उनके शुभ फल नहीं प्राप्त हो पाते हैं और किसी भी किए जाने वाले कार्य में अमंगल की आशंका बनी रहती है.

होलाष्टक में भूलकर न करें ये काम

पंचांग के अनुसार होलाष्टक के जिन आठ दिनों को अत्यंत ही अशुभ माना गया है, उसमें मुंडन, नामकरण, विवाह, गृहप्रवेश, व्यापार की शुरुआत, आदि मांगलिक कार्य को करना अत्यंत ही अशुभ माना गया है. ऐसे में किसी भी मांगलिक या शुभ कार्य को इन आठ दिनों में करने से बचना चाहिए।

होलाष्टक पर किए जाने वाले उपाय

जिस होलाष्टक को किसी भी मांगलिक कार्य के लिए अशुभ माना गया है, उसमें ईश्वर के लिए की जाने वाली भक्ति एवं मंत्र जप को अत्यंत पुण्यदायी माना गया है. मान्यता है कि होलाष्टक के इन आठ दिनों में भगवान श्री विष्णु के नरसिंह अथवा कृष्णावतार की पूजा करने पर साधक को सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिलती है और पूरे साल उसके जीवन में सुख-समृद्धि बनी रहती है. होलाष्टक पर कलयुग के देवता माने जाने वाले चिरंजीवी हनुमान जी की साधना भी सभी प्रकार के कष्टों को दूर करने वाली मानी गई है. होलाष्टक पर पूजा-पाठ एवं मंत्र जप के अलावा दान का भी बहुत ज्यादा महत्व माना गया है. ऐसे में इन आठ दिनों में जरूरतमंद व्यक्ति को अपने सामर्थ्य के अनुसार अन्न, धन आदि का दान भी करना चाहिए.

होलाष्टक के 8 दिनों में धन समृद्धि के लिए कर लें 8 उपाय

होली से आठ दिन पहले होलाष्टक आते हैं और ये आठ दिनों के होते हैं। पंचांग के अनुसार इस बार होलाष्टक 28 फरवरी से शुरू हो रहे हैं और 7 मार्च को होलिका दहन के साथ खत्म होंगे। होलाष्टक के दिनों में कोई भी मांगलिक कार्य नहीं किए जाते हैं। ज्योतिष शास्त्र में 8 दिनों की इस अवधि का फायदा उठाने के लिए कुछ उपाय बताए गए हैं। इन उपायों से जीवन के सभी कष्टों से मुक्ति मिलती है।

आइए जानते हैं होलाष्टक के इन उपायों के बारे में...

फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि से होलाष्टक शुरू हो जाते हैं और फाल्गुन पूर्णिमा तिथि यानी होलिका दहन तक होलाष्टक खत्म हो जाते हैं। होली से आठ दिन पहले होलाष्टक शुरू हो जाते हैं। इस बार 28 फरवरी से होलाष्टक शुरू हो रहे हैं और 7 मार्च को होलिका दहन के साथ खत्म हो जाएंगे।

होलाष्टक में कोई भी मांगलिक कार्य जैसे

गृह प्रवेश, मुंडन, नामकरण, शादी-विवाह आदि करना वर्जित बताया गया है। होलाष्टक के समय नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव बढ़ जाता है, इसी प्रभाव को खत्म करने के लिए होलिका दहन किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र में होलाष्टक का महत्व बताते हुए कुछ उपाय भी बताए हैं। होलाष्टक में इन उपायों के करने से रोग, दोष, आर्थिक हानि, मानसिक तनाव आदि समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं।

आइए जानते हैं होलाष्टक में किए जाने वाले इन उपायों के बारे में...

इस उपाय से करियर में तरक्की के बनते हैं योग

ज्योतिष शास्त्र में बताया गया है कि होलाष्टक के आठ दिनों में सौभाग्य प्राप्ति के लिए चावल, केसर, घी से हवन करें और नवग्रह की शांति के लिए भगवान शिव का पंचामृत से अभिषेक करें और फिर महामृत्युंजय मंत्र का जप करें। ऐसा करने से सौभाग्य में वृद्धि के साथ-साथ करियर में तरक्की के योग बनते हैं और सेहत भी अच्छी रहती है।

इस उपाय से नकारात्मक दोष होता है दूर

नौकरी और रोजगार संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए होलाष्टक में काले तिल, लोहे, काली उड़द दाल को काले कपड़े में बांधकर 5 मार्च दिन शनिवार को किसी व्यक्ति को दान में दे दें या शनि मंदिर में अर्पित कर दें। वहीं होलाष्टक की हर शाम को एक मिट्टी के दीपक में कपूर जलाएं और पूरे घर में दिखाएं। ऐसा करने से परिवार में मौजूद नकारात्मक दोष दूर होता है और पारिवारिक सदस्यों में आपसी प्रेम बना रहता है।

इस उपाय से लक्ष्मी प्राप्ति के बनते हैं योग

आर्थिक समस्याओं से मुक्ति के लिए होलाष्टक के दिनों में पीली सरसों, हल्दी गांठ, गुड़ व कनेर के फूल से हवन करें। इसके बाद श्रीसूक्त या मंगल ऋण मोचन स्त्रोत का पाठ करें। ऐसा करने से धन संपदा के योग बनते हैं और लक्ष्मी प्राप्ति होती है।

इस उपाय से जीवन के कष्ट होते हैं दूर

होलाष्टक के दिनों में नृसिंह भगवान की पूजा करना बहुत उत्तम माना गया है। होलाष्टक में हर रोज विधि विधान के साथ नृसिंह भगवान की पूजा करने से जीवन की समस्याएं दूर होती है और भगवान कृष्ण को रंग गुलाल चढ़ाने से सुख-सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

इस उपाय से मां लक्ष्मी की घर में होता है प्रवेश

लक्ष्मी प्राप्ति और नकारात्मक शक्तियों से मुक्ति और परिवार में सुख-शांति के लिए होलाष्टक के आठ दिन घर के मेन गेट के दोनों तरफ और मेन चौखट पर हल्दी और सिंदूर से स्वास्तिक बनाएं और सुबह-शाम दीपक जलाएं। ऐसा करने से होलाष्टक का नकारात्मक प्रभाव दूर रहता है और घर में मां लक्ष्मी का प्रवेश होता है।

इस उपाय से सुख-सौभाग्य में होती है वृद्धि

जीवन की परेशानियों से मुक्ति के लिए होलाष्टक में हर रोज 108 बेलपत्र पर सफेद चंदन से '?' या '? नमः शिवाय' लिखकर शिवलिंग पर अर्पित करें। साथ ही शाम के समय लाल कपड़े में नारियल बांधकर पास के किसी मंदिर की सीढ़ियों पर रख दें। ऐसा करने से सुख-सौभाग्य की प्राप्ति होगी और पारिवारिक कष्टों से भी मुक्ति मिलेगी।

संतान प्राप्ति के लिए करें यह उपाय

संतान प्राप्ति के लिए होलाष्टक के दिनों में हर रोज श्रीकृष्ण के बालस्वरूप लड्डू गोपाल की पूजा-अर्चना करें और हर दिन पूजा-अर्चना के साथ थोड़ा गुलाल भी अर्पित करें। साथ ही श्रीकृष्ण के बीज मंत्र '? कृं कृष्णाय नमः' का 108 बार जप करें।

इस उपाय से मिलेगी रोगों से मुक्ति

अगर कोई रोग परेशान कर रहा है तो होलाष्टक के दिनों में रोग ग्रस्त व्यक्ति के उपर से पानीदार जटा वाला नारियल सिर से पैर तक सात या 11 बार उल्दी दिशा में घूमाकर किसी चौराहे पर फेंक दें। साथ ही डॉक्टर की सलाह भी लेते रहें। ऐसा करने से रोग में आराम मिलता है और बुरी शक्तियां भी दूर हो जाती हैं।

मार्च माह का पहला दिन, जानें श्रीगणेश की कृपा से कैसा बीतेगा 12 राशियों के लिए

मेष राशि

आज का भविष्य- व्यापार-व्यवसाय में बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। परीक्षा व साक्षात्कार आदि में सफलता प्राप्त होगी। निवेश शुभ रहेगा। भाग्य का साथ रहेगा। नौकरी में अनुकूलता रहेगी। प्रसन्नता रहेगी। कुबुद्धि हावी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। विवाद से दूर रहें। कुसंगति से बचें। भूमि व भवन संबंधी बाधा दूर होगी।

उपाय-आज बंदर को केला खिलाएंगे तो अच्छा रहेगा।

शुभ अंक-6
शुभ रंग-पीला

वृषभ राशि

आज का भविष्य-यात्रा मनोरंजक रहेगी। किसी मांगलिक कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता प्राप्त करेगा। स्वादिष्ट भोजन का आनंद प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय में मनोनुकूल लाभ होगा। शेयर मार्केट व म्युचुअल फंड में सोच-समझकर हाथ डालें। जल्दबाजी न करें। समय अनुकूल है।

उपाय-आज पर्स में मोर पंख रखेंगे तो अच्छा रहेगा।

शुभ अंक-4
शुभ रंग-सफेद

मिथुन राशि

आज का भविष्य- व्यर्थ भागदौड़ रहेगी। समय का अपव्यय होगा। दूर से दुःखद समाचार प्राप्त हो सकता है। विवाद से क्लेश होगा। काम में मन नहीं लगेगा। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। किसी व्यक्ति विशेष से अनबन हो सकती है। व्यापार-व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में निश्चितता रहेगी।

उपाय-जातक लाल रंग के कपड़े पहनेंगे तो काम बनेगा।

शुभ अंक-9
शुभ रंग-गुलाबी

कर्क राशि

आज का भविष्य-कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शारीरिक कष्ट संभव है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। कोई ऐसा कार्य न करें जिससे कि नीचा देखना पड़े। आर्थिक उन्नति के प्रयास सफल रहेंगे। मित्रों का सहयोग कर पाएंगे। पराक्रम व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धनार्जन होगा।

उपाय-जातक आज मां लक्ष्मी को मूंग दाल का हलवा चढ़ाएं।

शुभ अंक-2
शुभ रंग-लाल

सिंह राशि

आज का भविष्य-शत्रु शांत रहेंगे। वाणी पर नियंत्रण रखें। दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। घर में प्रतिष्ठित अतिथियों का आगमन हो सकता है। व्यय होगा। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। आय बनी रहेगी। दु?टजनों से दूर रहें। चिंता तथा तनाव रहेंगे।

उपाय-आज जातक दूध पौधे की जड़ों में डालने से मन अच्छा रहता है।

शुभ अंक=5
शुभ रंग=कत्थई

कन्या राशि

आज का भविष्य = भाग्योन्नति के प्रयास सफल रहेंगे। रोजगार प्राप्ति सहज ही होगी। व्यावसायिक यात्रा से लाभ होगा। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। निवेशादि शुभ रहेंगे। कारोबार में वृद्धि के योग हैं। किसी बड़ी समस्या का हल प्राप्त होगा। प्रसन्नता रहेगी। दूसरों के काम में हस्तक्षेप न करें।

उपाय=जातक जमीन में चांदी का सिक्का दबाकर रखने से धन लाभ होता है।

शुभ अंक=3
शुभ रंग=हरा

तुला राशि

आज का भविष्य = अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है। पुराना रोग उभर सकता है। वाणी पर नियंत्रण रखें। किसी भी अपरिचित व्यक्ति पर अंधविश्वास न करें। चिंता तथा तनाव बने रहेंगे। अपेक्षित कार्यों में विलंब होगा। व्यापार-व्यवसाय ठीक चलेगा। शत्रु शांत रहेंगे। ऐश्वर्य पर खर्च होगा।

उपाय=जातक आज पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाए और दीप जलाए।

शुभ अंक-3
शुभ रंग-मेहंदी

वृश्चिक राशि

आज का भविष्य-प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। शुभ समाचार मिल सकता है। शारीरिक कष्ट संभव है। अज्ञात भय रहेगा। लेन-देन में सावधानी रखें। चिंता रहेगी। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। मित्रों का सहयोग कर पाएंगे। मान-सम्मान मिलेगा। आय में वृद्धि होगी।

उपाय-जातक आज पक्षियों को दाना खिलाएं।

शुभ अंक-5
शुभ रंग-लाल

धनु राशि

आज का भविष्य- आराम का समय मिलेगा। आशंका-कुशंका रहेगी। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। कारोबारी नए अनुबंध हो सकते हैं, प्रयास करें। आय में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। घर-बाहर पूछ-परख रहेगी। रोजगार में वृद्धि होगी। प्रमाद न करें।

उपाय-जातकनौकरी में प्रमोशन के लिए गाय को चारा खिलाएं।

शुभ अंक-8
शुभ रंग-लाल

मकर राशि

आज का भविष्य -यात्रा मनोनुकूल लाभ देगी। राजभय रहेगा। जल्दबाजी व विवाद करने से बचें। थकान महसूस होगी। किसी के व्यवहार से स्वाभिमान को ठेस पहुंच सकती है। कोर्ट व कचहरी के काम अनुकूल रहेंगे। धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन हो सकता है। पूजा-पाठ में मन लगेगा। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। प्रसन्नता रहेगी।

उपाय=जातक सूर्य को जल चढ़ाने से लाभ होगा।

शुभ अंक=3
शुभ रंग=लाल

कुंभ राशि

आज का भविष्य = वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। शारीरिक शिथिलता रहेगी। काम में मन नहीं लगेगा। किसी अपने का व्यवहार प्रतिकूल रहेगा। पार्टनरों से मतभेद हो सकते हैं। नौकरी में अपेक्षानुरूप कार्य न होने से अधिकारी की नाराजी झेलना पड़ेगी।

उपाय=आज जातक घर में तोता पालें।

शुभ अंक-2
शुभ रंग-नीला

मीन राशि

आज का भविष्य -कष्ट, भय व चिंता का वातावरण बन सकता है। विवेक से कार्य करें। समस्या दूर होगी। कानूनी अड़चन दूर होकर स्थिति मनोनुकूल बनेगी। किसी वरिष्ठ व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। कारोबारी लाभ में वृद्धि होगी। नौकरी में शांति रहेगी। सहकर्मियों का साथ मिलेगा। धनार्जन होगा।

उपाय-आज वायरल से पीड़ित हो सकते हैं।

शुभ अंक-2
शुभ रंग-मैरून

सदैव प्रसन्न रहिये।
जो प्राप्त है, पर्याप्त है।।

(देशकाल) राष्ट्रीय एकता देश के गौरव की सूत्रधार

(अमृत महोत्सव देश के राष्ट्रीय एकता की आधारशिला)

संजीव ठाकुर

भारतवर्ष स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ के अमृत महोत्सव भारत की एकता अखंडता को मजबूत किया है। हमें इसकी ऊर्जा, शक्ति और राष्ट्रीयता की भावना को बलवती बनाए रखकर इसके जज्बे को अनंत काल तक अक्षुण रखना होगा। राष्ट्रीय एकता अथवा राष्ट्रीयता किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र की संश्लिष्ट आत्मा होती है।

भारत की पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी ने बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में कहे थे कि हम जब-जब असंगठित हुए हैं, हमें आर्थिक व राजनीतिक रूप से की कीमत चुकानी पड़ी है, हमारे विचारों में जब जब संकीर्णता आई आपस में झगड़े हुए हमने जब भी नए विचारों से अपना मुख मोड़ा, हमें सदैव हानि ही हुई, हम विदेशी शासन के अधीन हो गए द्य यह एक विराट सत्य है कि राष्ट्रीय एकता सशक्त और समुद्र समृद्ध राष्ट्र की आधारशिला होती है और राष्ट्रीय एकता छिन्न-भिन्न होने से किसी भी राष्ट्र की स्वतंत्रता स्वतंत्र नहीं रह पातीद्य राष्ट्र के विभिन्न घटकों में वैचारिक और आस्था का समानता होने के बावजूद राष्ट्र में एकता प्रेम तथा भाईचारे का कायम रहना अत्यंत समीचीन हैद्य आज जब भारत देश आक्रांता चीन पाकिस्तान और जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों से अपने हाथ दो,चार कर रहा है, देश के अंदर किसान आंदोलन, लखीमपुर खीरी आंदोलन, और जगह-जगह वैचारिक मतभेद देश के विकास एवं शांति के लिए लिए एक बड़ा व्यवधान बने थे, ऐसे में देशवासियों को एकजुट होकर देश की मुख्यधारा का शांति और अमन के लिए साथ देना चाहिए। भारत में कई धर्मों जातियों के लोग रहते हैं, जिनके रहन-सहन एवं आस्था में अंतर तो है ही, साथ ही उनकी भाषाएं भी अलग-अलग हैं। अलग अलग होने के बावजूद पूरे भारतवर्ष के लोग भारतीयता की जिस भावना से ओतप्रोत होकर एक साथ रहते हैं ऐसी एकता को विश्व भर में सर्वोत्तम राष्ट्रीय एकता का उदाहरण कहा जा सकता है। हमारी राष्ट्रीय एकता के फल स्वरुप ही जब भी हमारी एकता को खंडित करने का प्रयास किया गया, भारत का एक-एक नागरिक सजग और सचेत होकर एशिया सामाजिक शक्तियों के विरुद्ध सदैव खड़ा दिखाई दिया है। गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर कहते हैं कि भारत की एकता तथा चेतना समय की कसौटी पर सही सिद्ध हुई है।

आज देश की राष्ट्रीय एकता को सबसे बड़ा खतरा आतंकवाद से है। आतंकवाद में सिर्फ हमारे देश की बल्कि पूरे विश्व की शांति को बड़ा खतरा है। विगत दशकों में आतंकवादी कभी मुंबई, कभी दिल्ली, कभी जम्मू कश्मीर को अपना निशाना बनाकर अशांति फैलाने का प्रयास करते हैं और देश के कई राज्यों में अपार आर्थिक तथा जनहानि पहुंचाई है। इसके अतिरिक्त देश में अलगाववादी तत्वों ने भी देश की एकता को बहुत नुकसान पहुंचाया है, राष्ट्रीय एकता में बाधक अनेक शक्तियों में अल गाव की राजनीति भी एक है, जहां के राजनेता वोट बैंक बनाने के लिए कभी अल्पसंख्यकों में अलगाव के बीज बोते हैं कभी आरक्षण के नाम पर पिछड़े वर्गों के देश की मुख्यधारा से अलग करते हैं तो कभी विशेष जाति प्रांतीय भाषा के हिमायती बन कर देश की राष्ट्रीय एकता को खंडित करने की कोशिश करते हैं। आज जम्मू कश्मीर को विशेष दर्जा फिर से स्थापित करने की मांग हो, खालिस्तानी समर्थकों की मांग हो या वोट बैंक की राजनीति इन सब के पीछे दिखाई देती है। इस देश के हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी परस्पर प्रेम से रहना चाहते हैं लेकिन अलगाववादी राजनेता इनमें विवाद पैदा कर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। इन समस्याओं के समाधान का जिम्मा या उत्तरदायित्व मात्र शासन पर बैठे राजनेताओं अथवा प्रशासनिक अधिकारियों का ही नहीं है, इन सब के लिए आम जनता को भी मिलजुल कर खुलकर प्रयास करना होगा। आज कभी देशवासी मंदिर, मस्जिद को लेकर झगड़ पडते हैं तो कभी हिंदी और अंग्रेजी को लेकर, तो कभी असम, महाराष्ट्र जैसे राज्यों में राज्य के निवासियों को भगाया जाता है,तो कभी एक ही धर्म के लोग जात-पात की बातों पर उलझ पड़ते हैं। देश में फिर बाबरी मस्जिद गिराए जाने गोधरा कांड, मुजफ्फरनगर दंगे जैसी स्थिति या फिर से ना आए इसके लिए सांप्रदायिक विद्वेष, श्रद्धा, ईर्ष्या आदि राष्ट्र विरोधी भावनाओं को अपने मन से दूर रख सद्भावना का वातावरण कायम रखना होगा। पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा है कि भारत ही अकेला ऐसा देश है, जहां मंदिरों, गिरजाघरों मस्जिदों, गुरुद्वारों और मठों में शांतिपूर्ण सह अस्तित्व है। स्वतंत्रता के बाद हमारी एकता तो मजबूत हुई है।आज सांप्रदायिकता, क्षेत्रीय जातीयता, और भाषागत अनेकता ने पूरे देश को आक्रांत करके रखा है। और इस माहौल को हम सबको अपने प्रयासों से दूर कर ऐसी भावनाओं को जनमानस से परे रखना है। यदि विघटनकारी प्रवृत्तियों पर पूरी तरह से नियंत्रण नहीं किया गया तो भारत की एकता और अखंडता को खतरा बना ही रहेगा। जब भी देश में कोई दो घटक आपस में संघर्ष करते हैं तो उसका दुष्परिणाम पूरे देश को भुगतना पड़ता है। मामला चाहे आरक्षण का हो या अयोध्या राम मंदिर का सब की गूंज पूरे देश के जनजीवन को प्रभावित करती है। ऐसे में देश के सभी नागरिकों का कर्तव्य बनता है कि वह राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने हेतु तन मन धन से समर्पित रहे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी कहा है कि जब तक हम एक एकता के सूत्र में बने हैं तब तक मजबूत हैं और जब खंडित हैं, तब तब तब कमजोर हुए हैं। देश की राष्ट्रीय एकता, भाईचारा, अखंडता, की प्रासंगिकता हर राष्ट्र के लिए इतिहास में थी, वर्तमान में है, और भविष्य में रहेगी।

जनसुनवाई में आवेदकों ने कलेक्टर श्री गुप्ता को बताई अपनी समस्याएं

देवास/दैनिक मालवा हेराल्ड। जिला मुख्यालय पर मंगलवार को कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता ने जनसुनवाई की। जन सुनवाई में दिव्यांग जनों की सुविधा के लिए भूतल पर कक्ष की व्यवस्था की गई है। अब उन्हें पहली मंजिल पर जाने की जरूरत नहीं होगी। जनसुनवाई में आवेदकों ने अपने आवेदन कलेक्टर श्री गुप्ता के समक्ष प्रस्तुत किए। आवेदनों पर त्वरित कार्यवाही करते हुए कलेक?टर श्री गुप्ता ने संबंधित विभाग के अधिकारियों को निराकरण के निर्देश दिए। जनसुनवाई में जिला अधिकारी उपस्थित थे।

अनुग्रह सहायता राशि दिलाई जाये

जनसुनवाई में श्री देवी सिंह पिता बने सिंह निवासी बिसाखेडी ने अनुग्रह सहायता राशि दिलाने के संबंध में आवेदन दिया। आवेदन पर सुनवाई करते हुए कलेक्टर श्री गुप्ता ने संबंधित अधिकारी को नियमानुसार निराकरण के निर्देश दिये।

बीमे की दूसरी किश्त का भुगतान कराया जाये

जनसुनवाई में श्रीमती विद्यावती शर्मा निवासी नेमावर ने बीमे की दूसरी किश्त का भुगतान कराने के संबंध में आवेदन दिया। आवेदन पर सुनवाई करते हुए कलेक्टर श्री गुप्ता ने संबंधित अधिकारी को नियमानुसार निराकरण के निर्देश दिये।

शासकीय रास्ते से अतिक्रमण हटाया जाये

जनसुनवाई में श्री रणछोड पिता गगांराम निवासी रणायर ने शासकीय रास्ते से अतिक्रमण हटाने के संबंध में आवेदन दिया। आवेदन पर सुनवाई करते हुए कलेक्टर श्री गुप्ता ने संबंधित अधिकारी को नियमानुसार निराकरण के निर्देश दिये।

आर्थिक सहायता दिलाई जाये

जनसुनवाई में श्रीमती पूजा बाई निवासी आनंदपुरा डुंगरिया ने आर्थिक सहायता दिलाने के संबंध में आवेदन दिया। आवेदन पर सुनवाई करते हुए कलेक्टर श्री गुप्ता ने संबंधित अधिकारी को नियमानुसार निराकरण के निर्देश दिये।

ये आवेदन भी हुए प्राप्त

जनसुनवाई में पात्रता पर्ची बनाने, फसल बीमा की राशि दिलाने, अतिक्रमण हटवाने, इलाज के लिए सहायता दिलवाने, मीटर बदलवाने, प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिलाने, रास्ते पर से अतिक्रमण हटाने, बिजली बिल कम कराने सहित अन्य आवेदन पर संबंधित विभाग के अधिकारियों को जांच कर त्वरित निराकरण के निर्देश दिए।

महिलाओं के लिए सुरक्षित पर्यटन स्थल पर कार्यशाला आज

खरगोन/दैनिक मालवा हेराल्ड। मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड और जिला प्रशासन एवं वसुधा संस्था के सहयोग से आज बुधवार को महेश्वर के नर्मदा रिट्रीट होटल में महिलाओं के लिए सुरक्षित पर्यटन स्थल परियोजना पर एक दिवसीय आवासीय कार्यशाला का आयोजन होगा। जिसमें महिलाओं की सुरक्षा के लिए पर्यटन स्थल परियोजना के तहत सुरक्षा ऑडिट एवं अधोसंरचना अंतराल पर आयोजित कार्यशाला में नगरीय प्रशासन एवं आवास विभाग, पुलिस विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विभाग तथा परियोजना सहयोग संस्थाएं शामिल होगी।

कॉलोनाइजर ने फर्जी तरीके से बेंच दिए प्लॉट रहवासियों ने की कलेक्टर से शिकायत

देवास/दैनिक मालवा हेराल्ड। पालनगर बायपास के समीप कॉलोनाइजर द्वारा लोगों को कॉलोनी में फर्जी तरीके से प्लॉट बेंच दिए और राशि भी पुरी हड़प ली लेकिन लोगों को जमीन अब भी नहीं दी गई। उक्त आरप पीड़ित लोगों ने मंगलवार को जनसुनवाई में कलेक्टर ऋषव गुप्ता के सामने लगाए। मामले में कलेक्टर ने पीड़ित लोगों को पुलिस के पास पहुंचाया और मामले में प्रकरण दर्ज करवाने की बात कही गई। एएसपी ने संबंधित थाना क्षेत्र को मामले में एफआईआर करने के निर्देश दिए है। विरेन्द्र विश्वकर्मा निवासी विकास नगर ने बताया कि हम लोग सांई विहार कालोनी के पीड़ित लोग है। हमने पालनगर बायपास सॉई विहार कॉलोनी में प्लॉट लिया है। कुछ लोगों के प्लॉटों की रजिस्ट्री हो गई है। बाकी सब के अनुबंध है। करीब 130 प्लॉट में से 100 प्लॉट बेंचे गए है। कॉलोनाइजर द्वारा प्लाट की पुरी राशि प्राप्त कर ली है। अब कॉलोनाइजर की मंशा बदल गई है। वह हम लोगों के साथ धोखाधड़ी कर रहा है। न प्लॉट दे रहा है न पैसा दे रहा है। पीड़ित लोग अब इधर उधर भटक रहे है कोई न्याय नहीं मिल रहा है। एक ही प्लॉट को अलग-अलग लोगों को बेचने की बात भी सामने आई है। सभी लोगों द्वारा वर्ष 2016 के बाद से सभी ने प्लॉट खरीदे थे।

ब्रिज पर पोस्टर लगाने के मामले में कांग्रेसी नेता पर प्रकरण दर्ज

देवास/दैनिक मालवा हेराल्ड। रामनगर से बावडिया तक बने करीब 2किलोमीटर फ्लाईओवर को लेकर कांग्रेसी नेता प्रदीप चौधरी व उनके समर्थकों द्वारा आंदोलन किया गया था। आंदोलन के दौरान कांग्रेसियों ने विकास नगर से रामनगर तक रैली भी निकाली गई थी। ब्रिज पर जबरन ब्रिज का पोस्टर लगाकर उस पर लाल कलर से जबरन ब्रिज लिखा गया था। इतना ही नहीं मिठाई भी बांटी गई थी। उस दौरान कांग्रेस द्वारा भाजपा सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा था कि उक्त ब्रिज को भोपाल चौराहे से रामनगर तक बनाया जाना था, लेकिन भाजपा ने अपनी हटधर्मिता से उक्त ब्रिज की जगह परिवर्तन कर उसे रामनगर से बावडिया तक बनवा दिया। इधर, मामले में थाना सिविल लाइन पुलिस ने शासकीय पुल को कुरूपित करने के चलते फरियादी महेश कुमार पिता रामचंद्र शर्मा (59) निवासी उज्जैन हाल मुकाम उपयंत्री, लोक निर्माण विभाग सेतु उपसंभाग फ्रिगंज पुल के नीचे उज्जैन की रिपोर्ट पर कांग्रेस नेता प्रदीप चौधरी व साथीगणों पर धारा-3 मप्र स.वि.नि.अधिनियम 1994 के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है। सिविल लाइन थाना पुलिस ने बताया कि फिलहाल प्रदीप चौधरी को मामले में आरोपी बनाया गया है। सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

मानव संस्कार सेवा समिति के युवा क्षेत्र में पूरी कर रहे है रक्त की कमी निस्वार्थ भाव से दे रहे हैं सेवा

खाचरोद/दैनिक मालवा हैराल्ड/मुरलीदास बैरागी। उज्जैन के भाटपचलाना -संस्था मानव संस्कार सेवा समिति जो की रक्तदान के लिए कार्य कर रही है, इस समिति के युवा निरंतर अलग-अलग क्षेत्रों में जाकर रक्तदान कर रहे हैं, रक्त एक ऐसी चीज है जिसे कृतिम रूप से तैयार नहीं किया जा सकता रक्त की कमी से कई लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता है और कई बार रक्त की पूर्ति नहीं होने से जान तक चली जाती ऐसे समय में संस्था मानव संस्कार सेवा समिति निशुल्क मानव जीवन बचाने में सहयोग कर रही है एवं बड़नगर रतलाम उज्जैन इंदौर जैसे क्षेत्र में संस्था के माध्यम से निशुल्क रक्त की व्यवस्था करवा रही है मंगलवार को बड़नगर ऑपरेशन में

अजडावदा निवासी महिला को लगी दुर्लभ रक्त बी पॉजिटिव की आवश्यकता लगी जिसमे परीजन को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा जिसकी अजड़ावदा निवासी जनपद प्रतिनिधि प्रहलादसिंह देवड़ा के द्वारा संस्था मानव संस्कार सेवा समिति के अध्यक्ष नैतिक (सोनू)योगी से संपर्क किया गया जिनके माध्यम से संस्था के सक्रिय सदस्य बरडिया निवासी पवन योगी अपना व्यवसाय योगी कृषि सेवा केंद्र बंद करके बड़नगर पहुंचे एवं रक्तदान किया जनपद प्रतिनिधि प्रहलादसिंह जी देवड़ा द्वारा बताया गया कि विगत 2 वर्षों से संस्था मानव संस्कार सेवा समिति हमारे क्षेत्र में बहुत अच्छा सहयोग प्रदान कर रही है कई समय से मैं खुद इस संस्था से जुड़ा हूं एवं मैंने कई बार संस्था के माध्यम से रक्तदान किया और रक्तदान करवाया है, और सभी युवा पीढ़ी से भी अनुरोध करता हूं कि ज्यादा से ज्यादा रक्तदान करें एवं लोगों का सहयोग करें।

भारतीय ग्रामीण पत्रकार संघ ने किया ईमानदार महिला नेत्री श्रीमती संध्या कुशवाहा का सम्मान

सतना/दैनिक मालवा हेराल्ड। पत्रकारों के अग्रणी संगठन भारतीय ग्रामीण पत्रकार संघ द्वारा जिले के ईमानदार महिला नेत्री श्रीमती संध्या कुशवाहा जिला पंचायत सदस्य वार्ड नंबर 6 का सम्मान किया । हमारे संघ के संस्थापक अनिल कुमार गुप्ता नोएडा राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवप्रकाश तिवारी लखनऊ एवं विशाल कौशल दिल्ली तथा शैलेंद्र पयासी संगठन के प्रवक्ता के मार्गदर्शन पर संघ के राष्ट्रीय संगठन सचिव यदुवंशी ननकू यादव ने बताया कि संगठन का उद्देश्य कर्तव्यनिष्ठ एवं ईमानदार छवि की महिला नेत्री को सम्मान कर उनके कार्यों को प्रोत्साहित करना है संगठन ने सम्मान के लिए ऐसे महिला नेताओ को चुना है जिनसे जनता प्रसन्न रहती है यह महिला नेत्री श्रीमती संध्या कुशवाहा ईमानदार

समाजसेवी एवं सच्चे समाजसेवीका का धर्म निभाती हैं। सतना जिले के नागौद विधान सभा क्षेत्र से जिला पंचायत सदस्य श्रीमती संध्या कुशवाहा निरंतर समाज के बीच में सेवा करती रहती है ।ऐसे समाज सेविका नेत्री को हमारा संगठन प्रोत्साहित करता है।एवं सम्मान करता है।भारतीय ग्रामीण पत्रकार संघ के यदुवंशी ननकू यादव द्वारा संगठन के निर्देशों का पालन करते हुए उन्हें सम्मान पत्र से सम्मानित किया जाता है हमारा भारतीय ग्रामीण पत्रकार संघ उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

अमझेरा मे चल रहे क्रिकेट टूर्नामेंट मे बड़ी संख्या मे पहुंच रहे क्रिकेटप्रेमी

अमझेरा / आशीष पंचोली /दैनिक मालवा हेलार्ड। पुलिस थाने के पिछे मैदान मे चल रहे ओपन टेनिस बाल क्रिकेट टूर्नामेंट मे प्रतिदिन बड़ी संख्या मे खेल प्रेमी पहुंचकर मैच का आनंद ले रहे है। स्व प्रेम सिंह दत्तिगांव की स्मृति मे टूर्नामेंट का आयोजन हो रहा है। 26 फ़रवरी से प्रारम्भ हुई प्रतियोगिता मे प्रतिदिन तिन मैच हो रहे है। सेमीफाइनल ओर फाइनल मैच 2 मार्च को होंगे। इंदौर इलेवन, राज राजेश्वर इलेवन कुंदनपुर , अपना क्लब नागदा टिमे सेमीफाइनल मे पहुंच गई है।

पप्पू की घातक गेंदबाजी से जिता नागदा- मंगलवार को हुए मैच मे गेंदबाजो ने बेहतर प्रदर्शन किया। पहला मैच महू और जहाँगीर पुरा के बिच हुआ जिसमे जहाँगीर पुरा विजय हुआ। दूसरा लिग मैच अपना क्लब नागदा और पीथमपुर के बिच हुआ। जिसमे नागदा ने मैच जिता। क्वार्टर फाइनल मुकाबला जहाँगीर पुरा और नागदा के मध्य खेला गया जिसमे जहाँगीर पुरा ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 8 ओवर मे 50 रन नागदा। लक्ष्य का पीछा करने उतरी नागदा की टिम ने मात्र 6 ओवर मे हि जीत हासिल की। नागदा के बालर पप्पू ने 2 ओवर के स्पेल मे 5 विकेट लिए जिसे मेन ऑफ द मैच ट्राफी प्रदान की गई। मैच की कमेंट्री रिंटू सोनी, नारायण दीक्षित द्वारा एवं स्कोरिंग उदय सोनी द्वारा की गई।

नशे के लिए केमिकल उपलब्ध करवाने वाला ईनामी आरोपी अजमेर से पकड़ाया

मंदसौर/दैनिक मालवा हेराल्ड। नाहरगढ़ थाना पुलिस ने तस्करी के मामले में फरार पांच हजार के इनामी बदमाश को राजस्थान के अजमेर से गिरफ्तार किया है। एसडीओपी नरेंद्र सोलंकी ने बताया कि 7 जनवरी 23 को नाहरगढ़ पुलिस ने जग्गाखेड़ी डिगांव रोड़ पर वाहन चेकिंग के दौरान एक कार से 40 किलो 400 ग्राम एसिटिक एन हाइड्राइड केमिकल पदार्थ बरामद किया।

पुलिस के मुताबिक बरामद किया गया केमिकल पदार्थ ब्राउन शुगर जैसा मादक पदार्थ बनाने के उपयोग में लिया जाता है। मामले में पुलिस ने मौके से रफीक मंसूरी नाम के शख्स को गिरफ्तार किया था। पुलिस की पूछताछ में आरोपी ने बताया था कि वह अजमेर जिले के रुपाली कला गांव के ढंगल सिंह से एसिटिक एन हाइड्रेड केमिकल लेकर आया था। इसके बाद से ही पुलिस को

केमिकल उपलब्ध कराने वाले ढंगल सिंह उर्फरमेश सिंह पिता देवी सिंह राजपूत उम्र 34 वर्ष निवासी ग्राम हरिपुरा हाल मुकाम रुपाली कला थाना मसूदा जिला अजमेर राजस्थान की तलाश थी। पुलिस ने आरोपी पर 5 हजार का इनाम भी घोषित किया था। मामले में पुलिस टीम में अजमेर राजस्थान रुपाली कला गांव से आरोपी को गिरफ्तार किया है।

झाबुआ गौरव दिवस 28 फरवरी को आयोजित

गौरव दिवस पर स्वच्छता, सफाई मित्रो का सम्मान एवं स्वास्थ्य परीक्षण किया गया

झाबुआ/माणक लाल जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। 2023 प्रातः 08:00 बजे दिलीप क्लब, जेल चौराहा झाबुआ मे स्वच्छता अभियान चलाया गया। यहां पर जिला प्रशासन झाबुआ एवं समस्त नागरिकगण द्वारा स्वच्छता अभियान के तहत दिलीप क्लब झाबुआ में साफ-सफाई की गई। इस आयोजन में कलेक्टर श्रीमती रजनी सिंह, पुलिस अधीक्षक अगम जैन, सीईओ जिला पंचायत अमन वैष्णव, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पी.एल. कुर्वे, एडीएम एसएस मुजाल्दा, एसडीओपी सुश्री बबीता बामनिया, भाजपा जिला अध्यक्ष भानु भूरिया, महामंत्री सोमसिंह सोलंकी, पार्षद पण्डित महेन्द्र तिवारी, पद्मश्री से सम्मानित होने वाले रमेश जी परमार, श्रीमती शान्ति बाई परमार, पूर्व विधायक शान्तिलाल बिलवाल, शारदा समुह के सस्थांपक ओम शर्मा, श्रीमती किरण शर्मा, एसडीओ फोरेस्ट प्रदीप कछावा, सीएमएचओ श्री डॉ जेपीएस ठाकुर, सीईओ सर्जन बीएस बद्येल, अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत दिनेश वर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि शैलेश सिंगार, कर्मचारी संघ के अध्यक्ष अशोक चौहान, राष्ट्रीय छात्र सेना (एनसीसी), एसडीओ डी के शुक्ला एवं बडी संख्या में अधिकारी, कर्मचारी, जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक, प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया के प्रतिनिधियों के द्वारा दिलीप क्लब में साफ-सफाई की एवं स्वच्छता का सन्देश दिया। स्वच्छता मित्रों का पुष्पहार और मिठाई देकर सम्मान किया गया। यहां पर कलेक्टर श्रीमती सिंह एवं सभी अधिकारी, कर्मचारी एवं नागरिकों द्वारा पौधारोपण भी किया गया। इसके पश्चात् सभी के द्वारा स्वच्छता रैली निकाल कर स्वच्छता का सन्देश दिया। जिला चिकित्सालय झाबुआ में स्वच्छता कर्मचारियों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। रैली के रूप में बस स्टेशन होते हुये महात्मा गॉधी के स्टेचू पर सभी के द्वारा माल्यार्पण किया गया।

जेल में मौत- रैप केस में जेल में बंद कैदी की संदिग्ध मौत जेल प्रशासन ने शुरू की मामले की जांच

परिजनों ने लगाए मारपीट के आरोप, जेल प्रशासन ने कहा घटना की होगी जस्ट्रीयल जांच

धार/आशीष पंचोली/दैनिक मालवा हेराल्ड। धार जिला जेल में एक कैदी की मौत का मामला सामने आया है। संदिग्ध हालत में कैदी को सोमवार शाम को जिला अस?पताल रेफर किया गया था। जहां पर डॉक?टरों ने कैदी को म्रत घोषित कर दिया था। इसके बाद परिजनों को सूचना दी गई। आज जिला अस्पताल में डॉक्टरों की पैनल द्वारा कैदी म्रतक का पोस्टमार्टम हुआ। इस दौरान परिजनों ने म्रतक के साथ मारपीट का आरोप लगाया है। मारपीट के कारण मौत की बात परिजन कह रहे है। वहीं घटना के बाद जेल प्रशासन ने मजिस्ट्रीयल जांच की बात कही है। इसके लिए अधिकारियों और वरिष्ठ स्तर पर पत्राचार भी किया गया है। वहीं बताया जा रहा है कि इस घटना के बाद जेल में मौजूद कैदियों ने भूख हड़ताल की है। साथ ही सुबह से ही जेल के भीतर कैदियों द्वारा हंगामा और नारेबाजी की जा रही है।जानकारी के अनुसार म्रतक भेरू पिता बगदीराम निवासी सरदारपुर की मौत सोमवार शाम हो गई। जेल की बाथरूम में संदिग्ध हालत में म्रतक भेरू बेहोशी की हालत में मिला था। इसके बाद भेरू को जिला अस?पताल रेफर किया गया था। जहां डॉक्टरों ने म्रतक भेरू को म्रत घोषित कर दिया था। इसके बाद मंगलवार सुबह करीब 11 बजे परिजन धार पहुंचे और उन्होंने जेल प्रशासन पर मारपीट का आरोप लगाते हुए जांच की मांग की। परिजनों का कहना है कि भेरू के साथ मारपीट हुई है। जिससे उसकी मौत हुई।

यह है मामला

सरदारपुर का रहने वाला भेरू रैप केस में सजा काट रहा था। 11 फरवरी को ही भेरू को सेंट्रल जेल से धार जेल रेफर किया गया था। धार जेल में भेरू को आईटीआई ट्रेनिंग के लिए भेजा गया था। इस बीच सोमवार को संदि?ध हालत में उसकी मौत हो गई। भेरू को रैप केस में 11 वर्ष की सजा हुई थी।

म्रतक भेरू मारू

घटना की होगी मजिस्ट्रीयल जांच - इस घटना के बाद जेल प्रशासन की तरफ से जेल अधीक्षक आरआर दांगी ने बताया कि भेरू कल शाम को जेल बंद होने के बाद बाथरूम में संदिग्ध हालत में मिला था। इसके बाद से उपचार के लिए बेहोशी की हालत में जिला अस्पताल रेफर कर दिया था, जहां डॉक्टरों ने उसे म्रत घोषित कर दिया। आईटीआई ट्रेनिंग के लिए भेरू को 11 फरवरी को धार जेल भेजा गया था। हमनें घटना की जाँच के लिए वरिष?ठ स?तर पर जानकारी दे दी है। इसमें 10 से 11 लोगों द्वारा मारपीट करने की बात प्राथमिक तौर पर सामने आई है।

पीएम रूम के बाहर परिजनों का हंगामा - घटना के बाद म्रतक भेरू का पोस्टमार्टम किया जा रहा है। लेकिन पीएम के बाद परिजन शव लेने को तैयार नहीं है। परिजनों द्वारा पीएम रूम के बाहर ही हंगामा और नारेबाजी की जा रही है। लगातार नारेबाजी का दौर चल रहा है। हालांकि परिजनों को समझाइश देने का दौर चल रहा है।

विधि महाविद्यालय में ड्राफ्टिंग फिल्डिंग एंड कन्वेसिंग विषय पर हुआ व्याख्यान

खरगोन/दैनिक मालवा हेराल्ड। शासकीय विधी महाविद्यालय खरगोन में प्राचार्य डॉ आरएस देवड़ा के मार्गदर्शन में मंगलवार को ड्राफ्टिंग फिल्डिंग एंड कन्वेसिंग विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। विशेष वक्ता वरिष्ठ सेवानिवृत्त प्राध्यापक डॉ. अनिल रत्नपारखी ने अपने व्याख्यान में कहा कि अपने अधिकारों को सही ढंग से मांगना ही विधि व्यवसायियों को का प्रमुख कार्य है। God is No where - God is Now here का उदाहरण देते हुए कहा की विधि व्यवसायियों का महत्वपूर्ण उद्देश्य अच्छे अधिवक्ता बनना होना चाहिए और अच्छे अधिवक्ता बनने के लिए आवश्यक है कि वादपत्र बनाते समय अधिवक्ता के लिए सभी आवश्यक मांगे (रिलीफ) वादपत्र में होना बहुत आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन प्रो. तृप्ति सोनी ने एवं आभार विधि विभाग के विभागाध्यक्ष

भाजपा नेता विजय सेठी ने बताया कि घोड़ा रोज़ नीलगाय के आतंक से न केवल किसान बल्कि आम जनमानस को आए दिन जान माल का खतरा होता है

पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष श्री विजय सेठी ने मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान को पत्र लिखकर त्वरित समाधान की मांग की

खाचरोद/दैनिक मालवा हैराल्ड/मुरलीदास बैरागी। उज्जैन के खाचरोद घोड़ा रोज नीलगाय से आए दिन होने वाली समस्या से आमजन को निजात दिलाने के लिए भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता तथा पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष श्री विजय सेठी ने मुख्यमंत्री शिवराजसिंह जी चौहान को पत्र लिखकर त्वरित समाधान की मांग की है भाजपा नेता विजय सेठी ने बताया कि घोड़ा रोज़ नीलगाय के आतंक से न केवल किसान बल्कि आम जनमानस को आए दिन जान माल का खतरा होता है तथा आए दिन दुर्घटनाएं भी हो रही है घोड़ारोज समूह के समूह में किसानों की खड़ी फसलों को रौंदकर नुकसान पहुंचाते हुए भगाने पर किसानों से सामना करने पर आमादा होकर उनके जीवन को क्षति पहुंचाने पर आमादा होते हैं खाचरोद क्षेत्र ही नहीं अपितु

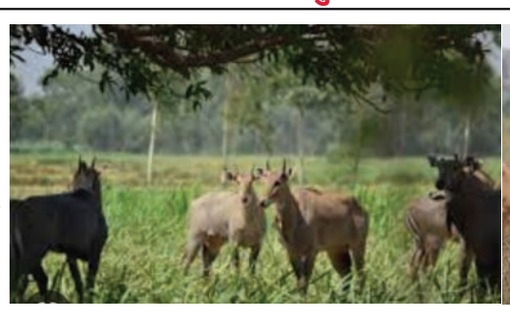

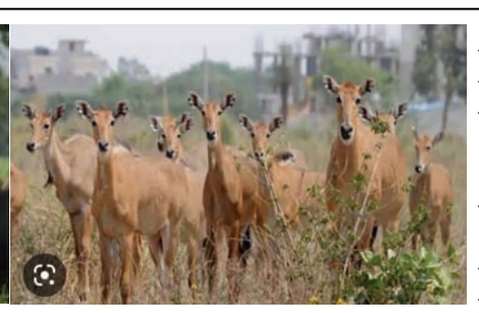

संपूर्ण मध्यप्रदेश में इस समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया है प्रजनन क्षमता अधिक होने से हर साल इनकी संख्या में भारी वृद्धि होती जा रही है, किसानों की फसलों के साथ-साथ दो पहिया चार पहिया वाहन से आवागमन करने वाले नागरिक के जीवन को भी दुर्घटनाग्रस्त अकाल मृत्यु का शिकार होना पड़ रहा है, विगत दिनों खाचरोद नागदा पुलिस विभाग में पदस्थ कालूसिंह देवल तथा गणावा को दुर्घटनाग्रस्त कर दिया जिससे कालूसिंह को गंभीर एवं गनावा को भी छोटे आई बमुश्किल जान बची इसी प्रकार खेड़ावदा के एक नागरिक को भी दुर्घटनाग्रस्त कर दिया था रतलाम हॉस्पिटल में गंभीर अवस्था में भर्ती असलावदा का व्यक्ति की मृत्यु हो गई ऐसी एक नहीं अनेक घटनाएं क्षेत्र में व प्रदेश में घटित हो चुकी है सेठी ने यह भी बताया कि विगत वर्षों तत्कालिक प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री राकेश सिंह द्वारा उज्जैन में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन में समस्या एवं सुझाव मांगे जाने पर इस गंभीर ज्वलंत समस्या के समाधान हेतु ध्यान आकर्षित करते हुए प्रजनन क्षमता पर रोक लगाने एवं अन्य प्रभावी कदम उठाने का सुझाव दिया था भविष्य में इस प्रकार की समस्या के विस्फोटक होने की चिंता व्यक्त करते हुए तत्काल समाधान की मांग की।

निरंतर मजबूत हुई मध्यप्रदेश की आर्थिक स्थिति - मुख्यमंत्री चौहान

आर्थिक सर्वेक्षण 2022-23 के आँकड़े बताते हैं बेहतर वित्तीय प्रबंधन की सफलता

भोपाल /दैनिक मालवा हेराल्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मध्यप्रदेश वित्तीय अनुशासन, सर्व समावेशी विकास और कर- संग्रहण में बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। प्रदेश का वित्तीय प्रबंधन अच्छा है। प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि हुई है। मुख्यमंत्री श्री चौहान आज मध्यप्रदेश के आर्थिक सर्वेक्षण 2022-23 पर टी.वी. चैनल्स के प्रतिनिधियों से चर्चा कर रहे थे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आर्थिक और वित्तीय दृष्टि से मध्यप्रदेश में हर क्षेत्र में प्रगति है। राजस्व संग्रहण भी बढ़ा है। पूँजीगत व्यय में भी वृद्धि हुई है। प्रदेश की औद्योगिक विकास दर भी बढ़ी है। प्रदेश की आर्थिक वृद्धि दर अग्रिम अनुमान के अनुसार वर्ष 2022-23 में 16.43 प्रतिशत है। इसके पहले 2021-22 में कोविड की परिस्थितियों के बावजूद यह वृद्धि दर 18.02 प्रतिशत थी। वर्ष 2001-02 में यह मात्र 4.43 प्रतिशत थी। राज्य का सकल घरेलू उत्पाद 13 लाख 22 हजार 821 करोड़ रूपए होने का अनुमान है। यह वर्ष 2001-02 में 71 हजार 594 करोड़ रूपए था। इस प्रकार सकल घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में तब और अब में 18 गुना से अधिक की वृद्धि हुई है।

प्रति व्यक्ति आय में उल्लेखनीय वृद्धि

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि वर्ष 2022-23 में मध्यप्रदेश में प्रति व्यक्ति आय एक लाख 40 हजार 583 रूपए होने का तथ्य सामने आया है। वर्ष 2011-12 में प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय बढ़ कर 38 हजार 497 रूपये हुई थी। इसके पहले वर्ष 2001-02 में मध्यप्रदेश में प्रति व्यक्ति आय सिर्फ 11 हजार 718 रूपए थी। ऋण और जीएसडीपी अनुपात की चर्चा करें, तो इस क्षेत्र में भी मध्यप्रदेश का प्रदर्शन अच्छा है। ताजा आर्थिक सर्वेक्षण बताता है कि वर्ष 2005 में जो ऋण जीएसडीपी अनुपात 39.5 प्रतिशत था वह वर्ष 2020-21 में 22.6 प्रतिशत रहा। राज्य का पूँजीगत व्यय 37 हजार 89 से बढ़ कर अब 45 हजार 685 करोड़ रूपये हो गया है। यह वृद्धि 23.18 प्रतिशत है और राज्य के इतिहास में सर्वाधिक पूँजीगत व्यय है। कोविड की परिस्थितियों में भी राज्य के राजस्व को बढ़ाने का प्रयास करते हुए आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण के विजन के साथ कार्य किया गया। गत तीन वर्ष में यह प्रतिवर्ष 7.94 प्रतिशत के कम्पाउंडेड एनुअल ग्रोथ रेट (ष्ठत्रक्र) से बढ़ा है। राजकोषीय समेकन के क्षेत्र में मध्यप्रदेश में निरंतर राजस्व बढ़ाने का कार्य हुआ है। प्रायोरिटी सेक्टर लैंडिंग के विस्तार का कार्य भी हुआ है।

कृषि विकास दर में वृद्धि और किसानों के लिए सुविधाएँ

ों को ऋण में 13.41 प्रतिशत और एमएसएमई क्षेत्र में 30.22 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। वर्ष 2001-02 में कृषि विकास दर सिर्फ तीन प्रतिशत थी, जो अब 19 प्रतिशत हो गई है। राज्य ने वर्ष 2013-14 में 174.8 लाख टन की तुलना में वर्ष 2022-23 के अग्रिम अनुमान में 352.7 लाख टन गेहूँ उत्पादन की सफलता और गेहूँ के निर्यात में मध्यप्रदेश की 46 प्रतिशत भागीदारी की उपलब्धि भी अर्जित की है। धान की पैदावार 53.2 लाख से बढ़ कर 131.8 लाख टन हो गई है।

उद्योग और सिंचाई क्षेत्र में भी बेहतर प्रदर्शन, लघु व्यवसायियों के कल्याण में सबसे आगे प्रदेश

औद्योगिक विकास दर, जो वर्ष 2001-02 में महज 0.61 प्रतिशत थी, अब बढ़ कर 24 प्रतिशत है। स्ट्रीट वेण्डर्स के कल्याण का कार्य भी प्रदेश में बखूबी किया गया है। मध्यप्रदेश सवा 5 लाख शहरी इलाकों के लघु व्यवसायियों (स्ट्रीट वेण्डर्स) को 521 करोड़ से ज्यादा राशि का ऋण देकर देश में सबसे आगे है। सिंचाई क्षमता 585 प्रतिशत बढ़ी है। वर्ष 2003 में सिंचाई क्षमता 7 लाख 50 हजार हेक्टेयर थी, जो अब 45 लाख हेक्टेयर से अधिक है।

मध्यप्रदेश को मिला एमएसईएफसी एक्सीलेंस अवार्ड- मुख्यमंत्री श्री चौहान

मुख्यमंत्री ने श्री संत हिरदाराम नगर के श्री आसुदो लछवानी के कार्य को सराहा››कान्हा राष्ट्रीय उद्यान की सीता जमरा के नवाचार से युवा हो रहे हैं लाभान्वित

भोपाल /दैनिक मालवा हेराल्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रदेश लगातार उपलब्धियाँ अर्जित कर रहा है। यह गौरव और आनंद की अनुभूति प्रदान करने वाली बात है। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में शीर्ष स्थान प्राप्त करने के बाद अब प्रदेश को एक अन्य उपलब्धि हासिल हुई है।

मध्यप्रदेश के एमएसएमई विभाग को केन्द्र सरकार से एमएसएमई के विलंबित भुगतानों के निराकरण के लिये एमएसईएफसी एक्सीलेंस अवार्ड-2022 प्रदान किया गया है। यह अवार्ड सूक्ष्म और लघु उद्यम फेसिलिटेशन कॉउन्सिल को स्ट्रांग रिकवरी प्रोसिजर एवं प्रकरणों के त्वरित निराकरण के लिए दिया गया है। एमएसएमई इकाइयों को 30 करोड़ रूपये से अधिक का विलंबित भुगतान करवाने के एवज में मध्यप्रदेश को यह पुरस्कार मिला है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने श्यामला हिल्स स्थित उद्यान में पौध-रोपण के बाद मीडिया प्रतिनिधियों से यह बात कही।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि बीएचईएल से रिटायर 73 वर्षीय श्री आसुदो लछवानी जरूरतमंद बच्चों और युवाओं को उनकी शिक्षा पूर्ण करने तथा कॅरियर निर्माण में सहायता उपलब्ध कराने और मार्गदर्शन देने का सराहनीय कार्य कर रहे हैं। भोपाल के संत हिरदाराम नगर के निवासी श्री लछवानी की जीवन-शैली सादगी से भरी है। उन्होंने अनेक युवाओं को कॅरियर निर्माण के लिए मार्गदर्शन दिया है।

उनके मार्गदर्शन से अनेक डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड अकाउंटेंट और कंपनी सेक्रेटरी के रूप में आज प्रतिष्ठित संस्थाओं में सेवाएँ दे रहे हैं। श्री लछवानी ने गत 40 वर्ष से अभावग्रस्त बच्चों के शिक्षण के लिए शिक्षण शुल्क और शिक्षण सामग्री जुटाने का कार्य भी किया है। उनके द्वारा किये गये इस नेक कार्य से 7 वर्षों में अब तक 15 युवा सीए, सीएस, डॉक्टर और इंजीनियर बन चुके हैं। वे वर्तमान में 65 बच्चों को आर्थिक सहायता भी प्रदान कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के समानपुर बफर जोन में पदस्थ वन परिक्षेत्र अधिकारी सीता जमरा ने जनजातीय गाँव में युवाओं के लिए निःशुल्क लायब्रेरी खोली है। तीन महीने पहले शुरू हुई लायब्रेरी से युवाओं को प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए किताबें उपलब्ध कराई जा रही हैं। यह लायब्रेरी सर्व सुविधायुक्त कमरों में नहीं बल्कि वन नाकों और अनुपयोगी कमरों में संचालित हो रही है।

आस-पास के गाँवों से युवा इस लायब्रेरी में आकर किताबें पढ़ते हैं। यहाँ पर हर तरह की प्रतियोगी परीक्षा संबंधी किताबें, समाचार-पत्र, शासकीय, अर्द्धशासकीय विभागों की रिक्तियों संबंधी जानकारी तथा रोजगार निर्माण समाचार-पत्र भी उपलब्ध है। श्री सीता जमरा, वन और वन्य-प्राणियों की सुरक्षा के साथ युवाओं को भी शिक्षित करने का सराहनीय कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने वन परिक्षेत्र अधिकारी सीता जमरा के नवाचार की सराहना की।

मुख्यमंत्री और विसा अध्यक्ष से मिले पहली बार राजधानी आये जनजातीय वर्ग के बच्चे

भोपाल/दैनिक मालवा हेराल्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और विधानसभा अध्यक्ष श्री गिरीश गौतम से आज जनजातीय वर्ग के कई बच्चों ने मुलाकात की। पहली बार राजधानी पहुँचने वाले बच्चों ने विधायकों और मंत्रियों से भी भेंट की।

इन बच्चों ने विधानसभा परिसर भी देखा। जनजातीय कल्याण केंद्र महाकौशल बरगांव जिला डिंडौरी के 70 विद्यार्थी जनजातीय कार्य मंत्री सुश्री मीना सिंह की पहल पर भोपाल आए। बच्चों ने मुख्यमंत्री श्री चौहान और विधानसभा अध्यक्ष श्री गौतम से भेंट की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बच्चों से उनके शिक्षा के साथ ही अन्य विषयों पर भी बातचीत की। मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ बच्चों ने समूह छायाचित्र भी खिंचवाया।

प्राथमिक शिक्षक अभ्यर्थी 1 से 6 मार्च तक कर सकेंगे शाला विकल्प का चयन

भोपाल/दैनिक मालवा हेराल्ड। आयुक्त लोक शिक्षण श्री अभय वर्मा ने बताया कि प्राथमिक शिक्षक पद हेतु जारी विज्ञापन 19 अक्टूबर 2022 के अनुक्रम में शाला विकल्प चयन हेतु अभ्यर्थियों की सूची जारी की जा रही है। चयनित अभ्यर्थी 1 से 6 मार्च तक शाला विकल्प का चयन कर सकते हैं। अभ्यर्थी को न्यूनतम 50 विकल्प का चयन करना अनिवार्य होगा। अभ्यर्थी अधिक से अधिक शालाओं का चयन कर सकेंगे। श्री वर्मा ने बताया कि समयावधि में शाला का विकल्प चयन न करने अथवा संबंधित अभ्यर्थी को चयनित शालाएँ आवंटित न हो पाने की स्थिति में विभाग की प्राथमिकता के आधार पर आवश्यकता के अनुरूप उपलब्ध रिक्तियों में से शाला का आवंटन किया जाएगा। यह आवंटन विभागवार, नियोक्तावार एवं प्रवर्गवार रोस्टर के आधार पर होगा।

श्री वर्मा ने बताया कि च्वाइस फिलिंग के आधार पर पदस्थापना अभ्यर्थी का अधिकार नहीं है। अभ्यर्थी यह दावा नहीं कर सकेगा कि उसे विकल्प अनुसार ही पदस्थापना दी जाए। विभागीय प्राथमिकता के आधार पर ही पदस्थापना की जा सकेगी। चयन प्रक्रिया के संबंध में किसी भी शिकायत या कठिनाई के लिए अभ्यर्थी संबंधित संभागीय संयुक्त संचालक को अपना अभ्यावेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। संयुक्त संचालक द्वारा प्राप्त अभ्यावेदन का नियमानुसार निराकरण किया जाएगा। अभ्यर्थी चयन प्रक्रिया के संबंध में अद्यतन जानकारी पोर्टल ह्लह्ल.द्बश्चश्ठ्ठद्यद्बठ्ठद्द. द्दश1.द्बठ्ठ पर नियमित रूप से देख सकेंगे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बरगद, शहतूत और टिकोमा के पौधे रोपे

भोपाल/दैनिक मालवा हेराल्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने श्यामला हिल्स स्थित उद्यान में बरगद, शहतूत और टिकोमा के पौधे लगाए। सामाजिक कार्यकर्ता श्री राहुल कुशवाहा, श्री प्रमोद ठाकरे और टी.वी. चैनल भारत न्यूज के ब्यूरो चीफ श्री अजय भटनागर ने अपने जन्म-दिवस पर पौध-रोपण किया। श्रीमती गार्गी भटनागर, कुमारी ऐश्वर्या भटनागर, श्रीमती सुंदर बाई कुशवाह, सर्वश्री रवि कुशवाह, राहुल राहंगडाले तथा उमेश सोनी भी पौध-रोपण में शामिल हुए।

कविता

मंजिल की ओर बढ़ना हैं,
सपनों को पूरा करना हैं !
कठिन परिश्रम करके ,
सफलता को पाना हैं!
कुछ अच्छे कर्म करके ,
अपना अलग पहचान बनाना है!
समय का सदुपयोग करके ,
जिंदगी को सफल बनाना हैं!

- कृष्णा चौहान

व्यंग्य

हेलो कौन... अरे अरे मम्मी जी प्रणाम ...क्या आपकी बेटी से बात करनी है? पर आपको तो पता है ना मम्मी जी दिन में 11:00 से 3:00 आपकी बेटी के सोने का टाइम है। तनिक हम से ही बात कर लीजिए है ना मम्मी जी, कसम से आप बड़ी अच्छीअच्छी बातें करती है। आपकी मीठी-मीठी बातों में पता ही नहीं चलता कि आपकी बेटी सब्जी में नमक मिर्च कब दो बार डाल देती है। और कभी-कभी तो डालना ही भूल जाती है। कब रोटियां जल जाती है। कब सब्जी जल जाती है। पता ही नहीं चलता। कब आटे में नमक कम ज्यादा हो जाता है, कब चाय की पतीली उफन कर गैस का अभिषेक कर देती है। कब कमबख्त पानी का नल आकर चला जाता है, कचरा गाड़ी वाला कब निकल जाता है, पता ही नहीं चलता। गजब का संप्रेषण है मम्मी जी आपकी बातों में, भाव विभोर होकर बेचारे शर्ट का बेकसूर पाकिट बातों ही बातों में कब प्रेस को गले लगाले धुआं निकलने पर ही पता चलता है।आपको तो सच में एक योग शिक्षक होना चाहिए या फिर कोई प्रवचन कर्ता। वैसे किसी राष्ट्रीय पॉलीटिकल पार्टी का प्रवक्ता होने में भी कोई बुराई नहीं है।

घर में सब कुशल तो है ना, हमारी छोटी साली जी क्या कर रही है? उन्हें कराटे के सांथ-सांथ झाड़ू और बेलन चलाना जरूर सिखाएगा अब फोन रखता हूं ऑफिस के लिए देर हो रही है। कभी-कभी हमारे ऊपर भी अमृत वचनों की वर्षा हो जाए प्रणाम, बाबूजी को भी प्रणाम जरुर कहिएगा।

-परमानन्द राठौर गुराड़िया वर्मा

ग़ज़ल

हो सका हमसे नहीं इतना कभी
ज़िंदगानी ने कहा जितना कभी

रास्तों पर मुश्किलें तो आएंगी
मंजिलों से पहले ना रुकना कभी

ज़िंदगी का है सफ़र,मुश्किल भरा
मुश्किलों के आगे ना झुकना कभी

अंधेरों में दीप तुम खो जाओगे
भोर से पहले नहीं बुझना कभी

ख़्वाब मेरे तुम बहुत अनमोल हो
उलझनों के हाथ ना बिकना कभी

-राधा राणा

पूर्व विधायक श्री पिरोनिया ने बाँस एवं बाँस शिल्प विकास बोर्ड अध्यक्ष का किया कार्यभार ग्रहण

भोपाल/दैनिक मालवा हेराल्ड। गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा की मौजूदगी में मंगलवार को पूर्व विधायक श्री धनश्याम पिरोनिया ने म.प्र. बाँस एवं बाँस शिल्प विकास बोर्ड के अध्यक्ष पद का कार्यभार ग्रहण किया। गृह मंत्री डॉ. मिश्रा ने श्री पिरोनिया को बधाई और शुभकामनाएँ दी।

राज्य बाँस मिशन के सी.ई.ओ. डॉ. यू.के. सुबुद्धि ने मिशन में संचालित गतिविधियों से अध्यक्ष को अवगत कराया। इस मौके पर धानुक, वंशकार समाज के सदस्य एवं बाँस शिल्पी भी मौजूद थे। श्री पिरोनिया ने कहा कि प्रदेश के बाँस शिल्पियों की समस्याओं के निदान के लिए वे हरसंभव प्रयास करेंगे।

महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर जेटसिंथेसिस के ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन ने पेश किया महामृत्युंजय मंत्र जिसे सोनू निगम जी ने आवाज़ दी

महामृत्युंजय मंत्र को सोनू निगम के आई बिलीव म्यूजिक के सहयोग से प्रस्तुत किया गया है

जीएनएस। महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर, पद्मश्री सोनू निगम के आई बिलीव म्यूजिक के साथ ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन - जेटसिंथेसिस की डिजिटल मनोरंजन शाखा ने महामृत्युंजय मंत्र के लिए संगीत वीडियो लॉन्च किया।

इस महामृत्युंजय मंत्र के द्वारा दर्शकों को वीडियो में गतिशील दृश्यों के साथ सोनू निगम द्वारा किए गए इस महान शक्तिशाली मंत्रोच्चारण में डूबने का मौका मिलेगा। महामृत्युंजय मंत्र एक मोक्ष मंत्र माना जाता है जो अमरता और दीर्घायु प्रदान करता है, ऐसा माना जाता है कि महामृत्युंजय मंत्र का मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक और गहरा प्रभाव पड़ता है।महामृत्युंजय मंत्र की इस म्यूजिक वीडियो के बारे में बात करते हुए, सोनू निगम कहते हैं, बाजार में कई महामृत्युंजय मंत्र पाठ हैं, लेकिन मैंने अभी तक इसका पूर्ण संस्करण नहीं सुना है। मैंने इस विषय पर कुछ शोध किया और पाया कि महामृत्युंजय मंत्र जो की 2 भाग में होता है वह अपने दूसरे भाग के बिना अधूरा है। वही दूसरा भाग मैंने अपने संस्करण में शामिल किया है। मैंने इस महामृत्युंजय मंत्र को इसके सही अंकन और उच्चारण में पढ़ा है, जैसा कि मूल रूप से हमारे प्राचीन ऋषियों द्वारा कहा गया था। मेरे लिए पूर्ण संस्करण द्वारा निर्मित माहौल कल्पना से परे है।लॉन्च पर टिप्पणी करते हुए जेटसिंथेसिस के संस्थापक और सीईओ, राजन नवानी ने कहा, ÷हम सोनू निगम के आई बिलीव म्यूजिक के साथ यह संस्करण शुरू करने के लिए उत्साहित हैं। हनुमान चालीसा की अद्भुत सफलता ने हमें अपने श्रोताओं के लिए इस तरह के और अधिक गहरे अनुभव लाने के लिए प्रोत्साहित किया है और हमें उम्मीद है कि दर्शक महामृत्युंजय मंत्र के प्रति भी अनुकूल प्रतिक्रिया देंगे। इसके अतिरिक्त, यह साझेदारी जेटसिंथेसिस के ग्लोबल म्यूजिक जंक्शन के विकास को गति देगी क्योंकि हम इस क्षेत्र में निवेश करना जारी रखेंगे। दर्शक साल भर में हमसे कुछ शानदार लॉन्च की उम्मीद कर सकते हैं।

शक्ति शिरोमणि आवाहन

कल तक थे तुम प्राणवायु क्या आज मुझे तड़फाओगे
युगों युगों तक जन्म लिए फिर एक बार आजाओगे
काम क्रोध मद लोभ तमोगुण सहज मिटाने आओगे
वृंदावन धाम प्रदूषण मुक्ति , क्या उपाय बतलाओगे
अनुराग राग की खातिर ,सृष्टि रचा कर छोड़ दिया
सम्बन्धो की परिभाषा का मोल जगत को बता दिया
दी इच्छा स्वतंत्र मानव को मन मर्जी का वरदान दिया
आपदा आपड़ी सिरपर जब,शक्तिपुंज को याद किया
सूख रही हैं यमुना जी,कल कल नहीं सुनाओगे
हे शक्तिशिरोमणि मुरलीधर कब यमुना धार बहाओगे
क्या शाप कालिया के कारण,श्यामल गात बनाया है
बाट जोहती यमुना तट,कब सखियन संग रास रचाओगे
पाप छा रहा घोर अवनि पर उसे मिटाने आया हूं
घोर दुराचारी बध करने श्यामल रूप बनाया हूँ
समरस का संकल्प लिए निर्विघ्न बनाना है जग को
निष्कंटक रास रचे वृंदावन ,अलख जगाने आया हूँ
हुई शांति जब छूटा तम ,डंक बजा खुशहाली का
अत्याचार दुराचारों का, विनाश हुआ कामातुर का
यमुना में लेकर हिलोर, दधि बेंचो सजधज करके
समय आगया रास रचाने रूप धरो राधा जी का

-बच्चूलाल परमानंद दीक्षित

संजीव-नी।

एक शख्स की तलाश में था

वफा की खातिर एक शख्स की तलाश में था वो,
मुझे देख बगले झांक रहा था वो,

चंद टुकड़ों के लिए बना शातिर,
अपने को संत समझ रहा था वो,

खुद की शक्ल में दूसरा आदमी था वो,
मासूम सी शक्ल के पीछे शैतान था वो,

पल में माशा पल में तोला ऐसा क्यो,
बड़ी मछली बन छोटी को निगल रहा था वो,

खुद की बेटी बेटी है दूसरों की पराई नार,
पितामह बन दूसरों की बेटियों पर बुरी नजर रखता था वो,

आदमी ऊपर से दिखता तो शरीफ है
शराफत का चोंगा पहनकर घूमता है वो।

इंसानियत का बड़ा दुश्मन दिखाई देता है,
आम लोगों को भी बहुत देर से समझ आता है वो।

ईश्वर की लाठी में आवाज नहीं होती,
ईश्वर के हाथों ही बुरी गति को प्राप्त होता है वो,

-संजीव ठाकुर

बच्चों की दुनिया का विमोचन एवं साहित्यकार सम्मान समारोह सम्पन्न

साहित्यकार राजकुमार जैन राजन को किया गया सम्मानित

सोजत सिटी (राजस्थान)जीएनएस। पुस्तक विमोचन एवं साहित्यकार सम्मान समारोह सिध्दार्थ सदन, हायर सेकेन्डरी स्कूल रोड पर ख्यातनाम साहित्यकारों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। आकोला चित्तौड़गढ़ से पधारे वरिष्ठ साहित्यकार राजकुमार जैन राजन को महनीय बहुआयामी साहित्यिक सेवाओं के लिए स्व. एडवोकेट वसुदेव सांदू स्मृति साहित्यकार सम्मान - 2023 से समादृत किया गया। सम्मान स्वरूप अंगवस्त्र, माला, नगद राशि व प्रशस्तिपत्र भेंट किया गया।

इस अवसर पर शहर की वरिष्ठ रचनानकार श्रीमती राजेश दुलारी सांदू द्वारा लिखी गई बाल कविताओं के संग्रह बच्चों की दुनिया का लोकार्पण मंचस्थ अतिथियों द्वारा किया गया। संग्रह की सारगर्भित समीक्षा साहित्यकार, कवि श्री अब्दुल रसीद गौरी ने प्रस्तुत की। आयोजन की अध्यक्षता ख्यातनाम साहित्यकार श्री वीरेंद्र लखावत ने की। डॉ. विनोद बाहरठ के मुख्य आतिथ्य, बसन्त कुमार लखावत एवं अनोपसिंह लखावत के विशिष्ठ आतिथ्य, आत्मीय अतिथि लालचंद मोयल अध्यक्ष पेंशनर समाज रहे। सम्पूर्ण कार्यक्रम सिध्दार्थ सांदू (आरजेएस) के संयोजन में भवपूर्ण माहौल में सम्पन्न हुआ ।

कार्यक्रम के मुख्यअतिथि डॉ0 विनोद बाहरठ ने इस अवसर पर कहा कि, %जिस परिवार की नींव अच्छे संस्कारो की बुनियाद पर रखी जाती है वे अपने माता- पिता का नाम अमर कर देते हैं।% अपने मार्मिक उद्बोधन में उन्होंने कहा कि, %स्व.एडवोकेट वसुदेव सान्दू की स्मृति में रचनाकारों को आज जो पुरस्कार दिए गये हैं वे हमेशा प्रेरित करते रहेंगे। उन्होंने घोषणा की कि अब प्रतिवर्ष 25 फरवरी %स्व. एडवोकेट वसुदेव सांदू स्मृति बालसाहित्यकार सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। इस घोषणा का पांडाल में उपस्थित सभी साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए वीरेंद्रसिंह लखावत ने कहा कि, बाल साहित्य लेखन एक विशेष विधा है जिसे हल्के में नहीं लिया जा सकता है। इसे बाल मनोविज्ञान से जोड़ कर देखा जाना चाहिए। वरिष्ठ साहित्यकार राजकुमार जैन राजन ने अपने उद्बोधन में सोजत के साहित्यिक माहोल को देख कर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि बालसाहित्य की महत्ता आज के समय में बहुत ज्यादा है। आने वाली पीढ़ी के लिए सही मार्ग दिखाने के लिए उन्हें बाल साहित्य से जोड़ना अतिआवश्यक है। यह जितना सरल लगता ही उतना ही लेखन बहुत मुश्किल होता है। विशिष्ठ अतिथि के रूप में अनोपसिंह लखावत ने बच्चों की दुनिया पुस्तक की लेखिका राजेश दुलारी सान्दू को बधाई दी साथ ही इस अवसर पर सम्मानित होने वाले साहित्यकारो को भी बधाई दी।

पुस्तक लेखिका राजेशदुलारी सान्दू ने अपनी पुस्तक से दो कविताएं सुनाई तथा अपने उद्बोधन में अपने स्व.पति एडवोकेट वसुदेव सान्दू को नमन करते हुए यह पुस्तक उन्हीं को समर्पित की।

कार्यक्रम में साहित्यकार एवं विशिष्ठ अतिथि बसंतकुमार लखावत, लालचंद मोयल, रशीद अहमद गौरी ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम की सुंदर रूपरेखा वरिष्ठ साहित्यकार अब्दुल समद राही द्वारा निर्देशित रही। कार्यक्रम का सफल संचालन वरिष्ठ उद्घोषक रामस्वरूप भटनागर ने किया। आभार की रश्म बड़े ही भावुकता भरे लहजे में सीमा सान्दू ने व्यक्त की। इसके पहले मां शारदे एवं स्व.एडवोके वसुदेव सान्दू की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक वरिष्ठ न्यायिक मैजिस्ट्रेट सिद्धार्थ सान्दू , भानुप्रतापसिंह पालावत, न्यायिक मजिस्ट्रेट सीमा सान्दू एवं डॉ.विनोद बारहट ने इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त कवियों का जिनमे सर्वश्री वाजिद हसन काजी (जोधपुर), हलीम आईना (कोटा), श्री गोपाल व्यास (फलोदी), कैलाशदान चारण (सोजत), रामस्वरूप भटनागर (सोजत) का भी माला, शाल, सम्मान पत्र, श्रीफल एवं नकद राशी देकर सम्मान किया गया।

बइस भव्य गरिमामय कार्यक्रम में भानु प्रताप सिंह पालावत, गीता बारहट, नवनीत राय रुचिर, विशन सिंह भाटी, राजेंद्र व्यास, शशि कला माथुर, हेमंत टाक, सत्तूसिंह भाटी, अशोक सेन, दशरथ सिंह, दिलीप सिंह, प्रकाश सिंह लखावत, अभिलाष पिल्लई, पंकज सांखला, महेश बागड़ी, श्यामा चारण, सोनीका तंवर, नीलम बिड़ला, पुष्पराज मुणोत, लक्ष्मण सिंह, राजेश तवर, सुनीता कोठारी, अब्दुल सलीम सिलावट, असलम ताजक, हनीफ कम्पाउन्डर, हरेंद्र इंदा, डूंगर सिंह, पारस सोनी, नितिन राजपुरोहित, ईसाक शेख ललित सैन सुशीला वर्मा कानाराम, श्याम सिंह दहिया, सांखला प्रदीप राज सिंह, श्याम सिंह लखावत, त्रिभुवन, जितेन्द्र सिंह, भरत, पदम सिंह, रूपचंद, दिलीप दाधिच, गजेन्द्र श्रीमाली, आदि कई साहित्य प्रेमी, गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। सांदू परिवार द्वारा आयोजित इस भव्य गरिमामय साहित्यिक आयोजन के लिए उपस्थित गणमान्यों द्वारा हार्दिक बधाई दी गई।

- अब्दुल समद राही, शबनम साहित्य परिषद, सोजत सिटी

कलाकारों का जब हुआ जंगली जानवरों से सामना

वन्यजीवन संरक्षण पर जागरूकता बढ़ाने के लिये हर साल 3 मार्च को वर्ल्ड वाइल्डलाइफ डे मनाया जाता है। एण्डटीवी के कलाकारों ने अपने पसंदीदा वन्यजीवों और जंगल सफारी में उनके साथ घटे अनुभवों के बारे में बात की और एक वैश्विक व्यवस्था को बढ़ावा देने और उसका संरक्षण करने की उम्मीद जताई। ये कलाकार हैं आयुध भानुशाली (कृष्णा, 'दूसरी माँ'), हिमानी शिवपुरी (कटोरी अम्मा, 'हप्पू की उलटन पलटन') और रोहिताश्व गौड़ (मनमोहन तिवारी, 'भाबीजी घर पर हैं')। एण्डटीवी के 'दूसरी माँ' में कृष्णा की भूमिका निभा रहे आयुध भानुशाली कहते हैं, ''मुझे जंगल का राजा शेर पसंद है। शेर कई संस्कृतियों के लिये मजबूती, महानता और शक्ति का प्रतीक रहे हैं। मैं टेलीविजन पर घंटों की डॉक्युमेंट्री देखा करता था। 'सिम्बा- द लायन किंग' मेरा अब तक का सबसे पसंदीदा कार्टून है। मेरे पास शेरों की तस्वीरों का एक बड़ा संग्रह है, जोकि मैंने अपनी पुरानी किताबों, पोस्टर्स और चार्ट पेपर्स से बनाया है। मैंने हाल ही में अपने परिवार के साथ गुजरात के गिर फॉरेस्ट का दौरा किया था, ताकि शेर को असली में देख सकूं। मैं उस सीन को अपने जीवन का सबसे यादगार पल मानता हूँ। मुझे याद है कि धरती के सबसे शक्तिशाली जीव को देखने के रोमांच के कारण मुझे रातभर नींद नहीं आई थी। सुबह जल्दी पहुँचने के बाद हम उसे कई घंटों तक ढूंढते रहे, लेकिन वह नहीं मिला। कुछ वक्त के बाद मैं निराशा के कारण रोने लगा और मेरी माँ और परिवार के दूसरे लोगों ने मुझे सांत्वना दी, यह भूलकर कि हम शेर की खोज कर रहे थे (हंसते हैं)। हालांकि, कुछ वक्त के बाद आखिरकार हमें शेर दिख गया। अपनी जीप से उसे देखना इतना उत्साहपूर्ण था कि मैं उसके फोटो लेना भी भूल गया। मुझे कोई खेद नहीं है, क्योंकि मुझे वह मिल गया, जिससे मैं मिलना चाहता था और मेरी एक बार फिर वहाँ जाने की इच्छा है।''

एण्डटीवी के 'हप्पू की उलटन पलटन' में कटोरी अम्मा की भूमिका निभा रहीं हिमानी शिवपुरी ने कहा, ''मैं उत्तराखण्ड की हूँ, जहाँ वन्यजीवों की खूबसूरत प्रजातियाँ और एक अभ्यारण्य है, जहाँ लोग अपने पसंदीदा प्राणियों को देख सकते हैं। हालांकि, मैं अपने घर के पास के एक सांप का अनुभव बताती हूँ। मुझे सांप पसंद हैं और खूबसूरत लगते हैं। मैं छोटी थी और घर के पीछे कुछ दोस्तों के साथ खेल रही थी। शाम को अचानक हमें वहाँ एक सांप दिखा। वह काफी बड़ा था और हर कोई डरकर भागने लगा। लेकिन मैं उससे कुछ दूरी बनाकर ध्यान से उसका अगला कदम देखने लगी। बचपन में आपको खतरनाक चीजें भी देखने की मासूमियत और जिज्ञासा होती है। मेरी शुरूआती प्रतिक्रिया वैसी ही थी, लेकिन उस सांप को बहुत करीब से देखने के बाद उसकी सुंदरता ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया। वह तुरंत वहाँ से निकल गया। मैं घर गई और अपनी माँ को इस घटना के बारे में बताया। और मेरी माँ ने कहा कि अब

वहाँ नहीं खेलना है (हंसती हैं)। मैं हूँ कि उन्हें मेरी सुरक्षा की चिंता थी, लेकिन आपको बता रही हूँ कि मैं वहाँ कई बार गई, ताकि उसे देख सकूं। इसके अलावा मैंने दुनियाभर में कई वन्यजीवन आश्रयों को देखा है। यह सबसे रोमांचक और आरामदायक कामों में से एक होता है, खासकर क्योंकि आपके आस-पास प्रकृति होती है। इस दिन के सम्मान में मैं लोगों से आग्रह करती हूँ कि वे को सुरक्षित वातावरण दें, ताकि उनका अस्तित्व संरक्षित रहे।'' एण्डटीवी के 'भाबीजी घर पर हैं' में तिवारी की भूमिका निभा रहे रोहिताश्व गौड़ ने कहा, ''कॉलेज के दिनों में मेरे दोस्तों का एक ग्रुप था, जिन्हें जानवरों को देखने का बड़ा उत्साह था। चूंकि मैं हिमाचल प्रदेश का रहने वाला हूँ, जहाँ कई वन्यजीवन अभ्यारण्य हैं, इसलिये अपने दोस्तों को बताने के लिये मेरे पास हमेशा कई कहानियाँ होती थीं। मैं अपने मैं अपने बचपन में कई बार अपने परिवार के साथ और स्कूल ट्रिप्स में उन अभ्यारण्यों में गया था। लेकिन मुझे बांधवगढ़,

मध्यप्रदेश की एक सफारी याद है, जिसने उन खूबसूरत जानवरों को देखने में मेरी रुचि दोबारा जगा दी थी। मैं वहाँ अपने दोस्तों के साथ सफेद बाघ को देखने गया था। इतनी दूरी से एक सफेद बाघ को मैंने पहली बार देखा था और मैं उसकी खूबसूरती में खो गया था, मानो कि वह रैम्प पर चल रहा हो। टाइगर सफारी में हमेशा आश्चर्य और खुशी होती है; यह जिन्दगी में एक बार जरूर करनी चाहिये। जंगली बाघों और उनके आवास को बचाकर हम अपने समेत कई प्राणियों को भी बचाते हैं। मैं सभी से आग्रह हूँ कि किसी भी प्राकृतिक आवास को नष्ट न करें और अपनी तरक्की और विकास के लिये कोई वैकल्पिक समाधान ढूंढें!''

देखिये 'दूसरी माँ' रात 8:00 बजे, 'हप्पू की उलटन पलटन' रात 10:00 बजे और 'भाबीजी घर पर हैं' रात 10:30 बजे, हर सोमवार से शुक्रवार सिर्फ एण्डटीवी पर।

बहुत कुछ बाकी है -

जिंदगी के सफ़र में,
बिखर चुका है जीने के अरमां,
हासिल करने की कोशिश,
बहुत की गई,
बॉंदिश नहीं देखीं मैंने,
जज्बा और जुनून,
मन में समाएं रक्खा।
अब लगता है कि,
मुझे फिर भी हार नहीं माननी होगी,
मजबूत इरादों से आगे बढ़ने की,
भरपूर कोशिश करनी होगी,
क्योंकि ज़िन्दगी में बहुत कुछ बाकी है... !

बच्चों को आगे बढ़ाने में,
मदद और बचाव की सीख दिलाने में,
आचार विचार को शुद्ध रखने के लिए,
बाक़ी बचे हुए कामों को पूरा करने के लिए,
हमें मजबूती से आगे बढ़ना होगा,
बाक़ी बचे हुए अरमानों को समेटना होगा,
अभी कोशिश की रफ्तार तेज करनी होगी,
हौसले में बुलंदी लानी होगी।
क्योंकि ज़िन्दगी में बहुत कुछ बाकी है... !

असफलताएं आम बात है,
नहीं किसी में दिखता हर वक्त साथ है,
मुस्कुराते हुए हमें अपनी मंजिल के लिए लड़ना होगा,
चेहरे पे मुस्कान रखना होगा,
ख़बर गरम हो फिर भी,
आगे बचे हुए सफ़र को तय करना होगा,
क्योंकि ज़िन्दगी में बहुत कुछ बाकी है... !!

सफ़र ज़िन्दगी का,
छोटी सी नन्ही दुनिया का सफ़र नहीं है,
वक्त ने हालातों को नजरंदाज किया है,
समय पर लोगों ने साथ नहीं दिया है,
मगर यह सफ़र का अन्त नहीं है,
मुश्किल वक्त में हालात बेहद ख़राब नहीं है,
इसे हमें दुरूस्त करना होगा,
मजबूत इरादों से सना दिमाग रखना होगा,
क्योंकि ज़िन्दगी में बहुत कुछ बाकी है... !

इरादों को लेकर गुफ्तगू हों,
मंजिल चुनने में खूब उम्मीद दिखे,
इरादों पर न किसी की नज़र लगे,
आसमां सा खूब बुलन्द हौसला रहे।
इरादों को न नाराज़ करें,
मजबूती से आगे बढ़े,
सफलता मेहनतकश लोगों की जिन्दगी है,
इसमें कमजोरी एक नाकामी है,
हमें इस दौर में आगे बढ़ना होगा,
अकेलेपन में भी सबकुछ सहना होगा,
क्योंकि ज़िन्दगी में बहुत कुछ बाकी है... !

जिंदगी को तरासने में,
बहुत कुछ जानना बाकी है,
जीवन मंत्र की सच्चाई एक सच्ची कहानी है,
हमें खुले मन से सबकुछ आज़ जानने की जरूरत है,
ज़िन्दगी की सबसे बड़ी अदालत में,
इस सच्चाई को सामने लाने की,
बढ़ गई अहमियत है।
सब बेपर्दा होकर भी आंखों से ,
दूर रहने की कवायद करते हैं,
मुश्किल वक्त में सच्चाई जानकर,
मजबूती से आगे बढ़ने में लोगों से दूर रहने की,
कोशिश करने में लगे हुए रहते हैं।
हमें ज़िन्दगी के इस छिपे रहस्य को समझना होगा,
मुश्किल सफ़र में हमेशा,
सही तरीके पर अमल करना होगा,
क्योंकि ज़िन्दगी में बहुत कुछ बाकी है... !

-डॉ. अशोक, पटना, बिहार।

रजत पथ

दो अंशो में चीर रहा है पीताभ नभ को वायुयान,
देवलोक का रजत पथ जो बना रहा है वायुयान।

स्वर्ण श्रेष्ठ को धारण किए आ रहे है दिनकर राज,
वसुंधरा पर हारक फरिया डाल रहे है दिनकर राज।
और धरा पर धानमोती बिखेर रहा है उनका यान,
दो अंशो में चीर रहा है पीताभ नभ को वायुयान।।

मन को करती प्रफुल्लित प्रातः पवन की शीतलता,
छू लेने को अनंत ऊंचाई वल्गा रही है शीत लता।
अडिग शैल के शिखरों पर अटक रहा है आसमान,
दो अंशो में चीर रहा है पीताभ नभ को वायुयान।।

समुदाय सारस का देखो अंबर में अनुशासन रखते,
हम मानव गुमानी कितने जीवन में विनाशक रखते।
वो पहाड़ों से गिरते झरने मर्दन करते खुद अभिमान,
दो अंशो में चीर रहा है पीताभ नभ को वायुयान।।

प्यारी है मां गोद तुम्हारी भले ही जग उपहास बना दो,
पर अपनी आभा से माली मुझे दया का दास बना दो।
तेरी मिट्टी के मसलन से बस हो जाता है शाही स्नान,
दो अंशो में चीर रहा है पीताभ नभ को वायुयान।।

- मनोज बाबू , झूंठा (पाली)

तुम

तुम शर्द मौसम की सुबह सी तुम,
टहलता ही रहूँ मैं
गुल की भीनी महक सी तुम,
सूंघता ही रहुँ मैं

मानसून की दोपहर सी तुम,
निहारता ही रहुँ मैं
गीत सी तुम ग़ज़ल सी तुम,
हर पल गुनगुनाता ही रहूँ मैं

मेरे ख्यालों की मलिका सी तुम,
खोया ही रहूँ मैं
अजय की बांसुरी से निकली धुन सी तुम,
सुनता ही रहूँ मैं

मुझमें छिपी तबस्सुम हो तुम,
मुस्कुराता ही रहूँ मैं द्य
मैं क्या बताऊं क्या क्या हो तुम?
प्यारी सी तुम न्यारी सी तुम,
देखता ही रहूँ मैं।
भोली सी तुम भाली सी तुम,
बस, तुमसे ही प्यार करता रहूँ मैं

- विकाश सिंह सोनवानी

गज़ल

नेताओं की देख आज यही कहानी है
ऊपर से सच्चे भीतर बेईमानी है

बैठ गये जब से वे कुर्सी पर जा करके
तब से देखिये इनकी ही हुक्मरानी है

उल्टे-उल्टे धंधे करते है जो सदैव
इसलिए तो उनकी हरेक रात सुहानी है

जब से वे जीतकर आये उसे भूल गये
अब तो उनका बसेरा ही राजधानी है

टेढ़े- मेढ़े रास्ते हँसकर पार कर लें जो
उसी इंसान की तो खुशहाल ज़िंदगानी है

नहीं है शास्त्रों का ज्ञान फिर भी बघारें
जनता की निगाह में बहुत बड़ा ज्ञानी है

यूँ तो आँकड़ों का जादूगर बना 'रमेश'
इसलिए उस पर तो विशेष मेहरबानी है

-रमेश मनोहरा

लफ्ज़

आपके लफ्ज़ों के जनाब क्या कहने
दिल की गहराइयों में समंदर से गहरे।
लफ्ज़ जो कभी मन को लगते चितेरे
फिसले जुबां से लगते कभी नश्तर से।

तुम क्या कहो, हम क्या समझ बैठे
समझ समझ का फेर है समझने में।
लफ्ज़ गुबार बन जुबां से जब फूट पड़ते
शब्दों के अर्थ बदलकर अर्थ ही खो देते ।

लफ्ज़ों के होंठ कभी बहके बहके
कभी चुपचाप से खोये सिले सिले ।
उनसे कभी शिकवा कभी शिकायत
अच्छा है चुप्पियों पर लग जाए ताले।
दो
कभी कभी दिख जाते हो अनायास
कभी ख्वाबों ख्यालों के आसपास।
मुद्दते तो बहुत मिली मिलने की पर
नजदीक होकर भी न रहे दिल के पास।

जिंदगी सारी यूं ही गुजर गुजर गई
तरफदारी में इंतजार की लिए आस।

-लाल बहादुर श्रीवास्तव

होली बरसाने के गांव की

चलो सुदामा, चलो श्रीदामा,आज राधिका गांव में,
जहां बैठी है राधा रानी, लेकर लठ अपने हाथ में।

ले लो ढ़ोल मंजीरा सारे ,भर लो रंग पिचकारी
ऐसा रंग उड़े फिज़ा में, रंग जायं सब नर नारी
बरसाने में धूम मची है,आया गोकुल का वासी
काहे भाग रहीहो गोरी, होली खेलें हम बरजोरी।,

नाचते गाते पहुंची टोली,चितचोर कृष्ण के साथ में,
रंग गुलाल उड़ायं नर नारी ,लेकर अपने हाथ में।

चढ़ी अटारी बैठी गोरी , विषभानू की छोरी रे ,
अब तो घूंघट उठाओ गोरी ,क्यों देख मुझे चोरी चोरी ,
छेड़ा कृष्ण ने श्री राधा को,उसने पलट कर वार किया,
राधा के हाथों की लाठी , कृष्ण के सर चढ़ कर बोली ।

ऋतुराज का सौगात है ये , भरी है थाल गुलाल से,
आज रंगो तन मन तुम सारे,कहे राधिका प्यार से ।

जब कृष्ण मिले राधिका से, बरसाने वाली गलियों में
नैनो से जब नैन मिले निःशब्द बहुत कुछ कह डाले।
जैसे लिपटे लता पेड़ से, राधा लिपटी कृष्ण से
बना अलौकिक प्रेम का बंधन ,देख समय भी ठहर गया।

नैनो से अश्रु धार बहे ,क्या गजब है प्रेम की मादकता
छोड़ के लोक लाज के बंधन , कृष्ण की हो गई राधिका ।

आज रंगी धरती अम्बर ,आज रंगी सृष्टि सारी,
कृष्ण के रंग भरी होली से , रंग गईं राधिका प्यारी ।
कृष्ण राधिका की होली ने,एक नया इतिहास रचा
गोकुल बरसाने की होली,सारे जग विख्यात हुई ।

श्रीकृष्ण राधिका का संगम ,गंगा यमुना सा पावन
जहां कृष्ण संग डोली राधिका ,वहां का हर कंकड़ पावन

- सुशीला कुमारी

मैं मुसाफिर

मैं मुसाफिर जिंदगी की राह में चलती ही चली गई,
गिरती पड़ती रुकती और फिर संभलती ही चली गई,
बहुत सी शिकायते रही है जीवन से मेरी,
फिर भी इसे अपनाता ही चली गई,
जब निगाहें घुमाई मैनें तों देखी,
कुछ धूप में चमक रहे थे,
तों कुछ बारिश में मीट रहे थे,
कुछ को तो वक्त ने खुद में ऐसा छुपा लिया,
तों कुछ खत्म हो चुकें थें ,
मैं उन्हे भी अपने सफर में गिनती चली जा रही थी
वक्त का हाथ थामे मैं चलती ही चली जा रही थी
बस चलती ही जा रही थी।।

उत्तर प्रदेश

राजमहल के देहरी पर सदा हाजरी देने वाले
बड़े बड़े मुद्दों पर मौन साध लेने वाले
मजबूरों मजलूमों से नजर चुरा जानें वाले
पूछ रहें हैं यूपी में क्या है?
कलम बेंच कर खाने वाले।
आओ तुम्हें सुनता हूँ जो अमिट अमर कहानी है
जिसकी शक्ति शौर्य दुनियां ने जानी पहचानी है
ये यूपी वाला पानी है, ये यूपी वाला पानी है।
सुनो ध्यान से भारत का पहला प्रधान दिया हमने
मंगल बन तोपो के सम्मुख सीना तान दिया हमने
सांसे तोड़ी दम तोड़ा पर वचन नही तोड़ा हमनें
खुद के हाथो खुद को गोली मारी है
ऐसी अपनी अमर कहानी है
ये यूपी वाला पानी है, ये यूपी वाला पानी है।
दोनो हाथो तलवार चलाते देखो रानी झांसी की मरदाई
वो देखो बेगम हजरत महल
ये देखो झलकारी बाई
कण कण में देखो देश प्रेम की प्रभुताई
देख सको तो देखो फंदा चूम रही विस्मिल की तरूणाई
अपनी यही कहानी इसकी पानी भी रखती पानी है
ये यूपी वाला पानी है, ये यूपी वाला पानी है।
ये धरा वही है जहाँ मर्यादा परुषोतम श्री राम हुए
प्रेम की पराकाष्ठा घनश्याम हुए
यहां दुर्गा है चंडी हैं माँ काली है
भष्म आरती करता गंगा के तट पर महाकाल कपाली है।
ये यूपी वाला पानी है, ये यूपी वाला पानी है।
हमने ही दुनिया को पहले लेखन का ज्ञान दिया
हमने रामायण लिखी हमने ही गीता का ज्ञान दिया
हमने ताकत के बल सात समुंदर बांध दिया
हमने ही जीवन जीने का नव आधार दिया
हम ने बात सदा वेदों की मानी है यहाँ कर्ण सरीखे दानी हैं
ये यूपी वाला पानी है, ये यूपी वाला पानी है।
यहाँ जायसी की पद्मावत तुलसी, राय, कबीरा हैं
यही निराला की अनामिका,परिमल यहीं जगनिक के आल्हा ऊदल हैं
यहीं हैं पन्त का युगान्त यहीं महादेवी की यामा है
मिश्र का कलि कौतुक, हठी हमीर
मुंशी की कर्मभूमि अब तक याद जुबानी है
ये यूपी वाला पानी है, ये यूपी वाला पानी है।
दुनियां जिसकी अभिलाषी है यहीं अयोध्या, मथुरा,काशी है
बुलन्द दरवाजा, ताज,यहीं है
दूध छठी का याद दिलाता गोरो को अल्फ्रेड पार्क यहीं है
हमीं एकता के रहे निशानी हैं
ये यूपी वाला पानी है, ये यूपी वाला पानी है।
यहाँ लोकसभा की अस्सी सीटे हैं
दिल्ली के निर्णय हमसे ही होते हैं
हम थोड़े खट्टे थोड़े मीठे हैं
हम दुश्मन नही छोड़ा करतें हैं
खुद पर उठने वाली उँगली तोड़ा करते हैं
अपनी यही कहानी है
ये यूपी वाला पानी है, ये यूपी वाला पानी है।

- सुब्रत राय सिद्धार्थ नगर उत्तर प्रदेश

दिल होता गुलजार

दिल को अपना मान ले ,प्रीत पराई जान ,
दिल होता है मीत जी ,सुख दुख की दूकान।

दिल थोड़ा सा बावरा ,दिल थोड़ा नादान,
दिल में होता प्यार का मस्ती भरा जहान।

दिल से दिल के मेल का ,बसता जब संसार ,
खुशियां आके झूमती ,दिल होता गुलजार।

दिल की बात न मानिये ,दिल है धोखेबाज ,
सूरत पे मरता सदा ,भाता उसको ताज।

करो सामना प्यार से ,हर मुश्किल का यार ,
फिर आसानी का करो ,तबियत से सत्कार।

-महेंद्र कुमार वर्मा

लेख-मजदूरों की कमी की हकीकत

कहने की आवश्यकता नहीं है कि यदि देश में युवाओं की संख्या अधिक है तो कार्यशील जनसंख्या भी अधिक होगी। ऐसे में कृषि, उद्योग, सेवा के किसी भी क्षेत्र में श्रमिकों की कमी का कोई कारण नहीं है। यह एक सच्चाई है कि अन्य क्षेत्रों में भले ही कोई कमी नहीं है, लेकिन कृषि क्षेत्र में इसे महसूस किया जाता है। वास्तव में इसकी जड़ें हमारे समाज और अर्थव्यवस्था में देखी जा सकती हैं। चीन ही नहीं, जापान और दक्षिण कोरिया समेत बीस देशों की आबादी इस समय घट रही है। हालांकि, 2061 के बाद भारत की आबादी घटने लगेगी। तब तक यह बढ़ेगा। 2/3 जनसंख्या 15 से 59 वर्ष की आयु के बीच होने के कारण, भारत ने खुद को युवाओं के देश के रूप में स्थापित किया है।

विश्व की उत्पादक जनसंख्या में भारत की हिस्सेदारी 22 प्रतिशत है। उत्पादक आबादी के उच्च अनुपात के कारण देश वर्तमान में जनसांख्यिकीय लाभांश के दौर से गुजर रहा है। इसका सदुपयोग कर विकास दर को बढ़ाना संभव है। चीन ने ऐसा किया है। साफ है कि हमारी बढ़ती बेरोजगारी से यह मौका बर्बाद हो गया है। जाहिर सी बात है कि आने वाले समय में देश को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। हालांकि कामकाजी आबादी का अनुपात (68 प्रतिशत) अधिक है, जिसे शास्त्रीय रूप से श्रम बल भागीदारी दर कहा जाता है, वह कम है। इतना ही नहीं यह लगातार कम हो रहा है। श्रम बल भागीदारी दर मतलब काम के लिए उपलब्ध श्रम शक्ति का अनुपात है, जिसमें नियोजित लोग भी शामिल हैं और जो नहीं हैं, लेकिन काम करने के इच्छुक हैं।

भारत में यह दर 2016 में 46 प्रतिशत थी। यह अब 40 फीसदी पर आ गया है। यानी 100 मजदूरों में से 40 ही काम करते हैं। शेष 60 व्यक्ति काम करने में पूरी तरह सक्षम होने के बावजूद काम करने को तैयार नहीं हैं। देश को पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए इस बाधा को दूर करना होगा। यही दर ब्राजील, वियतनाम, इंडोनेशिया, यूरोपीय संघ के देशों में 60 फीसदी है। यहां तक ??कि पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश में भी यह हमसे ज्यादा है। महिलाओं की रोजगार भागीदारी की स्थिति तो और भी खराब है। साथ ही यह लगातार घट रही है। पिछले पंद्रह वर्षों (2004-05 से 2017-18) में इसमें 50 प्रतिशत की कमी आई है। वह दर 49.4 फीसदी से घटकर 24.6 फीसदी पर आ गई है।

इस दौरान पांच करोड़ महिलाओं ने श्रम बाजार छोड़ा। यानी उन्होंने घर के काम के अलावा कोई काम नहीं करने का फैसला किया है। हालाँकि भारत में यही स्थिति है, वही अनुपात चीन में 61.6 प्रतिशत, ब्रिटेन में 58.04 प्रतिशत और जर्मनी में 56.6 प्रतिशत है। बांग्लादेश, सऊदी अरब जैसे रूढ़िवादी देशों में यह अनुपात भारत से अधिक है। हालांकि, कृषि कार्यों में महिलाओं की भागीदारी अधिक है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने से जीडीपी में 1.4 फीसदी की बढ़ोतरी हो सकती है। हल चलाने, बुवाई, पशुपालन आदि जैसे कभी पुरुष प्रधान कार्यों के मशीनीकरण के कारण यद्यपि पुरुषों की भागीदारी कम हुई है, लेकिन महिलाओं की भागीदारी लगभग पहले जैसी ही है। काम में उनकी प्रमुख भूमिका के बावजूद, मजदूरी दर पुरुषों की तुलना में 22 प्रतिशत कम है। सतही तौर पर मजदूरों की बहुतायत दिख रही है, लेकिन ऐसा नहीं है।

उद्योग, सेवा क्षेत्र श्रम प्रचुरता का अनुभव करते हैं। इसलिए उन्हें कम वेतन पर इंजीनियर, श्रमिक, मजदूर मिलते हैं। लेकिन कृषि क्षेत्र को श्रमिकों की कमी का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा, लगातार बढ़ती मजदूरी का बोझ उठाना पड़ता है। हालांकि मशीनीकरण ने कुछ हद तक कमी की समस्या को हल कर दिया है, लेकिन ऐसा लगता है कि यह एक नया संकट बो रहा है। यही पूँजीवादी कृषि की। स्वच्छ हवा, पानी और प्रकृति से निकटता जैसे तमाम फायदों के बावजूद युवा कृषि में काम करने को तैयार नहीं हैं। एक किसान के पास काम के लिए महिलाओं, बूढ़ों, विकलांगों पर निर्भर रहने के अलावा कोई चारा नहीं है।संचार में आसानी के कारण, शहर एक कालिंग दूरी के भीतर आ गए हैं। वहां की मजदूरी और सुविधाएं युवाओं को आकर्षित करती हैं। कृषि और अन्य व्यवसायों में मजदूरी की दरें वर्तमान में ऐसी हैं कि मजदूर को अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए पूरे सप्ताह काम करना आवश्यक नहीं रह गया है। तीन-चार दिन की मजदूरी से सप्ताह भर का खर्च चलता है। सरकारी योजना के माध्यम से रियायती दरों पर अनाज की आपूर्ति के कारण मजदूरों के कार्य दिवसों में और कमी आई है।

देश के हर नागरिक के पास खाद्य सुरक्षा होनी चाहिए। लेकिन आपूर्ति किए जाने वाले अनाज की दर तय करते समय यह भी ध्यान रखना उतना ही जरूरी है कि काम करने का प्रोत्साहन खत्म न हो जाए। नहीं तो भविष्य में देश को खाद्यान्न की कमी का सामना करना पड़ सकता है। कोरोना की महामारी लगभग समाप्त हो चुकी है। लेकिन शराब की बढ़ती आदत ने एक महामारी का रूप ले लिया है। चूंकि सरकार द्वारा ऐसी मौतों को एक्सीडेंटल और अचानक हुई मौतों के तौर पर दर्ज किया जाता है, इसलिए असली वजह सामने नहीं आती है। वंध्यत्व (इनफर्टिलिटी) की बढ़ती दरों, लिवर की बीमारी के कारण होने वाली मौतों की संख्या भी बढ़ गई है। सर्वे में सामने आया कि 15 साल से कम उम्र के हर पांच में से एक व्यक्ति इस आदत में शामिल है। कुछ राज्यों में यह अनुपात इससे अधिक है।

सर्वेक्षण के अनुसार, महाराष्ट्र में यह 13.9 प्रतिशत है। यह देखा गया है कि यह शहरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है। अध्ययनों से पता चला है कि शराब की आसान उपलब्धता और इसकी लत लगने की प्रकृति के बीच घनिष्ठ संबंध है। आधिकारिक, अनौपचारिक दुकानों, ढाबों और बार-बार होने वाले चुनावों ने गांव की सूरत बदल दी है। पहले गाँव में शराबी दुर्लभ थे, अब पांडुरंग (ईश्वर) के भक्त दुर्लभ हैं, बस इतना ही अंतर है! श्रम शक्ति के बीच पीने की बढ़ती आदतों के प्रभाव, इसकी उपलब्धता और उनके प्रदर्शन पर इसके प्रभाव को नकारना वास्तविकता से आंखें मूंद लेना है। सरकार को राजस्व से परे शराब पर टैक्स के बारे में सोचने की जरूरत है। कार्य संस्कृति में मूल रूप से हमारे पास जो कमी है, उसमें रेलचेल ने त्योहारों, बाजारों, मेलों, चुनाव, धार्मिक और सामाजिक आयोजनों से जोड़ दिया है।

महाराष्ट्र सहित दक्षिणी राज्यों में श्रम की कमी, चाहे कृषि या अन्य क्षेत्रों में, आंशिक रूप से बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ के अर्ध-कुशल और अकुशल श्रमिकों द्वारा की जाती है। इन प्रवासी श्रमिकों ने महाराष्ट्र और अन्य राज्यों के विकास में योगदान देने के साथ-साथ इन राज्यों में मजदूरी दर को कम रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गौर करने वाली बात यह है कि अब इन राज्यों में भी विकास की बयार बह रही है। संभावना है कि भविष्य में यह प्रवाह भी सूख जाएगा। इसलिए संभावना है कि आने वाले समय में राज्य में मजदूरों की कमी बढ़ेगी और मजदूरी दर में और इजाफा होगा। यह कृषि सहित अन्य क्षेत्रों के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। इसे ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार को इस पर गंभीरता से विचार कर कोई समाधान निकालने की जरूरत है।

-मच्छिंद्र ऐनापुरे, सांगली (महाराष्ट्र)

कलेक्टर द्वारा विभिन्न मामलों में जनसुनवाई की गई

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। मंगलवार को प्रशासनिक संकुल भवन के द्वितीय तल पर कलेक्टर श्री कुमार पुरुषोत्तम द्वारा विभिन्न मामलों में जनसुनवाई करते हुए जनसुनवाई में आये प्रकरणों का निराकरण करने के निर्देश अधीनस्थ अधिकारियों को दिये।

ग्राम करोंदिया तहसील उज्जैन निवासी राजाराम ने आवेदन दिया कि वे गांव में स्थित मन्दिर में पुजारी हैं तथा मन्दिर के समीप की भूमि पर उनके परिवार का काफी समय से स्वामित्व रहा है, परन्तु कुछ लोगों द्वारा उनके साथ वाद-विवाद कर भूमि पर कब्जा करने का प्रयास किया जा रहा है। इस पर तहसीलदार उज्जैन ग्रामीण को प्रकरण की जांच करने के निर्देश दिये गये।

ग्राम नाहरिया तहसील उज्जैन निवासी मदनलाल पिता मांगीलाल ने आवेदन दिया कि गांव में उन्होंने आवास योजना के तहत मकान का निर्माण किया था। ग्राम पंचायत द्वारा उनके घर के समीप बनाई गई सीसी रोड पर एक व्यक्ति के द्वारा टीन शेड बनाकर वहां अतिक्रमण कर लिया गया है, जिस वजह से आवेदक को आवागमन और कृषि कार्य करने के लिये जाने में बहुत समस्या आ रही है। इस पर एसडीएम ग्रामीण को उचित कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये।

माकड़ोन निवासी रामप्रसाद ने आवेदन दिया कि पिछले वर्ष उनकी सोयाबीन की फसल अधिक वर्षा होने के कारण खराब हो गई थी और इस वजह से उन्हें अपने परिवार का पालन-पोषण करने के लिये बहुत समस्या आ रही है। अतः उन्हें फसल क्षति पर मुआवजा दिलवाया जाये। इस पर एसडीओ राजस्व तराना को नियमानुसार कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये।

ढांचा भवन निवासी अंजली आंजना ने आवेदन देकर शिकायत की कि उनके पति की पिछले वर्ष मृत्यु हो चुकी है। पति की मृत्यु के बाद उनके ससुराल वालों ने उनके साथ मारपीट कर उन्हें घर से निकाल दिया है तथा उनके गहनें और अन्य गृहस्थी का सामान अपने पास रख लिया है। प्रार्थिया का एक 10 वर्ष का बालक है और उन्हें जीवन यापन करने में बहुत कठिनाई हो रही है, इसलिये उनके ससुराल पक्ष से उन्हें उनकी सम्पत्ति वापस दिलवाई जाये। इस पर एसडीओ राजस्व को मामले की जांच कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये।

घट्टिया तहसील के ग्राम सलामता निवासी नारायण पिता गोपाल ने आवेदन दिया कि उनके स्वामित्व की कृषि भूमि गांव में स्थित है। उनकी जमीन के समीप से सड़क का निर्माण होने के कारण बारिश का पानी रूक जाता है तथा उनके खेत में भर जाता है। इस वजह से लगातार दो सालों से उनकी सोयाबीन की फसल खराब हो रही है। अतः इस रोड पर पुलिया बनाई जाये अथवा पाईप डाला जाये ताकि उनकी फसल खराब न हो। इस पर सीईओ जनपद पंचायत घट्टिया को आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये।

इसी प्रकार कलेक्टर, सीईओ जिला पंचायत सुश्री अंकिता धाकरे, अपर कलेक्टर श्री मृणाल मीना एवं अन्य अधिकारियों द्वारा जनसुनवाई की गई।

झोन बजट के लिए पार्षद अपने प्रस्ताव तैयार करे- निगम अध्यक्ष

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। दनगर निगम सभापति एवं झोन अध्यक्ष झोन क्रमांक 01 श्रीमती कलावती यादव ने मंगलवार को झोन 01 के कार्यो की समीक्षा करते हुए झोन पार्षदों को कहां कि वित्तवर्ष 2023-24 के लिए निर्माण कायों, उद्यान, नाले नालीयों के निर्माण एवं संधारण को दृष्टिगत रखते हुए बजट प्रस्ताव तैयार करें। निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव ने झोन क्रमांक 01 के कार्यो की समीक्षा की गई एवं प्रधानमंत्री आवास योजना की जानकारी लेते हुए निर्देशित किया कि प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राहियों के आवेदनों की पूर्ति शीघ्र करे तथा लंबित आवेदनों का तत्काल निराकरण करे। बैठक में निगम अध्यक्ष श्रीमती यादव ने निर्माण कार्य से संबंधित टेंडरों की जानकारी लेते हुए निर्देश दिए कि निर्माण कार्यो की जानकारी से पार्षदों को अवगत करवाया जाए। प्रकाश विभाग सामग्री संबधि टेंडर जारी करे तथा स्ट्रीट लाईटों का संधारण लगातार करे। मंदिरो के आस-पास एवं पहुंच मार्गो पर प्रकाश व्यवस्था सुचारू रहे इसका विशेष ध्यान रखा जाए।

सार समाचार

सेवानिवृत्त शिक्षक के मकान में हुई चोरी पुलिस जांच के लिये पहुंची

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। सूने मकान में मंगलवार सुबह लाखों की चोरी होना सामने आया है। सेवानिवृत्त शिक्षक के मकान में हुई चोरी की सूचना पर पुलिस जांच के लिये पहुंची थी।

बहादूरगंज में रहने वाले उमेश पिता इंदरसिंह चौहान सेवानिवृत्त शिक्षक है। 20 फरवरी को परिवार के साथ ससुराल पक्ष में आयोजित शादी में शामिल होने के लिये महिदपुर गये थे। सोमवार-मंगलवार रात वापस लौटे तो मेनगेट का ताला खोला, ऊपरी मंजिल पर जाने के बाद दरवाजे पर लगा ताला टूटा मिला। अंदर सामान बिखरा पड़ा था। चोरी की सूचना कोतवाली पुलिस को दी गई। डायल हंड्रेड मौक पर पहुंची, रात का समय होने पर सुबह जांच शुरु की गई। चोरों ने सोने-चांदी के आभूषणों के साथ लेपटॉप, घड़ी, कैमरा, चांदी से बना शिवलिंग सहित कीमती सामान चोरी किया था। जांच के दौरान आर्टिफिशल जेवरात घर में बिखरे मिले। मामले में अज्ञात बदमाशों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर आसपास क्षेत्र में लगे कैमरों के फुटेज खंगाले जा रहे है। बहादूरगंज क्षेत्र में रातभर आवाजाही बनी रहती है। बताया जा रहा है कि कुछ संदिग्ध दिखाई दिये है। लेकिन उन्होने ही वारदात को अंजाम दिया यह कह पाना मुश्किल बना हुआ था। गौरतलब हो कि शहर में लगातार चोरियां होना सामने आ रहा है। कुछ दिन पहले उर्दूपुरा में आभूषण दुकान से चोरों ने 50 लाख का माल उड़ा दिया था, जिसका सुराग अब तक नहीं मिल पाया है।

आयशर और कार के बीच भिड़ंत कार सवार युवक की हुई मौत

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। सोमवार-मंगलवार रात आयशर और कार के बीच भिड़ंत हो गई। कार में सवार एक युवक की मौत हो गई, दूसरा गंभीर घायल हुआ है। कार सवार इंदौर से नागदा की ओर जा रहे थे। आयशर का चालक मौके से भाग निकला था। भैरवगढ़ थाना पुलिस ने बताया कि नागदा-उन्हेल रोड पर ढाबला फंटा पर आमने-सामने कार और आयशर के बीच देर रात भिड़ंत होने की सूचना मिली थी। पुलिस घटनास्थल पहुंचती, कार में सवार 2 घायलों को लोगों की मदद से एमबुलेंस जिला अस्पताल लेकर पहुंच चुकी थी। घटनास्थल पर क्षतिग्रस्त कार और सड़क किनारे आयशर मिली। जिला अस्पताल आने पर सामने आया कि घायलों में शामिल एक की मौत हो चुकी है। जिसके पास मिले दस्तावेजों के आधार पर उसकी पहचान तन्मय पिता संतोष दुबे (20) नागदा और घायल की तुषारसिंह के रुप में हुई। परिजन सूचना मिलने पर देर रात अस्पताल पहुंच गये थे। घायल की हालत गंभीर होने पर उसे निजी अस्पताल ले जाया गया। मामले में मंगलवार सुबह मर्ग कायम कर मृतक का पोस्टमार्टम कराया गया। इस दौरान परिजनों ने बताया कि तन्मय की बहन का तीन दिन पहले विवाह हुआ था। बारात आगरा से आई थी। शादी के बाद घर आए मेहमानों को तन्मय इंदौर एयरपोर्ट छोडने गया था, जहां से दोस्त के साथ वापस नागदा लौट रहा था। पुलिस ने शव परिजनों को सौंप आयशर चालक की तलाश शुरु की है। 14 फरवरी को मक्सीरोड पर सड़क दुर्घटना में मनोहर पिता रतनसिंह (65) निवासी खाचरौद की कार को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी थी। दुर्घटनामें मनोहर गंभीर घायल हुए थे, जिनका उपचार निजी अस्पताल में चल रहा था। मंगलवार तड़के मौत हो गई। पंवासा थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर पोस्टमार्टम कराया है।

सीईओ जिला पंचायत ने ग्राम पंचायत खेड़ाचितावलिया के सहायक सचिव को कारण बताओ नोटिस दिया

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। सीईओ जिला पंचायत सुश्री अंकिता धाकरे ने जनपद पंचायत घट्टिया की ग्राम पंचायत खेड़ाचितावलिया के सहायक सचिव सुरेंद्रसिंह राठौर को शासकीय कार्य के प्रति स्वेच्छाचारिता और लापरवाही बरतने पर कारण बताओ नोटिस जारी किया है। सुरेंद्रसिंह राठौर को अपना जवाब लिखित में आगामी 3 मार्च तक सीईओ जिला पंचायत के समक्ष उपस्थित होकर प्रस्तुत करना होगा, अन्यथा उनके विरूद्ध एकतरफा कार्यवाही की जायेगी।

सीएम राइज स्कूल का निर्माण कार्य तेज गति से हो

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। जनजातीय कार्य मंत्री सुश्री मीना सिंह ने कहा है कि जनजातीय कार्य विभाग के अधीन निर्मित हो रहे सभी सीएम राईज स्कूलों का कार्य तेज गति से किया जाये। निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही वे जिलेवार सीएम राईज स्कूल निर्माण कार्यों की समीक्षा भी करेंगी। साथ ही संबंधित निर्माण एजेन्सी के साथ बैठक भी ली जायेगी। मंत्री सुश्री मीना सिंह ने गत दिवस मंत्रालय में मध्यप्रदेश स्पेशल एंड रेसीडेंसियल एकेडमिक सोसायटी (एमपीसरस) के संचालक मंडल की बैठक में यह निर्देश दिये। प्रमुख सचिव जनजातीय कार्य डॉ. पल्लवी जैन गोविल, आयुक्त श्री संजीव सिंह, अपर आयुक्त श्री कृष्ण गोपाल तिवारी एवं संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री एस. धनराजू आदि उपस्थित रहे। मंत्री सुश्री मीना सिंह ने कहा कि गेस्ट फेकल्टी का मानदेय ऐसा हो कि वे प्रोत्साहित होकर अध्यापन कार्य करें। बैठक में एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को प्रदाय किये जाने वाली सुविधाएँ जवाहर नवोदय विद्यालय के समान किये जाने, ईएमआरएस में रिक्त शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक पदों पर प्रतिनियुक्ति, अतिथि/आउट-सोर्स पर लिये जाने, ईएमआरएस में बेहतर वित्तीय प्रबंधन एवं मॉनिटरिंग के लिए डिजि-एफ.एम.एस. पोर्टल व्यवस्था आगामी सत्र से लागू किए जाने तथा ईएमआरएस, कन्या शिक्षा परिसर एवं आदर्श आवासीय विद्यालय के लिए शैक्षणिक/वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु कुल राशि 375 करोड़ रूपए की वार्षिक कार्य-योजना/बजट की स्वीकृति प्रदान की गई।

नई बुनियादी सुविधाओं से आम जनता हो रही लाभान्वित - मुख्यमंत्री श्री चौहान

विकास यात्रा में 38 हजार से अधिक विकास कार्य लोकार्पित

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मध्यप्रदेश में सम्पन्न विकास यात्राएँ जन-कल्याण का यज्ञ बनी हैं। प्रदेश में 5 से 26 फरवरी की अवधि में हुई विकास यात्राओं में 38 हजार 506 विकास कार्यों के लोकार्पण हुए हैं। लोकार्पित कार्यों की लागत 10 हजार करोड़ रूपए है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बताया कि विकास यात्राओं में 29 हजार 155 विकास कार्यों के भूमि-पूजन भी किए गए। सभी 230 विधानसभा क्षेत्रों में विकास यात्राएँ निकली। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि यात्रा में सहभागी सभी जन-प्रतिनिधि, नागरिक, अधिकारी और कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। विकास यात्रा में 09 लाख 12 हजार 819 आवेदन-पत्र जनता की ओर से प्राप्त हुए, जिनमें से 85 प्रतिशत से अधिक 7 लाख 81 हजार 414 आवेदनों का निराकरण भी हो गया। विकास यात्रा के दौरान बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए प्रशासनिक अमले और जन-प्रतिनिधियों ने रूचि का प्रदर्शन किया। प्रत्येक पात्र हितग्राही तक योजनाओं का लाभ पहुँचाने के सराहनीय प्रयास हुए।

निगम में हुआ सेवानिवृत्त कर्मचारी का सम्मान

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। नगर पालिक निगम से सेवा निवृत्त होने वाले कर्मचारीयों श्रीमती दुर्गा बाई पति प्रकाश, श्री बद्रीलाल पिता गंगाराम, श्री भीमसिंह पिता मानसिंह राही का सम्मान एवं बिदाई समारोह कर्मचारी संघ संरक्षक श्री रामचन्द्र कोरट, अपर आयुक्त श्री आदित्य नागर, पार्षद श्री प्रकाश शर्मा की उपस्थिती में सम्पन्न हुआ। सेवानिवृत्त हुए कर्मचारी को भगवत गीता, शाल, श्रीफल, प्रशस्तिपत्र भेंट करते हुए सम्मानित कर बिदाई दी गई। इस अवसर पर निगम अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे।

निगम आयुक्त ने की प्रचलित बड़े निर्माण कार्यो की समीक्षा

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। नगर पालिक निगम आयुक्त श्री रौशन कुमार सिंह ने मंगलवार को शहर में नगर निगम द्वारा करवाए जा रहे बड़े निर्माण कार्यो की समीक्षा करते हुए निर्माण कार्यो को शीघ्रता से करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री अधोसंरचना अंतर्गत नगर निगम द्वारा प्रमुख बड़े निर्माण कार्य को करवाया जा रहा है निगम आयुक्त श्री रौशन कुमार सिंह द्वारा मंगलवार को फाजलपुरा शॉपिंग काम्पलेक्स एवं ऑफिस कार्य हेतु निर्माण, सुदामा अनाज मार्केट के स्थान कमर्शिलिय काम्पलेक्स दुकान निर्माण, वार्ड 44 फ्रीगंज विक्रम मार्ग, गुरूनानक मार्केट के स्थान पर कमर्शियल काम्पलेक्स निर्माण, वार्ड क्रमांक 05 में गन्धर्व तालाब का विकास कार्य, तरणताल का पुर्ननिर्माण कार्य, झोन क्रमांक 01 से 06 तक विभिन्न स्थानो पर वर्षा के कारण क्षतिग्रस्त हुई सड़को के मरम्मत हेतु डामरीकरण कार्य के साथ ही मिर्ची नाला शापिंग काम्पलेक्स, दशहरा मैदान पर स्टेडियम निर्माण कार्य इत्यादी निर्माण कार्यो की समीक्षा करते हुए निगम आयुक्त श्री सिंह ने निर्देशित किया कि बंद पड़े प्रोजेक्ट को पुनः प्रारंभ करते हुए समय सीमा निर्धारित की जाकर उन्हें पूर्ण करे।

सूने मकान का ताला जीजा-साले ने अपनी गैंग के तीन साथियों के साथ मिलकर तोड़ा

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। शादी में शामिल होने गये परिवार के सूने मकान का ताला जीजा-साले ने अपनी गैंग के तीन साथियों के साथ मिलकर तोड़ा था। पुलिस ने 6 दिन बाद दो को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। तीन की तलाश जारी है। जिनकी गिरफ्तारी होने पर चोरी का शेष माल बरामद किया जाएगा।

कार्तिक चौक मुरली मनोहर मंदिर के पीछे रहने वाले राजेश शर्मा 20 फरवरी की सुबह भानेज की शादी में शामिल होने के लिये परिवार के साथ आगरा उत्तरप्रदेश गये थे। दूसरे दिन सुबह पड़ोसी पिंटू ने ताला टूटा देखा तो चोरी की जानकारी परिवार को दी। राजेश के पुत्र गौरव ने अपने चाचा संजय शर्मा निवसी दानीगेट को घटना से अवगत कराया। उन्होने कार्तिक चौक पहुंचने के बाद मामले की सूचना महाकाल थाना पुलिस को दी। पुलिस जांच के लिये पहुंची और क्षेत्र में लगे कैमरों के फुटेज खंगाले, जिसमें कुछ बदमाश दिखाई दिये। बदमाशों ने ताला तोडने के बाद 2 एलईडी, नगदी और सोने-चांदी के आभूषण चोरी किये थे। पुलिस ने मामला दर्ज कर फुटेज के आधार पर बदमाशों की तलाश शुरु की। शनिवार को मुखबीर से सूचना मिली कि वारदात में जूना सोमवारिया और पत्तीबाजार के रहने वाले आदतन बदमाश, उसके जीजा और भाई के साथ गैंग के 2 अन्य बदमाश शामिल है। जिनकी तलाश करने पर सोमवार को पुलिस ने आदतन बदमाश के जीजा शिमाम और नाबालिग भाई को हिरासत में ले लिया। जिनसे पूछताछ में अन्य के नाम भी सामने आ गये। पुलिस ने हिरासत में दोनों आरोपितों से 2 एलईडी, 3 हजार रुपये नगद, हाथ घडी बरामद कर ली। टीआई मुनेन्द्र गौतम ने बताया कि वारदात के बाद पांचों ने चोरी के आभूषण और नगदी का बंटवारा कर लिया था। शेष राशि और आभूषण फरार तीन बदमाशों के गिरफ्त में आने पर बरामद किये जाएगें। जिनकी तलाश में एक टीम रवाना की गई है।

इनकी रही भूमिका

सूने मकान का ताला तोडक़र करीब डेढ़ लाख से अधिक की वारदात करने वाले बदमाशों को गिरफ्तार करने में एसआई सालगराम चौहान, एएसआई संतोष राव, प्रधान आरक्षक मनीष यादव, आरक्षक हरेन्द्र, मंगलेश, महिला आरक्ष्ाक राधा और सैनिक विशाल यादव की भूमिका रही।

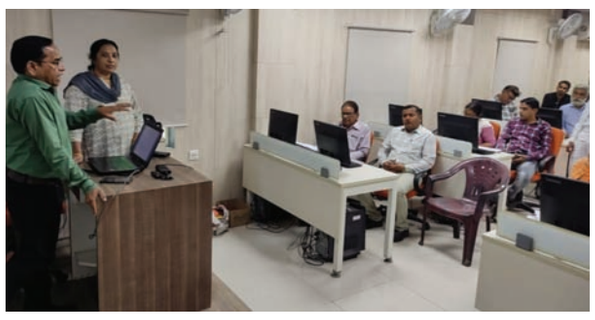

इंटीग्रेटेड फायनेंशियल मैनेजमेंट सिस्टम के विभिन्न मॉड्यूल्स का गहन प्रशिक्षण दिया गया

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। इंटीग्रेटेड फायनेंशियल मैनेजमेंट सिस्टम (ढ्ढस्नरूस्) के विभिन्न मॉड्यूल्स का विस्तृत एवं गहन प्रशिक्षण कोष एवं लेखा विभाग द्वारा जिले के सभी आहरण एवं संवितरण अधिकारियों एवं कर्मचारियों को चार सत्रों में दिया गया। प्रशिक्षण जिला पंचायत के ई-दक्ष केन्द्र में हुआ। सिस्टम मैनेजर श्री मुकामसिंह टैगोर ने साफ्टवेयर के ऑपरेशन एवं इसमें आने वाली समस्याओं के बारे में मौजूद लेखा कर्मचारियों को प्रशिक्षण देते हुए कहा कि कोषालय द्वारा इंटीग्रेटेड फायनेंशियल मैनेजमेंट सिस्टम का उपयोग कुशलतापूर्वक किया जा रहा है। सभी अधिकारी-कर्मचारी इस साफ्टवेयर को बहुत ही आसानी से चला सकते हैं। इस अवसर पर जिला कोषालय अधिकारी श्री सुरेंद्र भाबर, सहायक कोषालय अधिकारी श्रीमती प्रमिला रायकवार, श्री एलएन मकवाना, श्री बीएस राणावत द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण में कोषालयीन कर्मचारी भी उपस्थित थे।

मानसून शुरू होने के पहले पूर्ण कर लें अमृत सरोवरों का निर्माण - मुख्यमंत्री चौहान

प्रधानमंत्री के स्वप्न को साकार करने में अग्रणी है मध्यप्रदेश »»2657 अमृत सरोवर बना कर मध्यप्रदेश पहुँचा देश में दूसरे क्रम पर »»शहीदों को भी समर्पित किए गए हैं अमृत सरोवर

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि मध्यप्रदेश में मिशन अमृत सरोवर के क्रियान्वयन को निरंतर सफलता मिल रही है। प्रत्येक जिले में 75-75 अमृत सरोवर बनाने के लक्ष्य को पाने के लिए विभिन्न विभाग समन्वय से कार्य कर रहे हैं। जन-प्रतिनिधि और नागरिक भी सरोवर निर्माण में सहयोगी बने हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान गत दिवस समत्व भवन में अमृत सरोवर निर्माण की प्रगति की समीक्षा कर रहे थे। बताया गया कि मध्यप्रदेश अमृत सरोवर के पूर्ण कार्यों की संख्या के आधार पर देश में द्वितीय स्थान पर है। प्रदेश में 2,657 अमृत सरोवर बन चुके हैं। इस वर्ष 5,372 अमृत सरोवर निर्माण का लक्ष्य है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रत्येक पंचायत से एक ऐसे व्यक्ति को अमृत सरोवर निर्माण से अवश्य जोड़ा जाए, जिसकी जल-संरक्षण में रूचि हो। इसी तरह उपयोगकर्ता समूहों को बनाने और उनकी संख्या बढ़ाने के प्रयास भी किए जाएँ। मानसून प्रारंभ होने के पहले सभी अमृत सरोवर बन कर तैयार हो जाएँ, यह लक्ष्य रखें।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी का स्वप्न है कि मिशन अमृत सरोवर से जल-संग्रहण क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हो, सामुदायिक गतिविधियाँ बढ़े, विद्यार्थियों में जल-संरक्षण को लेकर जागरूकता बढ़े और अमृत सरोवर जन-भागीदारी का उदाहरण बन जाएँ। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री की इसी भावना के अनुरूप मध्यप्रदेश में कार्य किया जा रहा है। प्रदेश की उपलब्धियाँ गर्व करने योग्य हैं। यह भी प्रयास किया जाए कि अमृत सरोवर पिकनिक स्थल के रूप में विकसित हों। सौन्दर्यीकरण के कार्यों को भी शीघ्रता से पूर्ण किया जाए।

मिशन संबंधी प्रेजेंटेशन में बताया कि मध्यप्रदेश में 5372 अमृत सरोवर के निर्माण कार्य प्रारंभ हुए, जिनमें से 2657 पूर्ण हो गए हैं। अमृत सरोवर निर्माण के लिए मध्यप्रदेश में योजना में केवल नवीन कार्य ही लिए गए और अंतर्विभागीय समन्वय पर भी जोर दिया गया है। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के साथ जल-संसाधन, वन, मत्स्य-विकास सहित नेशनल हाइ-वे अथारिटी एवं रेलवे जैसे संस्थान सहयोगी बने हैं। वित्तीय स्त्रोत के रूप में मनरेगा, वॉटर शेड विकास, 15वें वित्त आयोग और प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की राशि का उपयोग किया गया। जन-सहभागिता से कार्य आसान हुए हैं। अमृत सरोवर निर्माण में जो जिले आगे हैं, उनमें छिंदवाड़ा, मुरैना, बैतूल, मंदसौर और बुरहानपुर शामिल हैं। सरोवर निर्माण में 4 हजार से अधिक पंचायत प्रतिनिधि, 5 हजार से अधिक पंचायत स्तरीय अधिकारी और सवा 2 हजार उपयोगकर्ता समूह सहभागी बने हैं।

शहीदों को समर्पित हैं सरोवर, सिंघाड़ा और मत्स्य-उत्पादन का हो रहा कार्य

अमृत सरोवरों पर 3 हजार 955 फ्लैग पोस्ट बनी हैं, जहाँ स्वतंत्रता और गणतंत्र दिवस पर ध्वज फहराने का कार्य भी हुआ है। यही नहीं सामाजिक सरोकारों को ध्यान में रखते हुए अनेक स्वतंत्रता सेनानियों और अमर शहीदों के नाम 63 अमृत सरोवर समर्पित किए गए हैं। इसी तरह ऐतिहासिक महत्व के 116 स्थान के निकट सरोवर बनाए गए हैं। प्रदेश में धार्मिक महत्व के 231 स्थान के निकट और जैव विविधता-संरक्षण की दृष्टि से 342 अमृत सरोवर निर्मित हुए हैं। बहुउद्देशीय आर्थिक लाभ के लिए भी सरोवर चिन्हित किए गए हैं। मत्स्य-उत्पादन में 2409, सिंघाड़ा उत्पादन में 1505 और पर्यटन के उद्देश्य से 199 सरोवर का उपयोग किया जा रहा है।

03 मार्च को होगी 'स्वच्छता की पाठशाला' तहत संभागीय क्षमतावर्धन कार्यशाला

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। स्वच्छ भारत मिशन 2.0 अंतर्गत स्वच्छ सर्वेक्षण-2022 में मध्यप्रदेश देश का स्वच्छतम राज्य घोषित हुआ है। इस गरिमामयी उपलब्धि को संवहनीय बनाए रखने के उद्देश्य से नगरीय निकायों में कार्यरत प्रशासनिक अधिकारियों, जमीनी स्तर पर कार्यरत कर्मचारियों, अनुबंधित एनजीओ, अन्य सहयोगियों एवं मास्टर ट्रेनर्स की क्षमतावर्धन हेतु संचालनालय, नगरीय प्रशासन एवं विकास, मध्यप्रदेश स्तर से ''स्वच्छता की पाठशाला'' प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें स्वच्छ भारत मिशन 2.0 के विभिन्न घटकों की तथ्यात्मक तकनीकी जानकारी के साथ निकायों द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों एवं अनुभवों को साझा किया जागए। स्वच्छता के सहयात्रियों की क्षमतावर्धन हेतु उज्जैन संभाग में संभागीय क्षमतावर्धन कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

नई शिक्षा नीति में युवाओं को रोजगार के साथ स्व-रोजगार के भी भरपूर अवसर मिलेंगे-उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव

सभी महाविद्यालयों में प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए संचालित होगी निः शुल्क कोचिंग क्लासेस

उज्जैन/दैनिक मालवा हेराल्ड। उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि नवीन शिक्षा नीति से अब शिक्षा कर्मकांड नहीं बल्कि सच्चे अर्थों में युवाओं के जीवन को सार्थक बनाने में सहायक होगी। युवा उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर राष्ट निर्माण में सहभागी बनेंगे। उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. यादव गत दिवस नर्मदापुरम जिले के नर्मदा महाविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं मध्यप्रदेश युवा नीति के एक दिवसीय कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे।

उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. यादव ने कहा कि शिक्षा नीति और युवा नीति से अब प्रदेश का युवा वर्ग प्राथमिक शिक्षा के दौरान ही अपने लक्ष्य निर्धारित कर अपनी रूचि के क्षेत्र में आगे बढ़ सकेगा। अब स्नातक की डिग्री कर्मकांड नहीं बल्कि उपयोगी शिक्षा को आत्मसात करने का माध्यम बनेगी। उन्होंने कहा कि नवीन शिक्षा नीति को लेकर प्रदेश के सभी संभागों में सेमिनार किए जा रहे हैं। इससे विद्यार्थियों से सीधा संवाद कर शिक्षा नीति की उपयोगिता के बारे में जानकारी और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान करने का कार्य किया जा रहा है। ऐसी कार्यशाला जिला स्तर और महाविद्यालय स्तर पर भी की जाएगी। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय ज्ञान यज्ञ की भूमिका अदा करें।

उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत की स्वतंत्रता में अपने प्राणों की आहूति देने वाले वीर क्रांतिकारियों के जीवन संघर्ष और बलिदान को समाहित करते हुए पाठ्यक्रम बच्चों को पढ़ाया जाएगा। इससे बच्चे वीर महापुरुषों के क्रांतिकारी इतिहास को पढ़ कर प्रेरित हो सकेंगे।

बच्चों से किया संवाद

कार्यशाला में उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. यादव ने बच्चों से वन-टू-वन चर्चा कर उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। छात्र हर्ष वर्मा ने पूछा कि ग्रामीण शिक्षा को मजबूत बनाने में नई शिक्षा नीति कैसे सहायक होगी। उत्तर में मंत्री डॉ. यादव ने बताया कि नई शिक्षा नीति में उम्र की कोई बाधा नहीं होगी। किसान, वृद्धजन, सभी शिक्षित हो सकेंगे। ओपन यूनिवर्सिटी की तर्ज पर भोज और इंदिरा गांधी यूनिवर्सिटी जैसी संस्थाओं से ड्रॉप लिए विद्यार्थी भी अपनी शिक्षा पूरी कर सकेंगे। अब विद्यार्थी एक साथ दो कोर्स में भी डिग्री कर पाएंगे। उत्तीर्ण होने के लिए नंबर सिस्टम की जगह क्रेडिट सिस्टम लागू होगा। अब व्यक्ति किसी भी उम्र में और किसी भी कोने से अपनी पढ़ाई पूरी कर सकेगा। परिवेश बाधा नहीं बनेगा।

छात्र प्रेमलता सैनी ने पूछा कि शिक्षा नीति रोजगार और प्रशिक्षण के क्षेत्र में कैसे लाभकारी होगी। मंत्री डॉ. यादव ने बताया कि नई शिक्षा नीति में रोजगार के साथ युवाओं को स्व-रोजगार के भी भरपूर अवसर उपलब्ध होंगे। छात्र पूजा गोस्वामी ने पूछा कि जो निर्धन छात्र पुस्तकों के अभाव में अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ देते हैं उसके लिए शिक्षा नीति में नया क्या है। मंत्री डॉ. यादव ने बताया कि आज ऐसा कोई भी छात्र नहीं है जिसके पास सर्व सुलभ पुस्तक की उपलब्धता न हो। साथ ही डिजिटल लर्निंग के लिए शिक्षा पोर्टल जैसे अन्य कई प्लेटफार्म निरंतर संचालित किए जा रहे हैं। इससे प्रदेश ही नहीं देश के विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा बच्चों को शिक्षित किया जा रहा है। छात्र अंशिका गुप्ता ने पूछा कि आज यूपीएससी, एमपीपीएससी आदि प्रतियोगी परिक्षाओं में सफल होने के लिए कोचिंग क्लासेज की महती आवश्यकता है। किंतु आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थी इस प्रकार की कोचिंग क्लासेस करने में असमर्थ है। ऐसे विद्यार्थियों के लिए क्या व्यवस्था की गई हैं। उत्तर में मंत्री डॉ. यादव ने बताया कि सभी विद्यार्थियों के लिए महाविद्यालय स्तर पर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियों के लिए निःशुल्क कोचिंग क्लासेज संचालित की जाएगी।

डॉ. यादव ने नई शिक्षा नीति के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर केंद्रित पुस्तिका नई शिक्षा नई उड़ान÷ का विमोचन किया। उन्होंने 40 से अधिक विषयों के 1600 से अधिक कंटेंट पर केंद्रित ई-शिक्षा पोर्टल का उद्घाटन भी किया। साथ ही उन्होंने हिंदी साहित्य पर केंद्रित विभिन्न पुस्तिकाओं का विमोचन भी किया। मंत्री डॉ. यादव ने खेल, एनसीसी, एनएसएस एवं विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रशस्ति-पत्र एवं शील्ड देकर सम्मानित किया।

मालिक, प्रकाशक, मुद्रक विजय शर्मा द्वारा 44, बहादुरगंज, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित एवं भगवती ऑफसेट 44, बहादुरगंज, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित। सम्पादक - विजय शर्मा, मो.नं. 94250-22499, फोन 0734-2553435 प्रधान संपादक : शुभम ताम्रकार (सभी वाद विवाद का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)